श्रावण मास, कृष्ण पक्ष, 21 वर्ष, अंक 238, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शनिवार 24 सितंबर 2022 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान प्रयागराज

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस लाख वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

क्रियायोग से सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित।

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

पर्यावरण के नाम पर परियोजनाएं अनावश्यक ठप न करें: पीएम मोदी, अर्बन नक्सलियों ने सालों रोका सरदार सरोवर बांध का काम

'अर्बन नक्सलियों ने सालों रोका विकास कार्य'

नई दिल्ली: देश के सभी राज्यों के पर्यावरण मंत्रियों के राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा- पर्यावरण के नाम पर विकास की परियोजनाओं को अनावश्यक ठप न करें। उन्होंने सरदार सरोवर बांध का उदाहरण देकर कहा- अर्बन नक्सली कई सालों तक बांध के निर्माण का काम रोके रहे। मोदी ने कहा- देश आजाद होते ही सरदार सरोवर बांध के काम शुरू हुआ। पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने इसका शिलान्यास किया था। इसके बाद अर्बन नक्सली एक्टिव हो गए और नर्मदा नदी पर बनने वाले इस बांध का काम यह दावा करते हुए रोका कि यह पर्यावरण को नुकसान पहुंचाएगा। इसका परिणाम ये हुआ कि बांध बनने में कई दशक लग गए। इसका उद्घाटन तब हो सका जब मैं प्रधानमंत्री बना। इस देरी के कारण भारी मात्रा में धन बर्बाद हो गया था। अब जब बांध पूरा हो गया है, आप

पर्यावरण से जुड़ी अनुमति में लगने वाला समय अब 75 दिन रह गया: मोदी

पीएम मोदी ने कहा कि पिछले 8 सालों में पर्यावरण से जुड़ी अनुमति में लगने वाला समय अब 600 दिन से घटकर 75 दिन रह गया है। प्रधानमंत्री ने अपने उद्बोधन में पर्यावरण के दृष्टिकोण से किए गए सफल प्रयासों का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि देश आज विकसित अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहा है और साथ ही अपनी पारिस्थितिकी को भी मजबूत कर रहा है। देश के वन क्षेत्र में वृद्धि हुई है और जलाशयों का भी दायरा बढ़ा है। उन्होंने कहा कि जैव विविधता में वृद्धि हो रही है। बीते वर्षों में गिर के शेरों, बाघों, हाथियों, एक सींग वाले गैंडों और तेंदुओं की संख्या में वृद्धि हुई है। कुछ दिन पहले मध्य प्रदेश में चीता की वापसी हुई है जिससे एक नया उत्साह लौटा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि 2017 में भारत ने नेट जीरो अर्थात कार्बन उत्सर्जन को पूरी तरह से खत्म करने का लक्ष्य रखा है।

अच्छी तरह से अंदाजा लगा सकते हैं कि उन अर्बन नक्सलियों दावे कितने संदिग्ध थे। प्रधानमंत्री ने विकास परियोजनाओं से पर्यावरण को होने वाले लाभ के कुछ उदाहरण देते हुए बताया कि इनसे किस प्रकार कार्बन उत्सर्जन में कमी आई है। उन्होंने कहा कि दिल्ली के प्रगति मैदान में बनी टनल से ही सालाना 13 हजार टन कार्बन उत्सर्जन में कमी आएगी। प्रधानमंत्री ने कहा कि आधुनिक ढांचागत सुविधाओं के बिना देश का विकास और देशवासियों के जीवन के स्तर में सुधार लाने के प्रयास सफल नहीं हो सकते। सालों तक देश में पर्यावरण अनुमति के नाम पर आधुनिक ढांचागत सुविधाओं के निर्माण को रोका गया। इसमें

'देश का ध्यान अब ग्रीन ग्रोथ और ग्रीन जॉब्स पर'

देश का ध्यान अब ग्रीन ग्रोथ और ग्रीन जॉब्स पर है। इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हर राज्य के पर्यावरण मंत्रालय की बहुत बड़ी भूमिका है। उन्होंने मंत्रियों से आग्रह किया कि राज्यों में सर्कुलर इकोनॉमी को ज्यादा बढ़ावा दें। इससे ठोस अपशिष्ट प्रबंधन और एकल उपयोग प्लास्टिक से मुक्ति के अभियान को ताकत मिलेगी। सहकारी संघवाद की भावना को आगे बढ़ाते हुए गुजरात में पर्यावरण से जुड़ा राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। इसका मकसद बेहतर नीतियां बनाने में केंद्र एवं राज्य सरकारों के बीच और अधिक तालमेल बनाना है। इन नीतियों से जुड़े विषय हैं- बहु-आयामी दृष्टिकोण के जरिए प्लास्टिक प्रदूषण को खत्म करना, 'लाइफ-लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट' पर ध्यान केंद्रित करने के साथ जलवायु परिवर्तन से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए राज्य कार्य योजनाएं, आदि। इसमें डीग्रेडेड भूमि की बहाली और वन्यजीव संरक्षण पर विशेष जोर देने के साथ वन क्षेत्र को बढ़ाने पर भी ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

अर्बन नक्सल और विकास में बाधा डालने वाले ग्लोबल इंस्टिट्यूशन का बड़ा हाथ रहा था।

इस संबंध में उन्होंने केंद्र की पहल परिवेश पोर्टल से हो रहे लाभ की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह पोर्टल पर्यावरण से जुड़ी सभी अनुमति के लिए एक सिंगल विंडो माध्यम बना है। यह पारदर्शी है और इससे अनुमति पाने के लिए होने वाली भागदौड़ कम हो रही है।

सीएम योगी ने बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का किया हवाई सर्वेक्षण

अयोध्याः मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सरयू नदी के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों शुक्रवार को हेलीकॉप्टर से हवाई सर्वेक्षण कर सरयू अतिथि गृह में दीपोत्सव,बाढ़ के संबंध में अधिकारियों के साथ बैठक की। 28 सितंबर को लता मंगेशकर के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में लता मंगेशकर चौक का उद्घाटन होगा । चौक के निर्माण की प्रगति पर भी मंथन ने मंथन किया । लता मंगेशकर के जन्मोत्सव के मौके पर मुख्यमंत्री अयोध्या में मौजूद रहेंगे और वर्चुअल तौर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी लता मंगेशकर चौक के उद्घाटन समारोह से जुड़ेंगे। मुख्यमंत्री ने संक्षिप्त बैठक में बाढ़ संभावित क्षेत्रों में रहता व बचाव कार्यों की जानकारी लेते हुए राहत कार्यों को चलाने का निर्देश दिया । उन्होंने नयाघाट पर स्थापित होने वाले भारत रत्न लता मंगेशकर चौराहे के तैयारी के संबंध में जानकारी ली एवं छठवें दीपोत्सव को जो 23 अक्टूबर को आयोजित होना है, की तैयारी के संबंध में जानकारी ली और बेहतर ढंग से तैयारी करने हेतु निर्देश दिया।

इस मौके पर मण्डलायुक्त नवदीप रिणवा, पुलिस उप महानिरीक्षक अमरेन्द्र प्रसाद सिंह, जिलाधिकारी नितीश कुमार, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रशान्त वर्मा, सहित सत्ताधारी पार्टी के पदाधिकारी सहित अन्य मण्डलीय व जनपदीय अधिकारी उपस्थित रहे।

केदारनाथ मंदिर के पीछे हुआ एवलांच

रुद्रप्रयागः केदारनाथ मंदिर से करीब 5 किमी पीछे बने चौराबाड़ी ग्लेशियर में गुरुवार शाम 6:30 बजे एवलांच आया। इसका वीडियो सामने आया है। हालांकि रुद्रप्रयाग के डिजास्टर मैनेजमेंट अधिकारी एनएस रजवार ने बताया कि यह काफी छोटा एवलांच था। इससे किसी तरह के नुकसान की कोई सूचना नहीं मिली है।

केरलः पीएफआई कार्यकर्ताओं ने किया हिंसक प्रदर्शन

संघ ऑफिस पर बम फेंके, दर्जनों वाहनों में तोड़फोड़, पुलिस पर हमला

केरलः 15 राज्यों में पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) के 93 ठिकानों पर एनआईए की छापेमारी के बाद शुक्रवार को पीएफआई ने केरल बंद बुलाया है। एनआईए रेड का विरोध कर रहे संगठन के कार्यकर्ता हिंसक हो उठे। राजधानी तिरुवनंतपुरम और कोयट्टम में पीएफआई कार्यकर्ताओं ने दर्जनों सरकारी बसों और गाड़ियों में तोड़फोड़ की है। कन्नूर के मट्टनूर में संघ ऑफिस पर पेट्रोल बम फेंके गए। इसमें किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। मौके पर पुलिस मौजूद रही। पुलिस के मुताबिक, कोल्लम में मोटर साइकिल सवार पीएफआई कार्यकर्ताओं ने 2 पुलिसकर्मियों पर हमला किया। इधर, तिरुवनंतपुरम में हिंसा करने वाले 5 पीएफआई कार्यकर्ताओं को पुलिस ने पकड़ा है। केरल हाईकोर्ट ने राज्यव्यापी बंद बुलाने के लिए पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया के नेताओं के खिलाफ सुओ मोटो एक्शन लिया है। केरल हाईकोर्ट के आदेश के मुताबिक कोई भी बिना अनुमति के बंद नहीं बुला सकता है। कोर्ट ने आदेश में यह भी कहा कि गिरफ्तारियों के बाद ऐसा प्रदर्शन ठीक नहीं।

वहीं कांग्रेस ने गुरुवार को भारत जोड़ो यात्रा रोक दी है। इस पर भाजपा ने तंज कसा कि पीएफआई और इस्लामिक जिहादी संगठनों ने हड़ताल का आह्वान किया और कांग्रेस ने अपनी पद यात्रा रोक दी इससे घटिया और शर्मनाक कुछ नहीं हो सकता।

`सेना के लिए देश में ही बनेंगी 4.25 लाख कार्बाइन

नई दिल्लीः 'आत्मनिर्भर भारत' की दिशा में भारतीय सेना के लिए 4.25 लाख स्वदेशी कार्बाइन का निर्माण किया जायेगा। केंद्र सरकार ने 5.56*45 मिमी. वाली 4,25,213 क्लोज क्वार्टर कार्बाइन (सीबीक्यू) की खरीद के लिए मंजूरी दे दी है। इतनी बड़ी संख्या में कार्बाइन के उत्पादन में समय लगेगा, इसीलिए इस परियोजना के लिए निजी या सार्वजनिक क्षेत्र के दो निमार्ताओं के साथ अनुबंध किये जाने की योजना है। इस परियोजना के लिए 5,000 करोड़ रुपये से अधिक का आवंटन होने जा रहा है। रक्षा मंत्रालय के सूत्रों का कहना है कि 4,25,213 लाख सीबीक्यू के उत्पादन में काफी समय लगेगा, इसीलिए निजी या सार्वजनिक क्षेत्र के दो निर्माताओं को यह अनुबंध आवंटित करने की योजना है। इसका मतलब यह है कि सबसे अच्छी बोली वाली फर्म को 2 लाख से अधिक कार्बाइन बनाने का ऑर्डर मिल सकता है जबकि दूसरी फर्म के साथ शेष कार्बाइन बनाने का अनुबंध किया जायेगा। इसके पीछे प्राथमिकता कार्बाइन की जल्द से जल्द आपूर्ति करने की होगी। आम तौर पर अनुबंध करने में 3 साल से अधिक समय लगता है लेकिन रक्षा अधिग्रहण परिषद (डीएसी) की मंजूरी मिलने के बाद सशस्त्र बलों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए यह अनुबंध आने वाले दिनों में जल्द से जल्द हो

सीएम पद के लिए पायलट ने शुरू की लॉबिंग,विधायकों के साथ बैठकें शुरू, सोनिया से भी मिलेंगे

उड़ान भरेंगे 'पायलट', लॉबिंग में जुटे

जयपुरः राहुल गांधी के अध्यक्ष बनने से इनकार और अशोक गहलोत के पर्चा दाखिल करने की घोषणा के बीच कांग्रेस नेता सचिन पायलट ने राजस्थान में विधायकों से बातचीत शुरू कर दी है। पायलट की नजर राजस्थान में खाली हो रहे मुख्यमंत्री की कुर्सी पर है। सूत्रों के मुताबिक सचिन पायलट ने सभी गुटों के कांग्रेस विधायकों से बात करना शुरू कर दिया है। इनमें वे विधायक भी शामिल हैं, जो कभी उनके कट्टर विरोधी माने जाते रहे। राहुल गांधी से मुलाकात के बाद सचिन पायलट का एक्टिव होकर विधायकों से बात करना नई जिम्मेदारी मिलने के सिग्नल के तौर पर देखा जा रहा है। सचिन पायलट के अलावा पूर्व केंद्रीय मंत्री और विधानसभा अध्यक्ष सीपी जोशी का नाम भी दावेदारों में शामिल है। सचिन पायलट शुक्रवार को जयपुर में विधानसभा की कार्यवाही में हिस्सा लेने पहुंचे, लेकिन मौजूदा हालातों और उनकी दावेदारी पर वे मौन साधे हुए हैं। इस बीच सचिन पायलट जयपुर में विधानसभा की कार्यवाही में हिस्सा लेने पहुंचे, लेकिन राजनीतिक सरगर्मियों पर उन्होंने चुप्पी साध रखी। पायलट ने विधानसभा अध्यक्ष सीपी जोशी से उनके चैंबर में मुलाकात भी की।

गहलोत के मंत्री गुढ़ा के सुर बदले, सभी ने हाईकमान पर फैसला छोड़ाः 21 सितंबर को सचिन पायलट ने भारत जोड़ो यात्रा में शामिल होकर राहुल गांधी से चर्चा की। पायलट अब कांग्रेस की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी से मिलेंगे। पायलट ने कहा कि सोनिया का फैसला सबको मानना है। इसी बात को गहलोत के मंत्री राजेंद्र गुढ़ा ने भी दोहराया। उन्होने कहा कि हाईकमान जिसके नाम का ऐलान करेगा, हमारे साथ के 6 विधायक उनका समर्थन करेगा। वहीं एससी आयोग अध्यक्ष और बसेड़ी विधायक खिलाड़ीलाल बैरवा और बाड़ी विधायक गिर्राज सिंह मलिंगा दिल्ली में हैं, दोनों ने भी पायलट से बात की है।

पूर्णिया में अमित शाह के निशाने पर रहे लालू-नीतीश, गृहमंत्री बोले-नीतीश प्रधानमंत्री बनने के लिए राजद- कांग्रेस की गोद में बैठ गए

सीमांचल का 'सियासी संग्राम'

पूर्णियाः केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह पूर्णिया की सभा में 31 मिनट तक नीतीश और लालू पर बरसे। शुरूआत में नारों की धीमी आवाज पर उन्होंने कहा कि लालू के पेट में दर्द समझ में आता है, आप लोगों को क्या हुआ है। सीमांचल जिलों में आया हूं तो लालू और नीतीश के पेट में दर्द होने लगा है। वे कह रहे हैं कि झगड़ा करवाएंगे। मैं कहता हूं कि ये काम आप लोग करते हैं, मेरी जरूरत नहीं है। अमित शाह ने 2024 के लोकसभा का खाका भी खींच दिया। उन्होंने कहा कि सीमांचल के लोगों को डरने की जरूरत नहीं है। यहां नरेंद्र मोदी की सरकार है। अपने भाषण में उन्होंने बिहार में जंगल राज लौटने पर सवाल किए। नीतीश कुमार के गठबंधन को तोड़ने को छुरा घोंपने पर घेरा। नीतीश कुमार प्रधानमंत्री बनने के लिए राजद और कांग्रेस की गोद में जाकर बैठ गए।

सीमांचल में डरने की जरूरत नहीं: सीमांचल का इलाका नरेंद्र मोदी के भारत में है। सीमांचल के 4 जिलों के लोगों को कहना चाहता हूं कि यहां किसी को डरने की जरूरत नहीं है। मैं सभी को कहने आया हूं डरिएगा नहीं। यहां नरेंद्र मोदी की सरकार है। सीमांत जिलों में जनजातियों को प्रताड़ित किया जा रहा है। उन्हें भगाया जा रहा है। केंद्र से भेजे जाने वाली राशि नहीं मिल रही है।

यह मुस्लिम बहुल इलाका है। सीमांचल के 4 लोकसभा क्षेत्रों में 30 से लेकर 70 प्रतिशत आबादी इसी समुदाय की है। सबसे ज्यादा लगभग 70% के वोटर्स केवल एक लोकसभा क्षेत्र किशनगंज में है। यहां पर राजद, जदयू और एआईएमआईएम मुस्लिमों को भाजपा के नाम से डराती हैं। हिंदू आबादी जाति में बिखरी हुई है। अमित शाह ने एक तीर से दो निशाने साधे हैं। एक मैसेज दिया कि मुस्लिमों को डरने की जरूरत नहीं है। दूसरा- हिंदुओं को मैसेज किया कि उन्हें मुस्लिमों से डरने की भी जरूरत नहीं है। जनजातियों के प्रति सहानुभूति जताकर साथ करने की कोशिश की।

शाह ने नीतीश को धोखेबाज बताया

प्रधानमंत्री बनने के लिए राजद और कांग्रेस की गोदी में नीतीश बैठ गए। नीतीश कुमार ने जॉर्ज फर्नांडिस के साथ भी धोखा दिया। मांझी के साथ धोखा किया। अब बीजेपी को धोखा देकर लालू के पास चले गए। ये धोखा मोदी जी के साथ नहीं हुआ है। बिहार की जनता के साथ हुआ है। आपके (बिहार सीएम नीतीश कुमार) के पास केवल 2 लोकसभा सीटें थीं, 'ना घर के रहे थे, न घाट के'। 2024 के लोकसभा चुनाव आने दीजिए, बिहार की जनता लालू-नीतीश की जोड़ी का सफाया कर देगी। 2025 में भी भाजपा पूर्ण बहुमत से बिहार में सरकार बनाएगी।

बारिश बनी आफत, लोग परेशान

दिल्ली-एनसीआर में रातभर बरसे बदरा, पेड़ टूटे, दीवार गिरी-सड़कों पर लगा जाम

नई दिल्ली/नोएडाः दिल्ली-एनसीआर के कई इलाकों में गुरुवार रात भर हुई बारिश के बाद शुक्रवार को जलजमाव की समस्या से लोगों को परेशान होना पड़ा। जहां दिल्ली में शुक्रवार के लिए येलो अलर्ट रहा। वहीं, साइबर सिटी गुरुग्राम में बादलों ने आफत बरसाई और आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने शुक्रवार को जिले के सभी कॉर्पोरेट और निजी संस्थानों से कर्मचारियों को घर से काम कराने की सलाह दी। रातभर हुई बारिश ने दिल्ली-एनसीआर की सड़कों की हालत खराब कर दी। दिल्ली के अलावा नोएडा और गुरुग्राम में कई सड़कों पर जलभराव है। जिस कारण शुक्रवार को भी कई सड़कों पर ट्रैफिक जाम लगा।

दिल्ली में बारिश से लगा जामः राजधानी में सुबह से हो रही बारिश का असर यातायात व्यवस्था पर पड़ा। जगह-जगह हुए जलजमाव की वजह से कई इलाकों में जाम लग गया और कई जगहों पर वाहन रेंगते हुए नजर आए। भारी बारिश के बाद दिल्ली की सड़कों पर जलजमाव की समस्या उत्पन्न हो गई, जिससे यातायात के बाधित होने की संभावना को देखते हुए दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने एडवाइजरी जारी कर कई रास्तों से बचने की सलाह दी।

गुरुग्राम में पेड़ गिरने से रास्ता हुआ बंदः गुरुग्राम में रातभर हुई बारिश के चलते कई सड़कों पर पानी भरा हुआ है।

वहीं, डीएलएफ फेस वन में बारिश के दौरान सड़क टूटने के कारण गाड़ी फंस गई और पेड़ गिरने के कारण एक गाड़ी क्षतिग्रस्त हो गई, जिससे रास्ता बंद हो गया। गुरुग्राम के बस स्टैंड पर बारिश का पानी जमा हो गया।

खबर संक्षेप

शिक्षक आंदोलन के पुरोधा मान्धाता सिंह को किया नमन

झूंसी। शिक्षक आंदोलन के पुरोधा स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी व तिलक इंटर कॉलेज कोटवा के पूर्व प्रधानाचार्य पूर्व सांसद स्व० मान्धाता सिंह की पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित कर लोगो ने नमन किया। तिलक इंटर कालेज के प्रधानाचार्य मनोज कुमार सिंह की अध्यक्षता में शिक्षकों छात्र-छात्राओं द्वारा उन्हें याद कर उनके चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी गई। प्रधानाचार्य मनोज कुमार सिंह ने बताया कि शिक्षक आंदोलन के पुरोधा मान्धाता सिंह के विचारों आदर्शों को अनुशरण करते हुए छात्र-छात्राओं के जीवन को नई ऊर्जा प्रदान करने के लिए प्रयासरत हैं। सांसद, विधायक पद पर रहते हुए उन्होंने समाज के प्रति अपनी पूरी भूमिका निभाई आज भी उनके जीवन को भुलाया नहीं जा सकता। इस अवसर पर डा. जयशंकर सिंह, जावेद अख्तर, आकाश बरनवाल, घनश्याम सिंह, जनार्दन शुक्ल, व्यंकट रमण सिंह, धर्मेन्द्र कुमार सिंह, अनिल कुमार, संदीप चौधरी, अरविंद यादव, सुधाकर सिंह, शिवमणि, दयाशंकर, रविन्द्र दुबे, मधुकर आदि उपस्थित रहे।

आकाशीय बिजली की चपेट में आए दो सगे भाई एक की मौत,दूसरा गंभीर

आकाशीय बिजली से मौत के बाद लगी लोगों की भीड़

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। तेज बारिश के दौरान महुए के पेड़ पर गिरी आकाशीय बिजली की चपेट में दो सगे भाई आ गए। एक भाई की घटनास्थल पर मौत हो गई जबकि दूसरा गंभीर घायल हो गया। घटना की जानकारी होने पर परिजनों के बीच हाहाकार मच गया रोते - बिलखते हुए परिजन घटनास्थल पर जा पहुंचे। घायल व्यक्ति को उपचार हेतु परिजन और ग्रामीण एक निजी हॉस्पिटल ले गए जहां पर सकुशल इलाज चल रहा है। मिली जानकारी के अनुसार पूरामुफ्ती थाना क्षेत्र के गोविंदपुर तेवरा गांव निवासी दो सगे भाई राम नरेश और राम सिंह शुक्रवार शाम चार बजे खेत में काम कर रहे थे उसी दौरान तेज बारिश होने लगी। बारिश से बचने के लिए दोनो भाई महुए के पेड़ का आड़ लेकर खड़े हो गए। उसी वक्त कुछ दूर पर स्थित दूसरे महुए के पेड़ पर तेज गड़गड़ाहट के साथ आकाशीय बिजली गिर गई जिसमें राम नरेश उम्र लगभग 36 वर्ष पुत्र सूरजबलि की घटनास्थल पर मौत हो गई और रामसिंह उम्र लगभग 28 वर्ष गंभीर घायल हो गया जिसका उपचार अभी चल रहा है। उपचार के बाद डाक्टरों के द्वारा घायल व्यक्ति रामसिंह की स्थिति सामान्य बताई जा रही है।

बिजली गिरने से एक महिला की मौत तीन घायल

झूंसी। स्थानीय थाना क्षेत्र के नीबी भतकार डिहवा पर चारा काटने कई तीन महिला समेत एक युवक वज्रपात की चपेट में आ गये। जिससे एक महिला की मौके पर ही मौत हो गई जबकि दो महिला समेत एक युवक झुलस गया। बिजली गिरने की जानकारी मिलते ही उनके परिजनों में हड़कंप मच गया आनन-फानन में पहुचे परिजन झुलसी महिलाओं व युवक को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया जहां सभी खतरे से बाहर बताये जा रहे है। नीबी भतकार गांव की अंजोरा देवी 40 पत्नी श्याम सुंदर निषाद, शोभा देवी 50 पत्नी स्व. भगवान दीन निषाद, रणजीत 28 व उसकी पत्नी अनीता 22 शुक्रवार की शाम को गंगा किनारे जानवरों के लिए चारा काटने गए थे। उसी दौरान तेज हवाओं के साथ शुरू हुई बारिश में सभी फस गए। तभी तेज आवाज हुई और चारो जमींन पर गिर पड़े। पास में मौजद अन्य लोगो की नजर उनपर पड़ी तो भाग कर मौके पर पहुचे जिससे अजोरा देवी की मौके पर ही मौत हो गई थी शोभा, रंजीत व रणजीत की पत्नी अनीता बेहोश थे। जब इस बात की जानकारी ग्रामीणों को हुई तो आनन-फानन में भागकर मौके पर पहुंचे लोग सभी को अस्पताल ले गये। वहीं अजोरा देवी की मौत से घर में कोहराम मच गया। बताया जाता है कि अजोरा देवी व शोभा ननंद भोजाई थी। अंजोरा के पति श्यामसुंदर श्रमिक है उसके तीन बेटे और दो बेटियां हैं जिनमें दो बेटियों और एक बेटे की शादी हो चुकी है।

आकाशीय बिजली गिरने से भैंस की मौत दो लोग झुलसे

करछना। शुक्रवार को दोपहर बाद गरज और चमक के साथ तेज बारिश के साथ आकाशीय बिजली गिरने से एक भैंस की मौत हो गई और एक महिला और एक पुरुष झुलस गए जिनका निजी अस्पताल में इलाज चल रहा है जानकारी के अनुसार विकास खड करछना के ग्राम पंचायत बबुरा में राधेश्याम पुत्र गंगाराम की भैंस खेत में चर रही थी तभी आकाशी बिजली गिरने से घटनास्थल पर उसकी मौत हो गई तथा वही गांव की महिला सीमा देवी पत्नी हरीकृष्ण निवासी व विमलेश यादव निवासी बबुरा जो खेत की ओर गये थे उसी दरमियान तेज बारिश होने लगी और गरज के साथ आकाशीय बिजली गिरने से झुलस गए जिनका भीरपुर में एक निजी अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया गया है उक्त आशय की जानकारी ग्राम प्रधान पिंटू सिंह ने बताया कि यह सभी गांव के लोग अपने खेतों में निराई करने गए थे उसी दर में आकाशीय बिजली गिरने से घटना घटित हुई।

कहीं बन्द तो कहीं खुले मिले ग्राम सचिवालय, कर्मचारी नदारद

अखंड भारत संदेश

सिरसा। प्रयागराज मेजा क्षेत्र ब्लाक उरूवा में प्रत्येक गांव में सचिवालय बनाए गए हैं। जिनमें पंचायत सचिव के साथ ग्राम पंचायत से जुड़े प्रत्येक विभाग के कर्मचारी मौजूद रहने के आदेश हैं। जिससे अधिकारी व कर्मचारी गांव में ही लोगों की समस्याओं का निस्तारण कर सकें। ग्राम सचिवालयों में वाकई काम हो रहा है या नहीं, इसको लेकर अखण्ड भारत संदेश के पत्रकार ने बिजौरा, चौकी, बेदौली , खानपुर, कठौली, लोहारी, समहन, गेशौरा , बिगहनी आदि सचिवालयों की स्थिति देखी। कहीं पर ग्राम सचिवालय बंद पड़े मिले तो कहीं पर कर्मचारी ही समय पर नहीं पहुंचे। इसके साथ ही ग्रामीण भी समस्याओं को लेकर परेशान नजर आए। कुछ सचिवालयों पर कर्मचारी काम करते हुए भी दिखे। जबकि सचिवालय पर 10 से दो बजे तक अनेक विभाग के कर्मचारियों का बैठना अनिवार्य है। मगर दस बजे के बाद भी सचिवालय बंद पड़ा मिला कंप्यूटर से संबंधी कोई कामकाज नहीं होने से ग्रामीणों को ब्लॉक पर ही जाना पड़ता है। ग्रामीण सचिवालय संबंधी समस्याओं के लिए ब्लॉक मुख्यालय के चक्कर काटने को विवश हैं। ग्रामीणों का कहना है कि सरकार की विभिन्न योजनाओं जैसे जन्म मृत्यु प्रमाणपत्र, परिवार रजिस्टर की नकल व पेंशन संबंधी समस्याओं के निराकरण के लिए ब्लॉक से लेकर जनपद

मनोहरपुर के सचिवालय में काम करते ग्राम प्रधान

मुख्यालय तक दौड़ लगानी पड़ रही है। ग्राम सचिवालय का लाभ उन्हें नहीं मिल पाया है, साथ ही ग्राम पंचायत सहायक भी सचिवालय पर नहीं पहुंचते हैं। इन कर्मचारियों की है तैनाती ग्राम सचिवालय ग्राम पंचायत सचिव, स्थानीय लेखपाल, कंप्यूटर ऑपरेटर, बैंक सखी, ग्राम विकास अधिकारी, रोजगार सेवक, मनरेगा के कर्मचारी, स्वच्छ भारत मिशन से जुड़े स्वच्छता गृही आदि की तैनाती है, लेकिन अधिकांश सचिवालयों में सभी विभागों के कर्मचारी नहीं बैठ रहे हैं, जिससे ग्रामीणों को दिक्कत उठानी पड़ती है।

हरिपुर, मर्रो निवासी हर्ष पांडेय का गुजरात वाटर पोलो नेशनल गेम्स में चयन

धनूपुर। हरिपुर मर्रो गांव निवासी डॉक्टर छोटेलाल पांडेय के सुपौत्र हर्ष पांडेय का गुजरात वाटर पोलो नेशनल गेम्स में चयन हुआ है।इस उपलब्धि पर सभी परिजनों एवं क्षेत्रीय लोगों हर्षोल्लास का माहौल है सभी ने हर्ष को बधाई एवं शुभकामनाएं आशीर्वाद देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना किया है।

जसरा में डेंगू के डंक से एक बीमार , ग्रामीण भयभीत

जसरा। जसरा के एक गांव में डेंगू मच्छर के काटने से एक युवक बीमार हो गया। युवक का इलाज शहर के एक निजी अस्पताल में हो रहा है। वहीं डेंगू फैलने के डर से ग्रामीणों में डर समा गया है। जब कि स्वास्थ्य विभाग की टीम का गांव तक न पहुंचने से लोग परेशान हैं। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जसरा के ग्राम पंचायत तातारगंज निवासी विकास प्रजापति 25 वर्ष पुत्र उमाशंकर प्रजापति पिछले 10 दिनों से बीमार था। उसको तेज बुखार आ रहा था। आस पास के कई डॉक्टरों से इलाज कराने के बाद भी जब उसका बुखार नहीं उतरा तो शहर के अस्पताल में खून की जांच कराने पर पता चला कि वह डेंगू की चपेट में आ गया है। उसका प्लेटलेट्स खतरनाक स्थिति तक नीचे पहुंच गया है। परिजनों ने चार दिन पूर्व उसको शहर के एक निजी अस्पताल में भर्ती करा दिया। जहां उसका इलाज किया जा रहा है। वहीं गांव के एक युवक को डेंगू से प्रभावित होने की सूचना से ग्रामीण भयभीत हैं। लोगों को यह डर सता रहा है कि कहीं गांव के अन्य लोगों को भी डेंगू न हो जाए। वहीं लोगों ने बताया कि अभी तक स्वास्थ्य विभाग की ओर से गांव में डेंगू मच्छर से बचाव के लिए किसी प्रकार की दवा का छिड़काव नहीं किया गया है। न ही लोगों को इसके प्रति जागरूक किया गया। इसको लेकर ग्रामीण आक्रोशित भी हैं।

एक को जेल तो कई का शांति भंग में चालान

कोरांव। खीरी पुलिस ने मुकद्दमा अपराध संख्या 398/22 धारा उत्तर प्रदेश गिरोह बंद एवं समज विरोधी क्रिया कलाप अधिनियम मोहम्मद आजाद उर्फ मो असलम पुत्र मोहम्मद हारून निवासी रामपुर थाना करछना को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। इसी प्रकार कई लोगों को शांति भंग किए जाने के आरोप में गिरफ्तार कर चालान कर दिया। उक्त जानकारी प्रेस विज्ञप्ति में थाना प्रभारी खीरी अनिल वर्मा ने दी।

वीरकाजी में आयोजित विशाल कबड्डी प्रतियोगिता में प्रदेश की दिग्गज टीमें करेंगी प्रतिभाग

फूलपुर। विगत वर्षों की भांति इस बार भी वीरकाजी गांव में आगामी 26 सितम्बर को प्रदेश स्तरीय विशाल कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। जनसंघर्ष समिति वीरकाजी के तत्वावधान में आयोजित कबड्डी प्रतियोगिता में प्रदेश के विभिन्न जनपदों के खिलाड़ी प्रतिभाग करेंगे। उक्त जानकारी देते हुए समिति के अध्यक्ष दुर्विजय भारतीय व कोषाध्यक्ष राजेंद्र कुमार सरोज ने संयुक्त रूप से बताया की कबड्डी प्रतियोगिता में जिला पंचायत सदस्य व प्रसपा जिलाध्यक्ष दीनानाथ यादव बतौर मुख्य अतिथि तथा सपा नेता वकार अहमद व जय प्रकाश मिश्रा विशिष्ट अतिथि के तौर पर शामिल होंगे। समिति के सदस्यों ने कबड्डी प्रतियोगिता में अधिक से अधिक संख्या में पहुंचने की अपील की। वहीं कबड्डी प्रतियोगिता के आयोजक मंडल ने बताया कि वीरकाजी में होने वाली कबड्डी प्रतियोगिता में विजेता टीम के साथ ही उपविजेता टीम को भी आकर्षक इनाम व उपहार भेंट किया जाता है।

दुर्गा पूजा महोत्सव की तैयारियां जोरों पर पंडालों और मंदिरों में विराजेगी मां दुर्गा

जारी। जारी पावर हाउस मेवा लाल मटेरियल के सामने शिल्प केंद्र पर मूर्तिकार विकास पाल ने बताया कि नवरात्रि की लगभग तैयारियां पूरी हो गई हैं। मूर्तिकार देवी मां की भव्य मूर्तियों को अपनी मेहनत से मूर्ति में अपनी कला से जान डालने का काम किया है। मूर्ति के हर हिस्से पर बारीकी से काम किया गया है ।मां दुर्गा की मूर्तियों की स्थापना विधि विधान के साथ पहले नवरात्र पंडालों में की जाएगी। इसके लिए कारीगरों ने अपनी सभी तैयारी पूरी कर ली है। दुर्गा पूजा महोत्सव की तैयारियां जोर शोर से चल रहीं हैं। कोलकाता से आए हुए मूर्तिकारो ने बताया कि लगभग लगभग मूर्तियों का सवारने का काम पूरा हो चुका है । बताते हैं कि इस वर्ष लगभग सत्तर मूर्तियां छोटी-बड़ी बनाई गई हैं जो पूरी तरह से तैयार कर ली गई हैं । जिसमें मां दुर्गा, काली, लक्ष्मी, सरस्वती, भगवान गणेश आदि शामिल है। ऐसे में क्षेत्र के कौंधियारा ,नारीबारी, गन्ने, चाकघाट,त्योंथर जसरा, जारी कटरा, अन्य कई गांवों से लोग मूर्तियों के लिए कल से मूर्ति अपने पंडालों में ले जाने के लिए आना जाना शुरू कर देंगे। क्षेत्र के जारी कस्बे से आए जय मां शारदा कमेटी के संतोष केसरवानी सुशील केसरवानी ने बताया कि हम लोग विगत 5 वर्षों से शारदी नवरात्र महोत्सव पर माता रानी की पूजा आराधना कर रहे हैं और आज मूर्ति लेने के लिए आए हुए हैं। और अपने अपने पंडालों में माता की मूर्तियां स्थापित कर नव दिन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मां भगवती का पूजा पाठ करेंगे।नवरात्र महोत्सव के दौरान छब्बीस सितंबर को कलश स्थापना के साथ दुर्गा पूजा शुरू हो जाएगी। विसर्जन के दिन मंदिरों पंडालों से विशाल शोभायात्रा निकाली जाएगी। ततपश्चात शासन की गाइडलाइन के अनुसार अपने क्षेत्र में नदी या तालाब में मूर्तियों का विसर्जन करना होगा।

न्यूज झरोखा

लायंस क्लब वसुधा के सौजन्य से किया गया पौधरोपण

नैनी। में लायंस क्लब प्रयागराज वसुधा की तरफ से वृक्षारोपण कार्यक्रम संपन्न हुआ क इस कार्यक्रम में रिजु श्रीवास्तव अध्यक्ष लायंस क्लब ,नीलिमा उपाध्याय चेयरमैन पर्सन ,कंचन लता कुशवाहा सदस्य ,सुशीला शुक्ला ,आशा रानी, लाल चंद्र पांडे अधिवक्ता उच्च न्यायालय प्रयागराज ,विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ विंध्यवासिनी प्रसाद त्रिपाठी के साथ इस कार्यक्रम को संपन्न किया कइनके अतिरिक्त विभूति नारायण सिंह ,अमित नायक, बनवारी लाल चौरसिया ,गीता सिंह ,सुनील ओझा , सभाजीत पाल, राधेश्याम तिवारी, दिग्विजय पाल ,रमेश यादव, अगम पाठक ,अखिलेश कुशवाहा, विजय सिंह,रामकरण सिंह ,धर्मेश्वर सिंह ,अंशुमान मिश्रा ,सविता त्रिपाठी, उमा शंकर पाल, राजकुमार पाल , शरद चंद्र पाल ,श्याम बालक द्विवेदी, चंद्रजीत यादव ,सुरेश्वर प्रसाद मिश्रा, वंदना सिन्हा सहित सभी शिक्षक व शिक्षिकाएं उपस्थित रहे।

बीआरसी करछना में दिव्यांग बच्चों का बनाया गया प्रमाण पत्र

करछना। खंड शिक्षा अधिकारी -अनिल कुमार त्रिपाठी के निगरानी में दिव्यांग बच्चों का प्रमाण पत्र बनाया गया। इस अवसर पर खण्ड शिक्षा अधिकारी ने कहा कि लोगों को दिव्यांग की सेवा के लिए आगे आना चाहिए। कुल 80 दिव्यांग बच्चों ने प्रतिभाग किया जिसमें 57 बच्चों का प्रमाण पत्र बनाया गया । मेडिकल टीम में ऑर्थो सर्जन डॉक्टर जीके तिवारी ,नेत्र सर्जन डॉक्टर सुभाष ,मनो- चिकित्सक ईशान्या राज ,ऑडियोलॉजिस्ट डॉ संकल्प शुक्ला, फिजियोथैरेपिस्ट राजेंद्र कुमार यादव विशेष शिक्षक आलोक राय व वीरेंद्र पाल रमसा से राजीव मिश्रा ने मेडिकल असेसमेंट कैम्प में अपना सहयोग प्रदान किया।

बिजली संविदा कर्मचारियों ने कनेक्शन धरियों का उखाड़ा विद्युत पोल महिलाओं ने उपकेंद्र का किया घेराव

जारी। विद्युत उपकेन्द्र के जारी पवार हाउस में शुक्रवार को शिवरानी शिक्षा समाज कल्याण नारी शक्ति प्रदेश दलित महिला प्रदेश अध्यक्ष चंद्रावती के नेतृत्व में दर्जनों महिलाओं ने जारी उपकेंद्र का घेराव नारेबाजी करते हुए कहा कि गुरुवार को बारा क्षेत्र कूड़ी गौहनी में बिजली उपभोक्ता मेवा लाल ,मुन्ना लाल के यहाँ बिजली के पोल लगा हुआ था जो कि जारी उपकेंद्र में तैनात संविदा कर्मी पहुँचकर अधिकारियों के आदेश ना होने के बाद दलित बस्ती में लगा बिजली का पोल कनेक्शन काट कर उखाड दिया गया उपभोक्ताओं ने बताया कि हम लोग 2013 से कनेक्शन लिए है जो कि बराबर बिजली का बिल देते आ रहे इसके बावजूद बिजली का पोल उखाड़ दिया गया जेई प्रदीप वर्मा ने बताया कि कर्मचारियों द्वारा जर्जर केबिल व पोल नया लगाया जा रहा है दलित बस्ती लगा दो पोल उखाड़ने का आदेश नही दिया गया था जो पोल उखाड़ा गया है उसे जल्द ही लगाया जाएगा जिससे विद्युत व्यवस्था बहाल की जा सके

स्कूली बच्चों ने निकाली स्वच्छता जागरूकता रैली

रत्योरा। विकासखंड कोरांव के प्राथमिक विद्यालय बदौआ नथऊपुर के स्कूली बच्चों के द्वारा स्वच्छता जागरूकता रैली निकाली गई। सेवा सप्ताह पखवाड़े के अंतर्गत निकाली गई रैली में शिक्षकों के द्वारा बच्चों से खुले में शौच न करें शौचालय का उपयोग करें, स्वच्छता ही सेवा है गंदगी जानलेवा है, मन में रखो एक ही सपना स्वच्छ रहे भारत अपना के नारे भी लगवाए। गांव की गलियों में घूम घूम कर बच्चों ने ग्रामीणों से शौचालय का उपयोग करने तथा अपने घरों के आसपास साफ-सफाई रखने की अपील की। इस दौरान नथऊपुर प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक महादेव सिंह व बदौआ कला के प्रधानाध्यापक नरेंद्र सिंह के द्वारा रैली में प्रतिभाग कर रहे बच्चों को प्रोत्साहित किया और स्लोगन व नारो के साथ-साथ स्वच्छ भारत मिशन अभियान को सफल बनाने की अपील की। रैली में विद्यालयों में कार्यरत अन्य शिक्षक भी मौजूद रहे। सेवा सप्ताह पखवाड़े के अंतर्गत प्रत्येक गांवो में यह स्वच्छता रैली निकाली जाएगी, और ग्रामीणों को साफ सफाई के प्रति जागरूक किया जाएगा।

करेंट की चपेट में आने से एक गोवंश की मौत

बारा। बारा थाना क्षेत्र के लोहगरा बाजार स्थित बड़ौदा उत्तर प्रदेश ग्रामीण बैंक के गेट के सामने एक विद्युत विभाग द्वारा पोल लगाया गया है जो लोहे का है बरसात के कारण जिसमें अक्सर करंट उतर जाया करता है बीती देर रात एक गोवंश उसका शिकार हो गया पोल ठीक बैंक गेट के सामने लगा है बैंक में लोगों की भीड़ लगी लगी रहती है अगर समय रहते इस समस्या का समाधान नहीं किया गया तो कोई बड़ी दुर्घटना घट सकती है।

क्षेत्राधिकारी के निर्देश के बाद भी हाई वोल्टेज बिजली के ढीले तार को नहीं कराया जा सका दुरुस्त

अखंड भारत संदेश

करछना। क्षेत्र में बिजली विभाग की मनमानी रवैया इस कदर बढ़ गई है कि उच्चाधिकारियों के आदेश और निर्देश का भी अमल में नहीं ला रहे हैं। क्षेत्र में बार-बार हो रही घटनाओं के बावजूद भी विभाग अपनी कार्यशैली में कोई बदलाव नहीं कर रही है। बता दें भुंडा बिजली उपकेंद्र से संचालित हो रहे खाई गांव के भारतीया बस्ती से होकर 11 हजार हाई वोल्टेज बिजली का तार दौराई गई है। जिसमें लगाया गया पोल बीते 4 वर्षों से 60 अंश पर झुककर टीका है। जिससे दौड़ाई गई तार 4 से 5 फीट की ऊंचाई पर झूल रहा है। झूल रहे हाई वोल्टेज तार की चपेट में अब तक कई बेजुबान जानवरों भी आ चुके है। मामले को लेकर उक्त गांव निवासी मूलचंद्र, शेषमणि, प्रेमचंद्र, भइयन ने बताया कि कई बार विभागीय अधिकारी, ग्राम प्रधान? सहीत तहसील प्रशासन से शिकायत किया गया। लेकिन किसी के द्वारा इस पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। वही सप्ताह भर पहले ग्राम सभा में बने पंचायत भवन परिसर में ग्रामीणों की समस्या को गांव में ही निपटारा करने के उद्देश्य क्षेत्राधिकारी अजीत कुमार चौहान की अगुवाई में चौपाल लगाई गई थी। उस दौरान मामले की शिकायत किए जाने पर क्षेत्राधिकारी ने विभागीय अधिकारियों को फोन के माध्यम से अवगत कराते हुए समस्या का समाधान करने के लिए निर्देशित किया था। लेकिन सप्ताह भर बीत जाने के बाद भी अभी तक विभागीय अधिकारी व कर्मचारियों की उदासीनता के चलते समस्या का समाधान नहीं कीया जा सका। वही देखा जाए तो बिजली विभाग की घोर लापरवाही के चलते मह भर के भीतर अब तक 2 लोगों की जान जा चुकी है। फिर भी विभाग इन सबसे बेखबर होकर कुंभकर्णी नींद में सो रही है। नवआगंतुक एसडीओ ए के गुप्ता ने बताया कि चार्ज लिए हुए 2 दिन हुआ है। इस तरह का मामला अभी संज्ञान में नहीं था। जल्द ही समस्या का समाधान करा दिया जाएगा।

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र हरिपुर में पौधारोपण किया गया

अखंड भारत संदेश

धनूपुर। स्वास्थ्य केंद्र हरिपुर में डॉक्टर पूजा पांडेय एवं समस्त स्टाफ सहित भाजपा नेता डॉक्टर छोटेलाल पांडेय ने मिलकर पौधारोपण किया।अस्पताल परिसर में पौधे लगाए गए तथा पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया गया। स्वास्थ्य केंद्र प्रभारी डॉ. पूजा पांडेय ने बताया कि अस्पताल में लगाए गए पौधों का संरक्षण किया जा जाएगा इन पौधों के बड़े होकर पेड़ बनने के बाद अस्पताल परिसर में छाया की व्यवस्था होगी। जिससे यहां आने वाले मरीजों व परिजनों को राहत मिलेगी उन्होंने अस्पताल स्टाफ एवं ग्रामीणों से भी अधिकाधिक संख्या में पौधरोपण करने का आह्वान किया।

चोरी करने के आरोपी को पुलिस ने गांजा में भेजा जेल, लोगों में चर्चा

रत्योरा। कोरांव में कानून का पाठ पढ़ाने वाली खाकी वर्दी ही खुद अब कानून को मजाक बनाने लगी है। कानून के रखवाले ही नियमों को ताक पर रख निर्दोश लोगों को जेल भेजने पर तुले हुए हैं। 4 दिन पूर्व कोरांव बाजार के कस्बे से चोरी की नियत से घर में घुसे युवक को लोगों ने धर दबोचा था। जिसकी ग्रामीणों ने धुनाई कर पुलिस के हवाले कर दिया था। कोरांव पुलिस की मनमानी देखिए कि उसे 2 किलो 100 ग्राम गांजा की दफा लगाकर जेल भेज दिया। जबकि चोरी करने की नियत से घुसा एक आरोपी अब भी फरार है। इसके पूर्व जादीपुर गांव के एक आदिवासी को भी कोरांव पुलिस मध्यरात्रि थाने उठा ले आई, जिसे दूसरे दिन गांजा की दफा लगाते हुए जेल भेज दिया। इसी प्रकार सेमरिहा गांव में भी एक नाई जाति के युवक को गांजा की दफा में जेल भेजा जा चुका है। भौंरहा मजरे के एक युवक को भी गांजा के फर्जी दफा में जेल भेजने की चर्चा जोरों पर है। जेल भेजे गए तीनों आरोपियों के बाबत ग्रामीणों का कहना है कि इनके द्वारा कभी भी गांजा की बिक्री नहीं की गई है। पुलिस जबरिया इन तीनों निदोर्षों को गांजा की दफा में जेल भेज दिया है। जो पुलिस की कार्यप्रणाली पर सवालिया निशान लगा रहे हैं। चर्चा है कि पुलिस अपना गुड वर्क दिखाने हेतु निर्दोष लोगों को जेल भेज रही है। जिनका दूर-दूर तक मादक पदार्थों की तस्करी से कोई लेना देना नहीं है ऐसे लोगों को भी जेल भेजा जा रहा है, जो गलत है। जिसका जीता जागता उदाहरण शुक्रवार को चोरी करने के आरोपी दीपक वर्मा पुत्र चंदन वर्मा निवासी बहादुर शाह नगर कस्बा कोरांव को गांजा की दफा में जेल भेजा गया है। लोगों को फर्जी मामलों में उठाकर उनसे धन उगाही का कार्य जोरों पर चल रहा है। स्थानीय लोगों ने पुलिस विभाग के उच्चाधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराते हुए निरंकुश हो चुके पुलिस प्रशासन पर कार्रवाई की मांग की है।

छात्र-छात्राओं ने साझा किये बैंकाक दौरे की सांस्कृतिक, शैक्षणिक अनुभव, कहा अद्भुत

नैनी। यूनाइटेड विश्वविद्यालय (यूयू), रावतपुर, प्रयागराज के उन मेधावी छात्रों के लिए शुक्रवार को विश्वविद्यालय परिसर में एक इंटरैक्टिव सत्र का आयोजन किया गया, जो एशियाई प्रौद्योगिकी संस्थान (एआईटी), बैंकॉक, थाईलैंड का 15 दिवसीय ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप कार्यक्रम में भाग लेने के बाद भारत लौटे थे। इस शैक्षणिक यात्रा का आयोजन 3 से 17 सितंबर, तक किया गया था। इस दौरान छात्रों ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि इस विदेश यात्रा से उन्हें जो सांस्कृतिक और शैक्षणिक अनुभव प्राप्त हुआ है वह अद्भुत और लंबे समय तक याद रखने वाला रहेगा। ये सभी छात्र-छात्रायें युनाइटेड के उन 68-सदस्यीय छात्र-छात्राओं की टीम का हिस्सा थे, जिन्होंने समर इंटर्नशिप प्रोग्राम के तहत एआईटी, बैंकाक का दौरा किया था। इन सभी छात्रों को एआईटी में आयोजित सांस्कृतिक और शैक्षणिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रमाण पत्र दिए गए। प्रो-वीसी, यूयू प्रो एएम अग्रवाल ने सत्र की अध्यक्षता की। कहा कि एआईटी की यह यात्रा निश्चित रुप से छात्र-छात्राओं को उनके ज्ञान को बढ़ाने और कैरियर को नई ऊंचाईयां देने में सहायता करेंगी। प्रो अग्रवाल, डीन, प्लानिंग, यूयू डॉ चेतन व्यास सहित अन्य संकायों ने छात्रों के साथ बातचीत की और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस 15 दिनों के कार्यक्रम में भाग लेने वाले यूयू के वरिष्ठ संकाय डॉ. निशांत दाभाडे ने कहा कि एआईटी में आयोजित शैक्षणिक सत्र के दौरान दुनिया भर से आए अत्यधिक अनुभवी प्रोफेसरों ने अपने व्याख्यान दिए। ये सत्र आईटी, प्रबंधन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, कानून और फामेर्सी जैसे सभी विभिन्न विषयों पर केंद्रित थे। उन्होंने कहा कि छात्रों को मानचित्र बनाने के लिए क्यूजीआईएस सॉफ्टवेयर का उपयोग करने, डेटा विश्लेषण के लिए आर सॉफ्टवेयर का उपयोग करने, खजाने की खोज करते समय जीएनएसएस का उपयोग करने, स्मार्ट समुदाय पर एक समूह प्रस्तुति बनाने और कई अन्य गतिविधियों में भाग लेने के अवसर भी मिले।

खबर संक्षेप

सार्वजनिक रामलीला समिति का आज निकलेगा कर्ण घोड़ा जुलूस

नैनी। सार्वजनिक रामलीला समिति की ओर से शनिवार शाम छह बजे भव्य शोभा यात्रा कर्ण घोड़ा जुलूस निकाला जाऐगा। यह जानकारी समिति के मुख्य संरक्षक विनीत पांडेय व अध्यक्ष राकेश जायसवाल ने दी है। उन्होने बताया कि शोभा के साथ आधा दर्जन कलात्मक चौकियां शामिल रहेंगी। इसके बाद रविवार को मुकुट पूजन होगा उसके बाद सोमवार 26 सितंबर से 08 अक्टूबर तक भव्य रामलीला का मंचन होगा।

रविवार को होगा श्री अवंतिका रामलीला का आरंभ

नैनी। श्री अवंतिका रामलीला समिति की एक बैठक बीबी दुबे की अध्यक्षता में शुक्रवार को अवंतिका कॉलोनी स्थित रामलीला पार्क में संपन्न हुई। बैठक में रामलीला आयोजन की तैयारियों के संदर्भ में चर्चा की गई। अध्यक्ष बी बी दुबे ने कार्यक्रम के बारे में बताते हुए कहा कि रामलीला 25 सितंबर, रविवार से प्रारंभ होकर 05 अक्टूबर, दिन बुधवार तक चलेगी। रामलीला मंचन का समय प्रतिदिन सायंकाल 7:30 बजे से रात्रि 1:00 बजे तक रहेगा। यह जानकारी समिति के मीडिया प्रभारी आर के शुक्ला ने दी।

भारी बारिश से सड़कें मुहल्ले हुए जलमग्न आकाशीय बिजली गिरने से चार की मौत

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। तेज बारिश व वज्रपात ने शुक्रवार को जिले में जमकर कहर बरपाया। दोपहर बाद हुई बारिश के दौरान बिजली गिरने की घटनाओं में तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि दो लोग झुलस गए। कौशाम्बी के चायल कस्बे में एक मजदूर की जान चली गई। बिजली गिरने से बेली गांव, तेवारा व मेजा के कठौती गांव में तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि दो लोग झुलस गए। उधर चौक स्थित जामा मस्जिद और बहादुरगंज दायरा स्थित शाही मस्जिद के गुंबद बिजली गिरने से क्षतिग्रस्त हो गए। इसके अलावा आसमानी बिजली का कहर इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के पीसी बनर्जी हॉस्टल पर भी टूटा, जिससे हॉस्टल का एक गुंबद आधा टूट कर गिर गया।हालांकि इन घटनाओं में किसी भी प्रकार के जानमाल का नुकसान नहीं हुआ। लगभग डेढ़ घंटे तक हुई बारिश से शहर के दर्जनों मोहल्लों में जलभराव हो गया। कई जगह घरों में पानी घुस गया। वहीं दूसरी ओर कौशाम्बी के पूरामुफ्ती कोतवाली के गोविंदपुर तेवारा गांव में तालाब किनारे बैठकर मछली का शिकार कर रहे तीन मजदूरों पर बिजली गिर गई। हादसे में एक मजदूर की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि साथ रहे दो अन्य मजदूर गंभीर रूप से झुलस गए। सदर तहसील के तेवारा गांव निवासी नरेश (40) पुत्र सूर्यबली, बेली गांव निवासी उस्मान (15) पुत्र अकील अहमद और मेजा तहसील के किठौती गांव निवासी राजाबाबू (13) पुत्र हीरालाल की आकाशीय बिजली गिरने से मौत हो गई। इसी तरह तेवारा निवासी राम सिंह (34) पुत्र सूर्यबली और बेली निवासी गयाल (25) पुत्र अली गयाल गंभीर रूप से झुलस गए हैं। जिनका उपचार चल रहा है । कर्मचारी व वकीलों को काफी दिक्कत हुई। शहर के कालिंदीपुरम, राजरूपपुर, बेनीगंज, चौक, हिम्मतगंज, निरंजन डॉट पुल, सोहबतिया बाग, अलोपीबाग, अल्लापुर, दारागंज, सिविल लाइंस, कटरा, धूमनगंज, जार्जटाउन आदि इलाकों में सड़कें जलमग्न हो गई हैं। जाम की समस्या घंटों बनी रही।

भारी बारिश से सरकारी दफ्तर में भरा पानी

विश्वविद्यालय के छात्रावास पर बिजली गिरने से गुंबद हुआ क्षतिग्रस्त

आकाशीय बिजली गिरने से दो भैंसो की मौत

रत्योरा। कोरांव थाना क्षेत्र के कोसफरा कला गांव में शुक्रवार को दोपहर बाद 3 बजे के आसपास अचानक हुई झमाझम बारिश व तड़प तथा गड़गड़ाहट के बीच आकाशीय बिजली गिरने से खूंटे में बंधी दो भैंसो की मौके पर ही मौत हो गई। जिससे पशुपालक में कोहराम मच गया। कोसफरा गांव के रहने वाले रामबाबू पुत्र दुर्बल की भैंस खूंटे पर बंधी थी अचानक तेज के चमक व गड़गड़ाहट के साथ आकाशीय बिजली गिरी और जो लोग जहां थे वहीं स्तब्ध रह गए। सूचना पर ग्रामीणों की भारी भीड़ जुट गई। हादसे की सूचना स्थानीय हल्का लेखपाल को दी गई जिस पर हल्का लेखपाल देवराज सिंह ने पहुंचकर हादसे की रिपोर्ट उप जिलाधिकारी कोरांव को दे दी है।

आकाशीय बिजली की चपेट में आने से किशोर की मौत, घर में मचा कोहराम

मेजा रोड। वज्रपात की चपेट में आने से खेत में मवेशी चराने गए किशोर की मौत हो गई जिसे लेकर परिजनों में कोहराम मचा हुआ है।बता दें कि शुक्रवार शाम चार बजे के आसपास मूसलाधार बारिश हो रही थी?। बारिश के दौरान जनवार गांव का अमित कुमार (12) पुत्र हीरालाल खेत में मवेशी चराने गया था। इसी दौरान आकाशीय बिजली की चपेट में आकर वह गंभीर रूप से घायल हो गया और उसकी मौत हो गई। मृतक किशोर बद्रीनाथ तिवारी इंटर कॉलेज में कक्षा 7 का छात्र है। मामले की जानकारी पर गांव में हड़कंप मच गया सूचना पर मेजारोड चौकी के उपनिरीक्षक योगेंद्र सिंह पुलिसकर्मियों के साथ मौके पर पहुंच शव को कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई करने में जुटे रहे। वही किशोर की आकस्मिक मौत से परिजनों में कोहराम मचा रहा।

1 लाख 32 हजार तार पर गिरी बिजली दर्जनों गांवों में अँधेरा

तार टूटने से हंडिया, सैदाबाद, कोटवा पावर हाउस से संचालित होने वाले गांव की गुल रही बिजली

झूंसी। आकाशीय बिजली गिरने से गुरुवार को जान माल का काफी नुकसान हुआ है। हनुमानगंज के रामनाथपुर में 1 लाख 23 हजार टावर पर आकाशीय बिजली गिरने से हंडिया, सैदाबाद, कोटवा पावर हाउस से संचालित होने वाले सैकड़ो गांवों में अंधेरा पसर गया है। बारिश व आसमान में कड़कड़ाती बिजली से भारी नुकशान हुआ है। वही हनुमानगंज के रामनाथपुर में 1 लाख 23 हजार टावर पर बिजली गिर गई जिससे तार टूट कर 33 हजार बोल्ट पर जा गिरा। जिसकी वजह से हंडिया, सैदाबाद व हनुमानगंज कोटवा पावर हाउस की सप्लाई बाधित हो गई है। लाईन मैन मरम्मत करने में लगे रहे पर देर रात तक आपूर्ति सुचारू नही हो पाई थी।

न्यूज झरोखा

जल संस्थान की लापरवाही का अंजाम : जलमग्न हुई सड़कें , लोगों के घरों में घुसा पानी

नैनी। जल संस्थान (जल कल) के झूठे दावों की पोल तब खुली जब क्षेत्र की सड़कों में घुटने भर पानी मात्र घंटे भर की बारिश के बाद देखने को मिला नैनी थाना क्षेत्र अंतर्गत स्टेशन रोड , जमुना नगर , नैनी बाजार , मेववलाल की बगिया झिलमिल कॉलोनी आदि क्षेत्रों में मात्र घंटे भर की बारिश से ही सड़कें तथा गलियां जलमग्न हो गई स्थानीय लोगों के अनुसार सीवर चोक होने के कारण अक्सर बारिश का पानी रोड पर इकट्ठा हो जाता है जिस वजह से लोगों को काफी असुविधा होती है। चक रघुनाथ क्षेत्र के रहने वाले बच्चा गुप्ता तथा सोनू विश्वकर्मा आरती सोनी के मुताबिक जब इस समस्या की शिकायत जब जल संस्थान (जल कल)के नवनियुक्त जे.ई साहब कार्यालय में मौजूद ही नहीं रहते तथा शिकायत करने के बावजूद भी समस्याओं का निवारण नहीं हो पाता।

महापौर ने राम बारात रूट का किया निरीक्षण

प्रयागराज। आगामी 29 सितंबर को होने वाले मेले को लेकर श्री राम बारात रूट का महापौर ने किया निरीक्षण श्री राम बरात कमेटी के मार्गदर्शक ज्ञान सिंह कुशवाहा पूर्व (डी.आई.जी)राजेश कुशवाहा पूर्व पार्षद, आरएन मौर्य, राज कुमार त्रिपाठी, कौशल सिंह विजय सिंह पंकज गौड़ विमलेश सोनकर आदि कमेटी के संरक्षक गढ़ एवं सक्रिय सदस्य मौजूद रहे। यह जानकारी मीडिया प्रभारी अश्वनी कुमार ने दी।

लोकल फार वोकल के लिए लोगों को किया जागरूक

सहसों। भारतीय जनता पार्टी मंडल सहसों महिला मोर्चा गंगा पार ने शुक्रवार को ग्राम सभा देवनहरी में मंडल अध्यक्ष शकुंतला शुक्ला की अध्यक्षता में उनके आवास पर वोकल फॉर लोकल के प्रति प्रेरित करते हुए लोगों को जागरूकता अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि काशी क्षेत्र की क्षेत्रीय मंत्री वंदना सिंह रही। इस अवसर पर महिला मोर्चा की कार्यकताओं ने क्षेत्रीय मंत्री को गंगा पार प्रयागराज की प्रभारी बनाए जाने पर उनका स्वागत सम्मान भी किया गया। महिला कार्यकताओं को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि ने कहा सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत आज वोकल फॉर लोकल का आवाहन प्रधानमंत्री जी ने किया है जिस पर हम लोगों को जागरूक होने की आवश्यकता है हम जहां भी रहें हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि गांव के छोटे उद्योग से स्वरोजगार के माध्यम से जो उत्पाद अपने नजदीक के मार्केट में आते हैं हम उन्हीं को लेने का प्रयास करें जिससे छोटे व्यापारियों का भी विकास हो सके। इस मौके पर जिला अध्यक्ष आरती अग्रवाल ने कहा कि बड़े-बड़े शॉपिंग मॉल की अपेक्षा छोटे मार्केट में सामान अच्छा सस्ता और टिकाऊ भी मिलता है। कार्यक्रम का संचालन साधना तिवारी ने किया । इस अवसर पर मुख्य रूप से पुष्पा प्रजापति, माधुरी शुक्ला, अंगूरा शुक्ला, सुधा शुक्ला, अनु देवी, अनारकली मिश्रा, चंद्रावती मिश्रा, संगीता तिवारी, रंजना तिवारी, फूला देवी, आभा सिंह, सुमन देवी, प्रतिभा चौरसिया, नेहा सिंह पटेल सहित आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

पूर्व ब्लॉक प्रमुख योगेश पांडेय ने रक्तदान कर बचाई जान

सहसों। जिसका कोई नहीं होता है उसका ऊपरवाला होता है यह कहावत चरितार्थ होता दिखाई दिया। विकास खण्ड सहसों के ग्राम पंचायत चक काशीराम के मजरा गांव जयंतीपुर निवासी चन्द्र शेखर दूबे जो कुछ दिन पहले गिरकर घायल हो गए थे। परिजनों ने इन्हें बेली अस्पताल मे भर्ती कराया। जहां जांच कराने पर पता चला कि इनके कूल्हा की हड्डी में फैक्चर हो गया है। खून कम होने की वजह से ऑपरेशन नहीं हो पा रहा है। परिजन खून के लिए इधर उधर भटक रहे थे। कि तभी भाजपा के पूर्व ब्लाक प्रमुख बहरिया योगेश पांडेय को पता चला तो गुरुवार को मौके पर पहुंचकर उन्होंने पीड़ित को अपना खून देकर उनकी समस्या को दूर किया। डॉक्टरो ने बताया कि खून अब मिल गया है। एक-दो दिन में मरीज का ऑपरेशन कर दिया जाएगा। पूर्व ब्लाक प्रमुख बहरिया योगेश पांडेय से जब बात किया गया तो उन्होंने बताया कि दुनिया में दो दान सबसे बड़ा दान होता है। एक रक्तदान, दूसरा कन्यादान समाज से जुड़े रहने पर ही पता चलता है। लोगों को क्या समस्याएं होती हैं। पूर्व ब्लाक प्रमुख बहरिया योगेश पांडेय के इस नेक काम से क्षेत्र के लोगों ने उनकी भूरि भूरि प्रशंसा कर रहे हैं।

एक्सीडेंड के बाद घटनास्थल पर लगी लोगों की भीड़

अनियंत्रित बोलेरो ने साइकिल सवार को मारी टक्कर, मौत

मेजा रोड। मेजा के मनू का पूरा गांव के समीप प्रयागराज-मिजार्पुर मार्ग पर अनियंत्रित बोलेरो गाड़ी की टक्कर से साइकिल सवार व्यक्ति की मौत हो गई। सूचना पर पहुंची मेजा पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर लिखा पढ़ी करते हुए पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मिली जानकारी के अनुसार मेजा थाना क्षेत्र के अमिलिया कला गांव निवासी राधिका कुशवाहा (60) शुक्रवार की सुबह लगभग नौ बजे किसी काम से साइकिल से ऊंचडीह बाजार जा रहे थे कि जैसे ही वह मेजा के मनू का पूरा गांव के समीप पहुंचे ही थे कि प्रयागराज-मिजार्पुर मार्ग पर सामने से आ रही अनियंत्रित बोलेरो गाड़ी ने साइकिल सवार को जोरदार टक्कर मार दिया। जिससे राधिका कुशवाहा की मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद बोलेरो चालक गाड़ी लेकर भागने में सफल रहा। सूचना पर थाना प्रभारी मेजा धीरेंद्र सिंह पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे और शव को कब्जे में लेते हुए लिखा पढ़ी का पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

चोरी करते दो धराए,जेल

मऊआइमा। नगर पंचायत की सोलर बैटरी ,लोहे की जाली ,लोहे का अनेकों सामानों सहित गोमटी का ताला तोडते हुए लोगों पकड कर पुलिस के हवाले कर दिया था। दोनों चोरों से सामान बरामद कर पुलिस ने शुक्रवार को जेल भेज दिया। मऊआइमा नगर पंचायत क्षेत्र के विभिन्न वार्डों में लगे सोलर पैनल, बैटरियां, नाली का लोहे की जाल आदि के अलावा अनेकों चोरी करने वाले दो शातिर चोरों को एक गोमटी का ताला तोडते हुए पकड़ कर पुलिस को सौंप दिया। एक ने अपना नाम रामजी केसरवानी पुत्र लालजी मोहल्ला गंजियाबाजार पूरा काजी, दूसरेने अपना नाम मोहम्मद शोएब पुत्र मोहम्मद जुनैद मोहल्ला पूरे मियां जी बताया।

विवाहिता को ससुरालियों ने भगाया

मऊआइमा। दहेज की मांग न पूरी होने पर ससुरालियों ने विवाहिता को मार पीट कर भगा दिया। विवाहिता ने पति सहित दस के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम सिंसई सिपाह निवासनीय रुखसाना बानों पुत्री साबिर अली की शादी सन 2018 में प्रतापगढ़ के थाना मान्धाता के छितपालगढ निवासी सलाह उद्दीन के साथ हुई थी। आरोप है कि शादी के बाद से ससुराली दहेज में तीन लाख की मांग करते रहे। मांग न पूरी होने पर रुखसाना बानों को मार पीट कर भगा दिया।

श्रमिकों का शोषण नहीं होने दिया जाएगा : राजेश मिश्रा

उप श्रमायुक्त प्रयागराज मंडल से प्रेस प्रतिनिधि की वार्ता

कोरांव। श्रम विभाग प्रयागराज मंडल के उप श्रमायुक्त राजेश मिश्रा ने कहा कि प्रत्येक दशा में श्रमिकों का शोषण नहीं होने दिया जाएगा। उक्त वक्तव्य एक अनौपचारिक भेंट वार्ता के दौरान श्री मिश्र ने पत्र प्रतिनिधि से कही। उप श्रमायुक्त ने कहा कि पूरे मंडल में करीब 11लाख श्रमिक पंजीकृत हैं। अब तक कुल 15 हजार श्रमिकों को लगभग 78 करोड़ रुपए योजनाओं के लाभार्थियों को प्रदान की गई।अकेले प्रयागराज में 41करोड़ रुपए श्रमिकों को योजनाओं के आवेदन किए जाने पर जांचोपरांत प्रदान किया गया। उन्होंने बताया कि प्रयागराज कुछ ज्यादा ही श्रमिक बाहुल्य है। पजीकरण से वंचित श्रमिकों का श्रम कार्ड बनाए जा रहे हैं। डीएलसी श्री मिश्र ने बताया कि कोई भी मेरे विभाग का अधिकारी कर्मचारी श्रमिक योजनाओं में मनमानी करेगा शोषण करेगा तो उन्हे बख्सेगें नहीं। मिस्त्र ने बताया कि जिन श्रमिकों के आवेदन मनमाने ढंग से निरस्त कर दिए गए हैं उनकी जांच कराकर पात्रों को लाभान्वित कराएंगे। डीएलसी ने बताया कि दिसंबर और जनवरी माह तक पंजीकृत श्रमिकों के बेटियों की सामूहिक शादी के आयोजन विभाग द्वारा आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने कहा की मेरा पूर्ण प्रयास है कि गरीब श्रमिकों को योजनाओं का लाभ मिले। इस निमित्त कार्यालय में पेंडिंग सभी कार्य जो श्रमिक से संबंधित है,निस्तारित किए जाने के आदेश अधिनस्थों को दिए हैं।

बुलडोजर पहुंचते ही आश्लील वीडियो के दो आरोपी थाने में हाजिर

मऊआइमा। युवती के साथ अश्लील हरकतें करने और फिर उसका अश्लील वीडियो वायरल करने पर तीन के खिलाफ दर्ज मुकदमा के नामजद आरोपियों में आज जब गांव बुलडोजर पहुंचा तो दो आरोपी थाने में हाजिर हो गए। एक के परिजन ने जल्द हाजिर कराने का आशवासन दिया है।।मऊआइमा क्षेत्र की एक गांव की एक युवती तथा सोरांव थाना क्षेत्र के एक युवक की सगाई हो चुकी है बताया गया है कि दोनों सिसंई सिपाह नहर पर आपस में बातें कर रहे थे। तभी सिंसई सिपाह के तीन युवक पहुंच कर युवती से छेड़खानी और अश्लील हरकतें करने लगे। जबकि दोनों हाथ जोड कर वीडीओ न बनाने की गुहार लगा रहे थे। तथा दोनों शादी की बातें बता रहे थे। शुक्रवार को मऊआइमा पुलिस जब सिंसई सिपाह बुलडोजर लेकर पहुंची तो एक घंटे में मासूक पुत्र मसीक और जक्रिया पुत्र कय्यूम थाने में हाजिर हो गए। फरार वसीक पुत्र शरीफ को जल्द हाजिर कराने की बात परिजनों ने पुलिस से कहा। जिसपर पुलिस दोनों आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार जल्द ही रात तक वसीक भी हाजिर हो सकता है। इंस्पेक्टर मऊआइमा से बात की कोशिश की गई तो उनका मोबाइल पहुंच से बाहर बता रहा था।

जिला समन्वयक ने बीआरसी मेजा में संचालित प्रशिक्षण का किया निरीक्षण

मेजा। निपुण भारत मिशन के तहत ब्लाक संसाधन मेंजा में संचालित चतुर्थ बैच का निरीक्षण शुक्रवार को जिलसमन्वयक डा0 विनोद कुमार मिश्रा एवं एसआरजी प्रशांत कुमार ओझा द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। प्रशिक्षण ले रहे सभी प्रशिक्षणार्थियो को कई महत्वपूर्ण जानकारिया दी गयी। उल्लेखनीय है कि निरीक्षण के दौरान उक्त दोनो अधिकारियों द्वारा आधार शिला क्रियान्वयम संदर्शिका गणित में विभाग द्वारा प्रेषित पीडीएफ पर कार्य करने के तरीको पर प्रशिक्षणार्थियो से विस्तार से जहां चर्चा किया गया वही ट्रंकर पर कार्य करने के तौर तरीको को भी बताया गया। जिला समन्वयक द्वारा निपुण भारत मिशन के तहत निर्धारित दक्षताओ को प्राप्त कराने हेतु तैयारियो पर विस्तार पूर्वकवार्ता की गयी। इस दौरान एआरपी डा0 गोपाल कृष्ण यादव द्वारा हिन्दी को सिरवाने हेतु मौखिक भाषा डिकोड़िग एवं पठन पर विस्तार से प्रशिक्षणार्थियो को बताया गया। श्री यादव ने बताया कि ब्लाक संसाधन मेजा में एआरपी गिरीश कुमार तिवारी, राम निरंजन, कमलाकांत पाण्डेय व पुष्पराज सिंह के द्वारा प्रशिक्षण को सुचारू रूप से कियान्वित किया जा रहा है। खण्ड शिक्षा अधिकारी नीरज श्रीवास्तव द्वारा सभी प्रशिक्षणार्थियो को गम्भीरता पूर्वक प्रशिक्षण लेने का कड़े निर्देश दिये गये है। बीआरसी मेजा में प्रशिक्षण ले रहे प्रशिक्षणार्थियो की पच्चास-पच्चास की संख्या में दो बैच संचालित है।

बीआरसी मेजा में प्रशिक्षणार्थियो को जानकारियॉ देते जिला समन्वयक

दबंगो ने युवक पर की फायरिग,दो पर मुकदमा

करछना। गुरुवार की रात क्षेत्र के ककरम गांव में एक दुकानदार अपनी दुकान के समाने बैठा था इसी बीच गांव के ही कुछ युवक उस पर तमंचे से फायर झोक दिया।इस दौरान दुकानदार बाल-बाल बचा।क्षसूचना मिलते ही मौके पर प्रभारी निरीक्षक करछना विश्वजीत सिंह पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। जहां फायर करने वाले व्यक्ति मौके से फरार हो गए थे। जाकारी के मुताबिक उक्त गांव निवासी अशोक कुमार मिश्रा गुरुवार की रात करीब 9 बजे के करीब दुकान के सामने बैठा था। उसी बीच गांव के ही शत्रुधन पांडेय अन्य युवकों के साथ दुकान पर पहुंच कर गाली गलौज करने लगा । जिस पर अशोक के द्वारा गाली देने से मना किया तो वह आग बबूला हो गया और देखते ही देखते उसने तमंचे से फायर झोक दिया। फायर होते ही कुछ देर के लिए वहां अफरा तफरी का माहौल बना गया। वही अशोक की तहरीर पर पुलिस ने गांव के ही शत्रुधन और अनिरूद्ध पाडेय के खिलाफ जानलेवा हमला करने का मुकदमा दर्ज कर जांच पड़ताल में जुटी है।

बीस वर्ष पूर्व लापता दयाशंकर आखिर कहॉ गया !

अखंड भारत संदेश

गुमशुदगी रिपोर्ट दर्ज होने के बाद भी अता-पता नही, पुलिस की कार्यप्रणाली संदिग्ध, मामले में कप्तान से हस्तक्षेप की मांग

मेजा। बीस वर्षो से लापता दयाशंकर अखिरकार कहॉ गया। वह जिन्दा है या मुर्दा उसे धरती खा गयी या फिर आसमान निगल गया। गुमशुदगी रिपोर्ट दर्ज होने के बाद की उसका कही अता-पता नही चल रहा है। ऐसे में परिवार के मुखिया की तलाश में दर-दर भटक रहे परिजनों ने जिले के पुलिस कप्तान से मामले में हस्तक्षेप करते हुए जिन्दा या मुर्दा बरामद किये जाने की गुहार लगायी है। प्राप्त जानकारी के अनुसार मेजा थाना क्षेत्र के पकरी सेवार गॉव निवासी दयाशंकर द्विवेदी पुत्र श्रीधर द्विवेदी लगभग 20 वर्ष पूर्व अपनी बड़ी लड़की रूपा की शादी का कार्ड देने अपने रिस्तेदार राजेन्द्र प्रसाद शुक्ला के घर लखनऊ गये हुए थे। बताते है कि लखनऊ में ही। नवम्बर सन 2000 ई0 को उक्त व्यक्ति लापता हो गया था जिसके सम्बंध में रिश्तेदार राजेन्द्र प्रसाद शुक्ला द्वारा लखनऊ के एक थाने में मु0अ0सं0 छप्प/2000 के तहत गुमशुदगी रिपोर्ट दर्ज करायी गयी थी। गौरतलब है कि गुमशुदगी रिपोर्ट दर्ज हुए लगभग 20 वर्ष से अधिक का समय बीत चुका है लेकिन आज तक पुलिस लापता दया शंकर को खोज नही पायी ऐसे में परिजनों द्वारा पुलिस पर सवालिया निशान लगाते हुए विभिन्न प्रकार के आरोप लगाये जा रहे है। प्रकरण के सम्बंध में परिजनों की माने तो उनका कहना है कि विगत 20 वर्षो से लापता दयाशंकर आखिर कहॉ गये। उन्हे धरती खा गयी या आसमान निगल गया। हलॉकि अपहत्त दयाशंकर की तलाश में आज भी दर-दर भटक रहे इकलौते बेटे अखिलेश दुबे, बेटियॉ रूपा व दीया के अलावा पत्नी का रो-रो बुरा हाल है। फिल हाल प्रकरण में स्थानीय पुलिस द्वारा बरती गयी घोर लापरवाही के बावत परिजनों ने जिले के कप्तान सहित प्रदेश के मुख्यमंत्री एवं डीजीपी पुलिस से स्वतः संज्ञान लेने का अनुरोध करते हुए गुमशुदा दयाशंकर को जिन्दा या मुर्दा बरामद किये जाने की गुहार लगायी है।

कार्यालय ग्राम पंचायत देवरीकलां, वि. ख. करछना प्रयागराज

टेण्डर/कोटेशन

वित्तीय वर्ष 2022-23 मे ग्राम पंचायत देवरीकलां विकास खण्ड करछना में कराये जाने वाले विकास कार्यों में मनरेगा, राज्य वित्त/15वां वित्त योजनाअन्तर्गत अद्योलिखित कार्यों के आगणन /प्राकलन के अनुसार यथा आवश्यक मात्रा में सामग्री कार्य स्थल पर आपूर्ति भाड़ा सहित पहुंचाकर आपूर्ति एवं कार्य की मयमजदूरी सहित आपूर्तिकर्ता से सील बन्द लिफाफे में टेन्डर/कोटेशन अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 24-09-2022 से दिनांक 07-10-2022 को अपराह्न 3 बजे तक आमंत्रित किया जाता है। उक्त तिथि के बाद प्राप्त किसी भी टेन्डर/कोटेशन पर विचार नहीं किया जायेगा आपूर्तिकर्ता अपना कोटेशन/टेन्डर उक्त तिथि तक जमा कर सकते हैं नियम व शर्ते किसी भी समय कार्यालय कार्यदिवस में देखी जा सकती है तथा टेन्डर फार्म की बिक्री उक्त अवधि में कार्यालय समय 10 से 12 बजे तक प्रत्येक कार्यदिवस पर की जायेगी। किसी एक व समस्त टेन्डर/कोटेशन को निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत देवरीकलां में निहित होगा। टेन्डर/कोटेशन दिनांक 08-10-2022 को अपराह्न 4 बजे पूर्व निर्धारित कमेटी के समक्ष खोला 08-10-2022 कार्यालय अवधि में समय 3.30 अपराह्न तक जमा किया जा सकता है। निम्नलिखित कार्य पर पर जिस-जिस सामग्री की आवश्यकता है उसका विवरण कार्यलय/नोटिस बोर्ड पर चस्पा है उत्तर प्रदेश माल एवं सेवाकर अधिनियम के अन्तर्गत अनुमन्य जी.एस. टी. का भुगतान किया जायेगा। जिसके जमा करने का दायित्व आपूर्तिकर्ता का होगा साथ ही जी.एस.टी जमा चालान की आपूर्तिकर्ता द्वारा स्वप्रमाणित प्रति भुगतान के एक माह के अन्दर अपरिहार्य रूप से जमा करना होगा उसके उपरान्त ही अगला भुगतान किया जायेगा उस भुगतान पर ही उक्त नियम व शर्ते लागू रहेगी। इसके विपरीत स्थिति पाने पर भविष्य के उक्त फर्म को काली सूची में डालने हेतु यथोचित विधिक कार्यवाही कर दी जायेगी।

क्र0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख में) सामग्री अंश	कार्य की अवधि
1.	पंचायत भवन में शौचालय निर्माण कार्य	2.96 लाख	2 माह
2.	विभवनाथ के घर से तालाब तक पक्की नाली निर्माण कार्य	1.12 लाख	2 माह
3.	आंगनबाड़ी भवन मरम्मत व सौन्दर्यीकरण कार्य	2.98 लाख	2 माह
4.	बलराम द्विवेदी के गौशाला से महराज पाण्डेय के घर तक इण्टरलाकिंग कार्य	3.99 लाख	2 माह
5.	सार्वजनिक स्थल पर स्ट्रीट लाइट कार्य	2.00 लाख	2 माह

कमला देवी
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत देवरीकलां
वि0 ख0 करछना प्रयागराज

पत्रांकः मेमो/ग्राम पं. वि. अ./टेण्डर/ कोटेशन/ 2022-23/ दिनांक

संजीव श्रीवास्तव
ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत देवरीकलां
वि0 ख0 करछना प्रयागराज

फूलपुर रेलवे स्टेशन के पश्चिमी फाटक को खोलने की उठी मांग !

रेलवे के उच्चाधिकारियों के साथ ही रेलमंत्री को भेजा गया पत्र

अखंड भारत संदेश

फूलपुर। नगर पंचायत फूलपुर स्थिति आरओबी की मरम्मत कार्य के चलते जहां आम जन को भारी मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है। वहीं पूर्ण रूप से आवागमन बाधित होने पर स्थानीय लोगों में बंद फाटक 28 सी को खोलने की मांग भी उठने लगी है। आवागमन को लेकर आम जन की विकट समस्या को देखते हुए समाजवादी पार्टी के निवर्तमान जिला उपाध्यक्ष नसीरुद्दीन राईन ने शुक्रवार को उत्तर रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ ही रेलमंत्री को पत्र भेजकर रेलवे समपार 28 सी को खोलने की मांग की। आरओबी निर्माण के बाद भी क्षेत्रीय लोगों में हो रही आवागमन की समस्या पर रेलमंत्री को पत्र के माध्यम से अवगत कराते हुए उन्होंने बताया कि फूलपुर स्टेशन का पश्चिमी रेलवे फाटक स्थाई रूप से बंद होने के कारण क्षेत्रीय लोगों को अस्पताल, बैंक, तहसील सहित अन्य दफ्तरों में पहुंचने के लिए कई किलोमीटर के चक्कर लगाने पड़ते हैं जबकि उपरोक्त स्थल बंद फाटक से महज कुछ ही दूरी पर स्थित है। ऐसी स्थिति में जहां वृद्ध,मरीज तथा महिलाओं को परेशानी उठानी पड़ती है वहीं पास के ही विद्यालय में पढ़ने वाली छात्राओं को भी फालतू के चक्कर लगाने पड़ते हैं। उन्होंने आम जनमानस की समस्या को देखते हुए उक्त फाटक को सुलभ आवागमन के अतिशीघ्र खोलने का अनुरोध किया।

पश्चिमी रेलवे फाटक बंद करने का हुआ था विरोध

प्रयागराज-गोरखपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित फूलपुर आरओबी का निर्माण होने के बाद फूलपुर स्टेशन का पश्चिमी फाटक 28सी रेलवे के द्वारा बंद किए जाने का विरोध स्थानीय लोगों ने पुरजोर तरीके से किया था। अधिवक्ताओं के साथ ही स्थानीय लोगों ने धरना प्रदर्शन कर उपजिलाधिकारी सहित रेलवे अधिकारियों को ज्ञापन देकर रेलवे फाटक बंद न करने की मांग की परन्तु रेलवे प्रशासन ने भविष्य में होने वाली समस्याओं को अनदेखा कर उक्त फाटक को स्थाई रूप से बंद करवा दिया था।

आरओबी में आए दिन हो रही खराबी से बढ़ रही परेशानी

फूलपुर में बढ़ती ट्रैफिक समस्या को देखते हुए 2019 में फूलपुर आरओबी का निर्माण हुआ। परन्तु चालीस करोड़ की लागत से बने लगभग 700 मीटर के उक्त आरओबी पर आएं दिन खराबी उत्पन्न होने से परेशानी बढ़ जाती है। मरम्मत के लिए आरओबी पर आवागमन पूर्णतः बंद कर रूट डायवर्जन कर दिया जाता है। जिससे स्थानीय लोगों के साथ ही जौनपुर, गोरखपुर जाने वाले यात्रियों को भी भारी असुविधा का सामना करना पड़ता है।

शिक्षक द्वारा सरकार एव जाति विरोधी पोस्ट पर बीएसए की कार्यवाही

अखंड भारत संदेश

कोरांव। प्राथमिक शिक्षक संघ कोरांव के अध्यापक द्वारा सरकार एवं जाति विरोधी टिप्पणी को बीएसए प्रदीप तिवारी ने गम्भीरता से लिया है। सोसल मीडिया पर कोरांव प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष द्वारा सरकार और जातिविरोधी टिप्पणी बेसिक शिक्षा ग्रुप मे की जा रही है। लगातार पोस्ट हो रहे अनर्गल मैसेज से आरोपित ग्रुप के अध्यापक आक्रोशित हैं।ग्रुप मे भाजपा सरकार पर कमेंट करते हुए कहा गया कि यह सरकार केवल हिन्दुओ के नाम पर वोट तो लेती है लेकिन अन्दर-अन्दर एक जाति विशेष के लिए ही काम करती है। अन्य की भागीदारी की उपेक्षा हो रही है। साथ ही ब्राह्मण वर्ग पर भी तंज कसा जा रहा है। ऐसे पोस्ट पर टिप्पणी करने वाले व्यक्ति के संबंध में लोगों का कहना है कि इसी तरह छात्रों के साथ भी उनका नजरिया होगा। इस मामले में अखिल भारतीय ब्राह्मण एकता परिषद डीएम और एसपी को पत्र देकर हर जिले में विरोध जताए गी, अखिल भारतीय ब्राह्मण एकता परिषद के प्रदेश अध्यक्ष युवा प्रकोष्ठ अरविंद कुमार तिवारी ने आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा है कि विधि प्रकोष्ठ से राय लेकर सोमवार को डीएम और एसएसपी को पत्र सौंपा जाएगा इसके बाद सभी जिला स्तर पर आंदोलन शुरू किया जाएगा। यह टिप्पणी एक जाति या वर्ग कि नहीं बल्कि पूरे समाज की है। हालांकि बीएसए प्रयागराज को जानकारी दे दी गई है। बर्खास्तगी के बाद ही संगठन चैन से बैठेगा। इस संबंध में पोस्ट करने वाले व्यक्ति से संपर्क करने का प्रयास किया गया लेकिन मोबाइल बंद मिला।

अखिल भारतीय ब्राह्मण समाज करेगा आंदोलन

नगर पालिका में विशेष संचारी रोग नियंत्रण की अधिकारियों ने बनाई रणनीति

मलेरिया अधिकारी व नगर पालिका के अधिकारियों व सभासदों ने लिया भाग

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर पालिका परिषद बेला प्रतापगढ़ के सभागार में विशेष संचारी रोग नियंत्रण तथा दस्तक अभियान का जनप्रतिनिधियों अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संवेदीकरण किया गया। यह अभियान एक अक्टूबर से 31 अक्टूबर तक चलाया जाएगा।

इस अभियान में मुख्य रूप से के पी द्विवेदी जिला मलेरिया अधिकारी, अधिशासी अधिकारी नगर पालिका मुदित सिंह, यूनिसेफ के वकील अहमद डीएमसी, मलेरिया निरीक्षक संतोष श्रीवास्तव, आकाशदीप शुक्ला डी यू एच सी, सभी सभासद आशुतोष सिंह, आशीष जायसवाल, सिद्धार्थ सिंह, धीरज सिंह, योगेश सिंह, अज्जू श्रीवास्तव एवं स्वच्छ भारत मिशन के वरुण कुमार सिंह, आशीष मिश्रा, सफाई एव खाद्य निरीक्षक संतोष कुमार सिंह, सफाई प्रभारी प्रशांत सिंह, राजस्व निरीक्षक लाल बहादुर, मिथिलेश सिंह, सुरजीत सिंह, महेश तिवारी अन्य नगरपालिका के अधिकारी व कर्मचारी गण संवेदीकरण में उपस्थित रहे। उक्त बैठक में मुख्य रूप से मच्छर जनित बीमारियों से विस्तृत रूप से चर्चा की गई तथा बचाव के उपाय बताए गए। बैठक की अध्यक्षता कर रहे अधिशासी अधिकारी मुदित सिंह ने बताया कि प्रत्येक नागरिक को मच्छर से बचाव के लिए मच्छरदानी का उपयोग करना चाहिए।

संचारी रोग नियंत्रण अभियान बैठक को सम्बोधित करते मलेरिया अधिकारी व ईओ

अपने आसपास जो भी गंदगी हो, कहीं पानी इकट्ठा हो रहा हो, इसकी सूचना तत्काल कंट्रोल रूम नगर पालिका को दिया जाए (1533) पर और अपने स्तर पर भी साफ सफाई का ध्यान रखा जाए और उनके द्वारा बताया गया कि प्रतिदिन नगर पालिका के सफाई नायक व कर्मचारी प्रत्येक वार्ड में जाकर एंटी लारवा का छिड़काव टेमीफोस का छिड़काव नियमित रूप से करवाया जाएगा। सफाई एवं खाद्य निरीक्षक डॉ संतोष कुमार सिंह ने नगरपालिका की जनता से अपील किया है कि वह अपने घर का कूड़ा कूड़े वाले को ही सुबह 10 बजे तक दे दें, और गीले और सूखे कूड़े को पृथक्करण कर लें। आकाश दीप द्वारा बताया गया की नगर के 57 परिवार द्वारा टीकाकरण में सहयोग नहीं किया गया जिसके लिए नगर क्षेत्र वासियों से अपील किया गया कि सभी नगर क्षेत्रवासी टीकाकरण जो लोग टीकाकरण नहीं लगवाए हैं अनिवार्य रूप से टीकाकरण कराएं। अंत में अधिशासी अधिकारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

दुष्कर्म के आरोपी को 20 वर्ष की सजा व 10 हजार का जुमार्ना

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। अपर सत्र न्यायाधीश ध्विशेष न्यायाधीश पाक्सो अधिनियम पंकज कुमार श्रीवास्तव ने संतोष कुमार निवासी वजीरपुरएथाना कुंडा को दुष्कर्म के आरोप में दोषी पाते हुए 20 वर्ष के कठोर कारावास और दस हजार रूपया के अर्थदंड से दंडित किया। अर्थदंड की राशि अदा न करने पर दो वर्ष का अतिरिक्त कारावास भुगतना होगा। पीडिता को अर्थदंड की राशि उसके चिकित्सा एवं मानसिक आघात की पूर्ति तथा पुनर्वास हेतु दिया जाएगा।

राज्य की ओर से पैरवी विशेष लोक अभियोजक देवेश चंद्र त्रिपाठी व अशोक त्रिपाठी ने संयुक्त रूप से की। वादी मुकदमा के अनुसार उसकी नाबालिग पुत्री कक्षा 11 की छात्रा थीएवह 21 मई 2013 को सहेली के साथ शादी के कार्यक्रम में ग्राम वजीरपुर कुंडा गई थी। रास्ते में उसकी साइकिल की चैन फस गईए इतने में पीछे से संतोष मोटर साइकिल से आया और ठीक करने का बहाना बनाकर उसे बहला.फुसलाकर सुनसान जगह पर ले जाकर उसकी इज्जत लूट लिया तथा अपने मोबाइल से उसकी कुछ आपत्तिजनक फोटो भी खींच लिया तथा धमकी दी कि यदि अगर किसी से बताओगी तो तुम्हारी तस्वीर तुम्हारे पूरे परिवार को दिखाकर बदनाम कर दूंगा।

इसके बाद से वह मेरी पुत्री पीड़िता को आए दिन रास्ते में रोककर तस्वीर दिखा कर इज्जत बदनाम करने का डर दिखाकर मोटरसाइकिल पर बैठा कर ले जाता था और सुनसान जगह पर उसके साथ गलत संबंध बनाता था। मेरी पुत्री पीड़िता डर और इज्जत खराब होने के कारण किसी से नहीं बताती थी। 3 अगस्त 2013 को दोपहर में विद्यालय के समय संतोष कुमार उसकी पुत्री को मोबाइल पर कहा कि स्कूल के पीछे आ जाओ नहीं तो तुम्हारी फोटो सभी को दिखा दूंगाएजब मेरी पुत्री पीडिता वहां गई तो उससे काफी चिरौरी मिन्नतें करने लगी कि फोटो हमें वापस कर दोएहमारा पीछा छोड़ दोएजिस पर संतोष कुमार नहीं माना और जबरदस्ती उसके साथ गंदी हरकत की। इतने में मेरा पुत्र जो रास्ते से जा रहा था उसने देख लिया और संतोष कुमार को पकड़कर उसका मोबाइल छीन लिया तब घटना की जानकारी हुई। प्रार्थी ने सीओ कुंडा से मिलकर घटना के बाबत का सूचना दिया।

संघर्ष रंग लाया प्रतापगढ़ को मिले दो स्टेशन मास्टर

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। स्टेशन अधीक्षक के न चाहते हुए भी प्रतापगढ़ रेलवे स्टेशन का आउट डोर फिर से खुलेगा। यहां के लिए रेल प्रशासन लखनऊ ने दो स्टेशन मास्टरों की पोस्टिंग कर दी है। दोनों जल्द ही ड्यूटी ज्वाइन करेंगे। उसके बाद आउट डोर फिर से आबाद हो जायेगा।दरअसल, स्टाफ की कमी के चलते अधिकारियों के निर्देश पर एसएस ने आउट डोर बंद कर दिया था। जिसके चलते गार्डों की ड्यूटी में दिक्कत आने लगी थी। रेलवे बोर्ड की अनुमति बगैर आउट डोर को बंद किए जाने के विरोध में मेंस यूनियन शाखा लामबंद हो गई। नेताओं ने इसके विरोध में प्रदर्शन शुरू कर दिया। जिसमें सीनियर डीओएम मुदार्बाद भी खूब हुआ। प्रदर्शन कई दिनों तक चला। कर्मचारियों का संघर्ष रंग लाया और हो रही किरकरी से बचने के लिए अधिकारियों ने आनन फानन में दो स्टेशन मास्टर की पोस्टिंग यहां

आउट डोर बंद होने के विरोध में मेंस यूनियन कर रही थी स्टाफ की मांग

के लिए कर दी है। इससे यूनियन के लोग में उत्साह है। शाखा अध्यक्ष मोहम्मद शफीक और सचिव अनिल शुक्ला ने बताया है कि दो स्टेशन मास्टर की पोस्टिंग हुई है। यह कर्मचारियों के साथ होने वाले अन्याय की जीत है। नेताओं ने कहा कि किसी भी प्रकार से कर्मचारियों का अहित नहीं होने पाएगा।

झमाझम हुई बारिश से परियावां डाक बंगला सड़क पर भरा पानी, राहगीरों को हो रही परेशानी

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। प्रयागराज-लखनऊ नेशनल हाइवे से जुड़ा परियावां लवाना मार्ग के नवाबगंज डाक बंगला के समीप सीसी रोड के दोनों तरफ बनी नालियां के चोक हो जाने से बारिश के दौरान सड़क के नीचे लबालब पानी भर गया है।

शुक्रवार की शाम हुई जोरदार बारिश का पानी सड़क पर भरा रहा जिससे लोगो को गुजरने में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इसी जलजमाव से गुजरकर नौनिहाल बच्चों से लेकर हाई स्कूल इंटर व पोस्ट ग्रेजुएट तक के छात्र शिक्षा के लिए आलापुर कालाकांकर जाते हैं। कभी कभी तो सामने या पीछे से कोई वाहन के आ जाने से उसके टायर के छीटे से छात्रों के कपड़े खराब हो जाते हैं जो वापस बीच रास्ते से घर चले जाते है। साइकिल सवार राहगीरों को जलजमाव के अगल बगल से होकर निकलना पड़ रहा है, जो पानी मे गिरकर चोटहिल हो रहे हैं।

डाक बंगला सड़क पर हुआ जलभराव।

पानी के जलजमाव का यह आलम है कि निकासी न होने के कारण हफ़्तो पानी भरा रहता है। व्यापारियों का कहना है कि लोक निर्माण विभाग ने जल्द बाजी में सड़क व नाली बना दिया, लेकिन नाली से पानी की निकासी का कही नही बनाया जिससे जहां तक सड़क बनी हुई है उसके बाद डामर सड़क का भाग नीचा होने के कारण पानी का जलजमाव बना रहता है। स्थानीय लोगो ने लोक निर्माण विभाग से पानी निकासी की ब्यवस्था सुनिश्चित कराने के लिए इस ओर ध्यान आकृष्ट कराया है। मुरस्सापुर ग्राम प्रधान संगीता यादव ने जिलाधिकारी के साथ लोक निर्माण विभाग के अधिशाषी अभियंता का ध्यान इस ओर आकृष्ट कराया है।

लाभार्थियों को गोल्डेन कार्ड वितरित करते अतिथिगण।

लाभार्थियों को वितरित हुआ गोल्डेन कार्ड

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के सफलतापूर्वक चार वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 4 वर्ष आयुषमान, स्वास्थ्य-अमृत जनसम्मान का आयोजन विधायक सदर के प्रतिनिधि की अध्यक्षता में कराया गया। कार्यक्रम में लाभार्थियों को गोल्डेन कार्ड का वितरण कराया गया जिसमें उपचारित लाभार्थियों द्वारा योजना के सम्बन्ध में अपने अनुभव भी साझा किये गये। डा0जी0एम0 शुक्ला, मुख्य चिकित्साधिकारी द्वारा योजना के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी देते हुये जनपद के लाभार्थियों से आग्रह किया गया कि वह यथाशीघ्र अपने-अपने आयुष्मान कार्ड बनवा लें। कार्यक्रम में विधायक सदर राजेंद्र मौर्या के प्रतिनिधि आशीष मौर्या, राघवेन्द्र शुक्ला, मीडिया प्रभारी भा0ज0पा0, डा0 जी0एम0शुक्ला, मुख्य चिकित्साधिकारी, डा0 आर0एस0राम0 नोडल अधिकारी(आयु0भा0यो0), डा0 सुधाकर सिंह जिला कार्यक्रम समन्वयक(आयु0भा0यो0) विवेक मिश्रा डी0आई0एस0एम0, अंजनी कुमार डी0जी0एम0, एवं अन्य उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री के कृतित्व पर आधारित प्रदर्शनी का हुआ समापन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। तुलसीसदन (हादीहाल) सभागार में प्रधानमंत्री के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर आधारित कहानी भारत माँ के सच्चे सपूत की चित्र प्रदर्शनी तथा केन्द्र सरकार की महत्वपूर्ण नीतियों, निर्णय, उपलब्धियों एवं जन कल्याणकारी योजनाओं विषयक प्रदर्शनी का समापन हुआ।

प्रदर्शनी का अवलोकन सांसद संगम लाल गुप्ता, भाजपा जिलाध्यक्ष हरिओम मिश्र, अधिकारियों, किसानों, छात्र-छात्राओं, ग्रामीणों एवं जनप्रतिनिधियों द्वारा किया गया। किसानों, ग्रामीणों सहित जनसामान्य ने माननीय प्रधानमंत्री जी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर आधारित प्रदर्शनी का अवलोकन कर काफी प्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि प्रदर्शनी के माध्यम से प्रधानमंत्री के जीवन संघर्षो तथा केन्द्र सरकार की महत्वपूर्ण योजनाओं की जानकारी उन्हें प्राप्त हुई। सूचना विभाग द्वारा केन्द्र एवं प्रदेश सरकार की योजनाओं/उपलब्धियों से सम्बन्धित प्रचार साहित्य का वितरण प्रदर्शनी में आये हुये छात्र-छात्राओं, युवाओं, जनप्रतिनिधियों एवं जनसामान्य को किया गया।

सांसद, किसान, छात्र-छात्राओं ने प्रदर्शनी का किया अवलोकन

हादीहाल में आयोजित प्रदर्शनी में मौजूद छात्राएं।

हस्तशिल्पियों द्वारा निर्मित उत्पादों की प्रदर्शनी का सांसद ने किया शुभारंभ

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत आज तुलसी सदन (हदीहाल) सभागार में लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग द्वारा आयोजित तीन दिवसीय प्रदर्शनी कार्यक्रम का शुभारंभ सांसद संगम लाल गुप्ता द्वारा फीता काटकर एवं दीप प्रज्वलित कर किया गया है। उपस्थित अतिथियों द्वारा सरस्वती जी के चित्र पर एवं श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। इस अवसर पर स्थानीय ओडीओपी उत्पादों एवं हस्तशिल्प उत्पादों के विभिन्न स्टॉल लगाए गए जिसका अवलोकन सांसद, भाजपा जिलाध्यक्ष सहित अन्य जनप्रतिनिधियों व जनसामान्य द्वारा किया गया। कार्यक्रम के संयोजक ओम प्रकाश पांडेय सदस्य सलाहकार समिति एफसीआई उत्तर प्रदेश रहे। इस अवसर पर जिला खादी ग्रामोद्योग अधिकारी विनोद कुमार, जिला सूचना अधिकारी विजय कुमार, जिला एमआईएस प्रबंधक वंदना सिंह, सहायक प्रबंधक एच एन सिंह, भाजपा के राजेश सिंह जिला महामंत्री ,राघवेंद्र शुक्ला मीडिया प्रभारी ,सुनील गोयल जिला संयोजक भाजपा प्रकोष्ठ, रोशन लाल उमर वैश्य, मोहम्मद अनाम, सरदार मंजीत सिंह छाबड़ा, विवेक उपाध्याय, एआरपी धर्मेंद्र ओझा एवं पार्टी के अन्य महत्वपूर्ण सम्मानित पदाधिकारी और अधिकारी गण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर मोहम्मद अनीस ने किया।

आठ आरोपियों के खिलाफ हत्या के प्रयास का मुकदमा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। लालगंज कोतवाली पुलिस ने जमीनी विवाद को लेकर मारपीट की घटना में आठ आरोपितो के खिलाफ हत्या के प्रयास व घर मे घुसकर मारपीट समेत कई गंभीर धाराओं मे शुक्रवार को केस दर्ज किया है। कोतवाली के टोडरपुर निवासी जीतलाल सरोज की पत्नी उषा ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि बीती आठ सितंबर को जमीनी विवाद को लेकर विपक्षी लाठी डंडे व तमंचे से लैस होकर उसके दरवाजे आ धमके। आरोपी गांव के रामसमुझ व केशलाल, राजकुमार पुत्रगण मंगरू, कलावती पत्नी रामसमुझ, मीरा देवी पत्नी राजकुमार, सरिता पुत्री रामसमुझ, श्यामकली पत्नी केशलाल व करिश्मा पुत्री केशलाल एकराय होकर दरवाजे पर आ धमके। आरोपियो ने लाठी डंडे व तमंचे से लैस होकर मारपीट शुरू कर दी। पीडिता जान बचाने के लिए घर मे घुसी तो आरोपी गाली देते घर के भीतर घुस गये। वहां भी आरोपियो ने पीडिता को जमकर मारापीटा। हमले मे पीडिता चोट अधिक लगने से बेहोश हो गयी। तहरीर के आधार पर पुलिस ने शुक्रवार को रामसमुझ समेत आठ के खिलाफ हत्या के प्रयास, गालीगलौज व धमकी, घर मे घुसकर मारपीट तथा बलवा का मुकदमा दर्ज किया है।

मारपीट व धमकी को लेकर क्रास केस हुआ दर्ज

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने मारपीट तथा धमकी को लेकर आठ आरोपियो के खिलाफ क्रास केस दर्ज किया है। लालगंज कोतवाली के जसमेढ़ा निवासी एक पक्ष के उमेश सरोज पुत्र रामसुख ने दी गई तहरीर मे कहा है कि बीस सितंबर को रंजिशन गांव के राजू सरोज पुत्र हीरालाल, मंजीत तथा रंजीत पुत्रगण राजू व हउदेश पुत्र हरीलाल ने लाठी डंडे से लैस होकर उसे मारापीटा। शोर मचाने पर आरोपियो ने गाली देते हुए जानलेवा धमकी दी। तहरीर के आधार पर पुलिस ने गुरूवार की रात चार के खिलाफ केस दर्ज किया है। वहीं दूसरे पक्ष के राजू सरोज पुत्र हरीलाल ने दी गई तहरीर मे कहा है कि बीस सितंबर को जमीनी विवाद में गावं के उमेश व सुरेश पुत्र रामसुख तथा चंद्रेश व रामसुख ने उसे लाठी डंडे से मारापीटा। आरोपियो ने गाली देते हुए शिकायत करने पर जानलेवा धमकी दी। तहरीर के आधार पर पुलिस ने आरोपियो के खिलाफ केस दर्ज किया है।

जनसुनवाई कार्यक्रम में लोगों की समस्या सुनते डीएम।

जिलाधिकारी ने कार्यालय में की जनसुनवाई

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। शुक्रवार को डॉक्टर नितिन बंसल जिलाधिकारी प्रतापगढ़ द्वारा जन सुनवाई कक्ष में शिकायत कताओं की समस्याओं का गंभीरतापूर्वक सुना गया। इस दौरान जिलाधिकारी ने समस्याओं के निस्तारण के लिये अधिकारियों को निर्देशित किया। इस दौरान जिलाधिकारी ने सम्बन्धित अधिकारियों को सचेत किया कि शिकायतकताओं की समस्याओं का समयबद्ध निस्तारण किया जाए तथा निस्तारण से शिकायतकताओं को भी अवगत कराया जाए। जिलाधिकारी ने कहा कि अगर शिकायतों के निस्तारण में ढिलाई बरती गई तो सम्बधित अधिकारियों के विरुद्ध कार्यवाही की जाएगी।

ट्रेनों के बंद होने से वेंडरों के खाने के लाले, कर्मचारियों की मौज

प्रतापगढ़। ट्रेनों के बंद होने से सबसे अधिक खानपान वाले प्रभावित हुए हैं। इनका सारा बिजनेस ठप हो गया है। रोज खाने कमाने वाले वेंडरों को तो खाने के लाले पड़ गए हैं। पेट पालने के लिए दूसरा काम ढूंढने लगे हैं। ट्रेनों का बंद होने से परिचालन से जुड़े कर्मचारियों की मौज है। ट्रेनों के न चलने से स्टेशन की रौनक चली गई है। प्लेटफार्म पर सन्नाटा पसरा हुआ है। काशी विश्वनाथ के समय थोड़ी देर के लिए लोग दिख जाते हैं।

290 कार्टन पटाखा के साथ एक अभियुक्त को पुलिस ने किया गिरफ्तार

चोरी की बैटरी के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल के कुशल निर्देशन में अपराध एवं सक्रिय अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना कुण्डा के निरीक्षक संजय कुमार सिंह मय हमराह द्वारा थाना क्षेत्र के ग्राम शेखपुर आशिक से आतिशबाजी लाइसेंस की शर्तो का उल्लंघन कर चोरी छिपे अवैध रुप से पटाखों/आतिशबाजी का निर्माण करते हुए 290 कार्टन पटाखा/आतिशबाजी के साथ एक अभियुक्त मो0 मुस्तकीम पुत्र आस मोहम्मद को गिरफ्तार किया गया।

इस सम्बन्ध मे थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 416/2022 धारा 286 भादवि व 9बी विस्फोटक अधिनियम का अभियोग पंजीकृत किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त ने पूछतांछ में बताया कि मेरे भाई मो0 मोरसलीन पुत्र आस मोहम्मद के पास आतिशबाजी बनाने का लाइसेंस है। मैं अपने भाई के सहयोग से ही उसके लाइसेंस के आड़ में चोरी छिपे अपने मकान में आतिशबाजी का निर्माण करता हूँ। मैने यह काम मेरे भाई के कहने पर शुरू किया था। मो0 मोरसलीन के बारे में पूछने पर बताया कि वह माल को बेचने के लिए वाहन का इंतजाम करने गये है। निकट भविष्य में दीवाली का त्योहार आने वाला है, तथा माल काफी ज्यादा हो गया था, जिसे बेचने के लिए मकान के सामने यहीं इकट्ठा कर रखा था।

जिसे आप लोगों ने पकड़ लिया। उधर जनपद के थाना लीलापुर के उ0नि0 रमेश कुमार यादव मय हमराह द्वारा मुखबिर खास की सूचना पर थाना क्षेत्र लीलापुर के देवी घाट पुल के पास से मु0अ0सं0 73/2022 धारा 379, 411 भादवि से संबंधित अभियुक्त विनोद कुमार कोरी पुत्र मेवालाल कोरी नि0 इसलामगंज कोटवा थाना कोडवार जनपद सुल्तानपुर को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से अभियोग से सम्बन्धित चोरी की 02 अदद बैट्री बरामद किया गया।

पांच वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जनपद के थाना कन्धई से उ0नि0 वरुण कुमार सिंह मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर मु0नं0 1397/85 धारा 307 भादवि से संबंधित दो वारण्टी अभियुक्तों डुल्लन पुत्र मुजीबुद्दीन व मिनहाजुद्दीन पुत्र मुजीबुद्दीन नि0 डोलाही थाना कन्धई जनपद प्रतापगढ़ को उनके घर से गिरफ्तार किया गया। उधर थाना कन्धई से उ0नि0 जिलेदार पाल मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान थाना स्थानीय के मु0अ0सं0 115/2022 धारा 376, 506 भादवि में वांछित अभियुक्त मिथिलेश कुमार पुत्र रामबरन नि0 ग्राम ताला थाना कन्धई जनपद प्रतापगढ़ को गिरफ्तार किया गया।

उधर थाना कोतवाली नगर से उ0नि0 रामवृक्ष यादव मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर थानाक्षेत्र के जेल तिराहा के पास से थाना स्थानीय के मु0अ0सं0 429/2018 धारा 304 भादवि व 135 विद्युत अधिनियम में वांछित अभियुक्त हरीलाल पाल पुत्र रामलौट पाल नि0 कादीपुर थाना कोतवाली नगर जनपद प्रतापगढ़ को गिरफ्तार किया गया। उधर थाना कोतवाली नगर से उ0नि0 अजय कुमार मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर थानाक्षेत्र के चिलबिला स्टेशन के पास से थाना स्थानीय के मु0अ0सं0 878/2022 धारा 376, 504, 506 भादवि व 3/4 पाक्सो एक्ट में वांछित अभियुक्त संजीव कुमार पुत्र रामअवध नि0 जगेशरगंज थाना अन्तू जनपद प्रतापगढ़ को गिरफ्तार किया गया।

मारपीट व धमकी का केस

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। लालगंज कोतवाली पुलिस ने जमीनी विवाद मे हुई मारपीट को लेकर आरोपिता के खिलाफ केस दर्ज किया है। कोतवाली के उदियापुर अझारा निवासी धर्मराज मौर्य की पत्नी सावित्री मौर्या ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि बीती बीत सितंबर को गांव के अशोक मौर्या की पत्नी श्वेता ने भूमिधरी जमीन पर विवाद को लेकर उसे लाठी डंडे से मारापीटा। आरोपिता ने गाली देते हुए शिकायत करने पर जानलेवा धमकी दी।

रास्ता रोककर परिवार को जान से मारने की दी धमकी

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। अनुसूचित जाति के परिवार को रास्ते पर जाने के लिए मना कर दिया। विरोध करने पर पूरे परिवार को जान से मारने की धमकी देकर जातिसूचक शब्दों का इस्तेमाल किया गया। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के आशापुर ठगवां गांव के रहने वाले राजेश कुमार अनुसूचित जाति के हैं। पट्टी कोतवाली में दिए शिकायती पत्र के अनुसार दो दिन पहले वह अपने परिवार के साथ घर पर जा रहे थे तभी गांव के कुछ लोग उस रास्ते से आने जाने के लिए मना किया। कारण पूछने पर पूरे परिवार को जान से मारने की धमकी तथा गाली गलौज करते हुए जातिसूचक शब्दों का इस्तेमाल किया गया।

खबर संक्षेप

आधी रात को महिला के बिस्तर पर पहुँचा युवक

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के हरदुवा गांव की एक महिला ने थाना पुलिस को शिकायत पत्र देते हुए बताया कि वह अपने घर में चारपाई में सो रही थी आधी रात को पड़ोस का युवक उसके घर घुस आया और उसके बिस्तर पर आकर बैठ गया थाने में दिए शिकायती पत्र में महिला ने बताया कि गांव का विदेशी पुत्र घसीटें बीती रात को आकर बुरी नियत से मेरे चारपाई पर बैठ गया मेरी नींद खुल गई तो मैं चिल्लाई तो जान से मारने की धमकी देते हुए भाग निकला उसने धमकी दिया कि इस बात कि कहीं शिकायत नहीं करना नहीं तो अंजाम बुरा होगा।

एक पद के लिए आवेदन आमन्त्रित

कौशाम्बी। परिवार न्यायालय, कौशाम्बी में परामर्शदाता की आबद्धता के सम्बन्ध में विहित प्रक्रिया के अधीन कुटुम्ब न्यायालय अधिनियम-1984 के अधीन प्रधान न्यायाधीश परिवार न्यायालय कौशाम्बी में एक पद के लिए आवेदन पत्र आमन्त्रित किये गये हैं, जिसके तहत मानदेय फीस रू0-500 प्रति कार्य दिवस या रू0-12500 (बारह हजार, पाँच सौ) प्रतिमाह जो भी कम हो, दिया जाएगा इच्छुक आवेदक को इस आशय की घोषणा करनी होगी कि वह परिवार न्यायालय से सम्बन्धित किसी वाद में पक्षकार नहीं है तथा आवेदक को शासनादेश के अनुसार आवेदन करना होगा। इच्छुक अभ्यर्थी को अपने आवेदन पत्र स्वप्रमाणित फोटो सहित दिनांक 07 अक्टूबर 2022 तक प्रधान न्यायाधीश, परिवार न्यायायल, कौशाम्बी में सायं 05 बजे तक अनिवार्य रूप से जमा करना होगा।

ओडीओपी उत्पाद एवं हस्तशिल्पियों द्वारा निर्मित उत्पादों की लगाई गयी प्रदर्शनी

मुख्य विकास अधिकारी ने कहा कि स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देना, प्रदर्शनी का उद्देश्य

अखंड भारत संदेश

प्रदर्शनी का अवलोकन करती जिला पंचायत अध्यक्ष कल्पना सोनकर व अन्य।

कार्यक्रम में उपस्थित आम जनमानस।

कौशाम्बी। प्रधानमंत्री के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में मनाये जा रहें सेवा पखवाड़ा के तहत शुक्रवार को वोकल फॉर लोकल की अवधारणा पर आधारित स्थानीय ओडीओपी उत्पाद एवं हस्तशिल्पियों द्वारा निर्मित उत्पादों की नवीन मण्डी समिति, ओसा में लगाई गयी प्रदर्शनी का शुभारम्भ एवं अवलोकन अध्यक्ष, जिला पंचायत श्रीमती कल्पना सोनकर द्वारा किया गया। प्रदर्शनी में विभिन्न विभागों द्वारा विभागीय योजनाओं से सम्बन्धित स्टॉल भी लगायें गए। मुख्य विकास अधिकारी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि इस प्रदर्शनी का उद्देश्य स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देना हैं एवं प्रधानमंत्री ने वोकल फॉर लोकल की घोषणा की थी। उन्होंने कहा कि हमारे देश के विभिन्न जनपदों में स्थानीय स्तर पर उच्च गुणवत्ता के उत्पाद बनायें जाते हैं। प्रदेश के मुख्यमंत्री द्वारा स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा एवं विपणन की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए ओ0डी0ओ0पी0 योजना शुरू की गई, जिसके तहत उद्यमियों को बैंक से ऋण एवं अनुदान सहित आदि विभिन्न विभागों की विभागीय सुविधायें उपलब्ध करायी जाती हैं। उन्होंने कहा कि जनपद में औद्योगिक क्षेत्र विकसित करने के लिए निरन्तर प्रयास किया जा रहा हैं। उन्होंने कहा कि जनपद की ओ0डी0ओ0पी0 केला उत्पाद के साथ ही अन्य खाद्य प्रसंस्करण उत्पादों को भी बढ़ावा दिया जाने का प्रयास निरन्तर किया जा रहा है इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी, जिला विकास अधिकारी विजय कुमार व उपायुक्त उद्योग एस0 सिद्दीकी सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी तथा भाजपा जिलाध्यक्ष श्रीमती अनीता त्रिपाठी अनिल सिंह संजय जायसवाल प्रेम चौधरी रमेश अग्रहरि सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

तेज आवाज के साथ मंदिर के ऊपर गिरी आकाशीय बिजली

कौशाम्बी जिले में पिछले कई दिनों से रुक रुक कर बारिश हो रही है, बारिश के बीच आकाशीय बिजली तेज आवाज के साथ मंदिर के ऊपर गिर गई। इससे एक गर्भवती महिला झुलस गई, वहीं मंदिर का कलश और त्रिशूल टूट गया। महिला को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बीती रात से ही लगातार बारिश हो रही थी ,हवा के साथ पानी बरस रहा था। तेज आवाज के साथ आकाशीय बिजली सिराथू के उचरांवा के मजरा खगड़पुर में मंदिर पर गिर गई। इसी दौरान सुनीता देवी पत्नी अनिल कुमार घर से बाहर निकली थी।आकाशीय बिजली की चपेट में आने से सुनीता देवी गंभीर रूप से झुलस गई। वहीं मंदिर के ऊपर लगा त्रिशूल और कलश टूटकर नीचे गिर गया। मंदिर का चबूतरा भी क्षतिग्रस्त हो गया है। गांव के ही अनिल कुमार, पंचमलाल, राजेंद्र राजपूत, विनोद राजपूत आदि लोगों ने बताया कि तेज आवाज के साथ आकाश से वज्रपात हुआ था। गनीमत थी कि सुनीता देवी बच गई। पूरा गांव इससे दहशत में था। सुबह लोगों ने क्षतिग्रस्त मंदिर का चबूतरा व कलश और त्रिशूल टूटा हुआ देखा तो उनके होश उड़ गए। आकाशीय बिजली गिरने की वजह से श्यामलाल के घर में लगा इनवर्टर व अन्य बिजली के उपकरण भी क्षतिग्रस्त हो गए हैं।

न्यूज झरोखा

निपुण लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सभी शिक्षक कार्य योजना बनाकर टीम भावना से करे कार्य डायट प्राचार्य

कौशांबी। प्राथमिक विद्यालय मलाक मोइनुद्दीनपुर, विकासखंड मूरतगंज, जनपद कौशांबी में डायट प्राचार्य की अध्यक्षता में संकुल महगांव की मासिक समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। इस समीक्षा बैठक में मूरतगंज ब्लाक के डायट मेण्टर डॉ वन्दना सिंह राजेन्द्र भारतीया , ए आर पी टीम, संकुल महगांव के सभी विद्यालयों के प्रधानाध्यापक एवं सभी संकुल शिक्षक उपस्थित हुए प्राचार्य ने निपुण भारत मिशन के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु किस तरीके से कार्य योजना बनाकर कार्य करना है उससे सभी प्रधानाध्यापक को अवगत कराया और टीम भावना से कार्य करते हुए सभी शिक्षक बहुत कम समय में निपुण लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु प्रेरित किया। बैठक में प्राचार्य ने उपचारात्मक शिक्षण, घंटा वादन, समय सारणी का पालन, दीक्षा एप के बेहतर प्रयोग, प्रिंट रिच सामग्री का कक्षा शिक्षण में प्रयोग, गतिविधियों के माध्यम से शिक्षण , गणित एवं विज्ञान किट के समुचित उपयोग पर, प्रांगण की साफ सफाई, बच्चों की शत-प्रतिशत उपस्थिति, एसएमसी बैठक सहित एजेण्डा अनुसार सभी बिन्दुओं पर अत्यंत महत्वपूर्ण एवं एवं प्रेरक उद्बोधन दिया प्राचार्य के उद्बोधन से संकुल बैठक में उपस्थित सभी प्रधानाध्यापक ने अपने विद्यालय में लागू करने का संकल्प लिया।

कुवैत में होने वाले एशियन गेम्स में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगी सुनीता

कौशाम्बी। किसान चुन्नीलाल की बेटी सुनीता कुमारी को विश्व स्तर पर खेलने का मौका मिला है सुनीता कुमारी का चयन होने के बाद परिवार सहित गांव में खुशी की लहर है। भोपाल में हुई दौड़ प्रतियोगिता में 3000 मीटर की दौड़ में 10 मिनट 4 सेकंड पूरी कर हरियाणा के दो खिलाड़ियों को पछाड़कर प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली सुनीता सरोज कौशांबी के किसान चुन्नीलाल सरोज की बेटी ने जनपद का नाम रोशन किया है कुवैत में होने वाले एशियन गेम्स में 3000 मीटर की दौड़ में भारत का प्रतिनिधित्व सुनीता कुमारी करेंगी।

आयुष्मान दिवस पर सम्मानित हुए बेहतर कार्य प्रदर्शन करने वाले स्वास्थ्य कर्मी

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी आयुष्मान दिवस की चौथी वर्षगाठ का आयोजन शुक्रवार को मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में किया गया मुख्य अतिथि के रूप में जिला अध्यक्ष अनीता त्रिपाठी ने कार्यक्रम का शुभारम्भ कियो कार्यक्रम में आयुष्मान कार्ड बनाने में आ रही दिक्कतों पर चर्चा के साथ ही आयुष्मान योजना के अंतर्गत हुए परिवर्तन जैसे कई और बिमारियों का जुड़ना, पैकेज को रिन्यू करना आदि के बारे में बताया गया अनीता त्रिपाठी ने आयुष्मान योजना के लाभार्थी को गोल्डन कार्ड देकर व योजना के क्षेत्र में बेहतर कार्य प्रदर्शन करने वाले स्वास्थ्य कर्मी को प्रोत्साहन रूप प्रशस्तिपत्र देकर उनका उत्साह वर्धन किया और आगे भी इसी तरह कार्य करने के लिए प्रेरित कियो मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ सुषेंद्र कुमार ने कहा कि आयुष्मान योजना का लाभ हर लाभार्थी को मिले इस उद्देश्य से विभाग लगातार लक्षित व्यक्ति से संपर्क कर उनका आयुष्मान कार्ड बना रहा हैं उन्होंने बताया कि जनपद में अभी तक एक लाख 82 हजार 411 कार्ड बनाये जा चुके हैं और लगातार कार्ड बनाने का कार्य चल रहा हैं आयुष्मान भारत योजना के नोडल अधिकारी डा० हिमांशु भूषण ने सभी सम्मानित को बधाई देते हुए कहा कि यदि आपको कार्ड बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करने में किसी प्रकार से कोई भी समस्या होती हैं तो आप हम लोगो से संपर्क कर समस्या का निदान कराने में सहयोग लें डॉ ओम त्रिपाठी जिला कार्यक्रम समन्वयक आयुष्मान भारत ने बताया कि आयुष्मान भारत पखवाड़ा जोकि 15 सितम्बर से 30 सितम्बर तक चल है

स्वयं भी कर सकते हैं आयुष्मान योजना कार्ड के लिए आवेदन

स्वास्थ्य कर्मियों को सम्मानित करते सीएमओ साथ में मौजूद जिला अध्यक्ष भाजपा

उसमे युद्ध स्तर से कार्य किया जा रहा हैं जिसमे आशा कार्यकर्त्ता एप के जरिये भी फेश रीडिंग कर कार्ड बना रही हैं उन्होंने बताया कि पखवाड़े के अंतर्गत अभी तक 14,384 कार्ड बनाया जा चुका हैं जो हमारे लिए उपलब्धि हैं और अभी पखवाड़ा 30 सितम्बर तक चलेगा तो ये आकड़ा और भी बढ़ जायेगो उन्होंने बताया कि आधार कार्ड से यदि नम्बर लिंक है तो आम जनता भी इस लिंक पर जाकर खुद से भी आवेदन कर सकती है इस मौके पर आशा संगनी अनीता पाण्डेय ब्लाक चायल, रिंकू मंझनपुर वंदना कनेली ब्लाक से , स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी प्रभाकर सिंह चंदेल (ब्लाक कडा), बीसीपीएम राने निषाद, आई.टी मैनेजर अनुराग सिंह आदि को सम्मानित किया गया।

दबंगों ने दंपति समेत कई लोगो पर किया हमला

कौशाम्बी। पिपरी थाना क्षेत्र के असरावे खुर्द गांव में दबंगों ने घर में घुसकर एक परिवार पर हमला किया है दबंगों ने दहशत फैलाने के उद्देश्य से फायरिंग भी की है दबंगों के हमले में दंपति सहित कई लोग घायल हैं पुलिस ने मामले में मुकदमा दर्ज कर लिया है। घटनाक्रम के मुताबिक पिपरी थाना क्षेत्र के असरावे खुर्द गांव निवासी मिल्लू पुत्र स्व0 रोशन के मुहल्ले के रहने वेले रारी उर्फ राजू लवकुश, सूरज अंधू झंगा, बुगडुम कल्लू भल्लू लोरी झुरु कमई चुलबुल चुक्का साजन, पिन्टू आपराधिक किस्म के व्यक्ति है जो मोहल्ले के सुवर पालक होने का ढोग करते है और आए दिन अपने सुवर को मुहल्ले में किसी न किसी के घर में छोड़ देते हैं सुवर खोजने के बहाने वह लडकियों के साथ छेड़खानी करते है 22 सितम्बर को समय लगभग 8.30 बजे रारी उर्फ राजू ने मल्लू के घर पर सुवर छोड़ दिया और उसको लेने मल्लू के घर मे घुस गया और मल्लू की भतीजी के साथ अश्लील हरकतें करने लगा बालिका ने शोर मचाया तो मौके पर मल्लू के परिजन पहुच गए दबंगो ने मल्लू पर धारदार हथियार से हमला कर दिया मौके पर आधा दर्जन दबंग लाठी डण्डा, कट्टा तथा धारदार हथियार लेकर मल्लू के घर में घुस गए और अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दिया दबंगों ने दौड़ा-दौड़ा कर परिजनों को लाठी डंडे से पीटा हमले में दंपति सहित कई लोग घायल हैं जिनका इलाज अस्पताल में चल रहा है।

मकान निर्माण में हाथ बंटा रहा युवक को लगा करंट

करंट की चपेट में आकर युवक गम्भीर घायल

अझुवा कौशाम्बी। कड़ा धाम थाना क्षेत्र के देवीगंज में मकान निर्माण में हाथ बंटा रहा युवक सरिया सीधी करते वक्त ऊपर से गुजरी रही हाईटेंशन विधुत तार की चपेट में आ गया,करंट की चपेट में आने से युवक गंभीर झुलस गया,परिजनो ने घायल अवस्था में युवक को अस्पताल में भर्ती कराया है ,जहा से उसे प्रयागराज एस आर एन रेफर कर दिया गया। घटना क्रम के मुताबिक कड़ा धाम थाना क्षेत्र के देवीगंज मे बन रहे मकान में विकास सोनी उम्र 25 वर्ष पुत्र रामआसरे सोनी शौचालय निर्माण के कार्य मे मदद कर रहा वह करंट की चपेट में आ गया और गंभीर झुलस गया।युवक को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया जहा से उसे प्रयागराज रेफर कर दिया गया।

कार्यालय खण्ड विकास अधिकारी, मंझनपुर, कौशाम्बी

निविदा सूचना

क्षेत्र पंचायत मंझनपुर जनपद कौशाम्बी में केन्द्रीय वित्त आयोग/पंचम वित्त आयोग की संस्तुतियों के आधार पर प्राप्त धनराशि से निम्नलिखित परियोजनाओं पर उनके नाम के सम्मुख अंकित मात्रा में निर्माण सामग्री की आवश्यकता है निविदा दिनांक 24.09.2022 से दिनांक 10.10.2022 को सायं 4 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निर्माण सामग्री आपूर्ति करने हेतु विकास खण्ड मंझनपुर में पंजीकृत ठेकेदारों/आपूर्तिकर्ताओं से अपेक्षा है कि निर्धारित समय सीमा के अन्दर अपने–अपने निविदा प्रपत्र सील बन्द लिफाफे में विकास खण्ड कार्यालय में रखे निविदा बॉक्स में डालना सुनिश्चित करें। निविदा पत्र के साथ आवश्यक प्रपत्र जैसे –पैन कार्ड, जी.एस.टी. रजिस्ट्रेशन, हैसियत प्रमाण पत्र, चरित्र प्रमाण पत्र, ठेकेदारी पंजीकरण प्रमाण पत्र, शपथ पत्र (रूपये 10.00) अनुबन्ध पत्र (रूपये 100.00) संलग्न करना है। प्राप्त निविदायें दिनांक 11.10.2022 को सायं 4 बजे अद्योहस्ताक्षरी द्वारा गठित समिति के समक्ष खोला जायेगा अवकाश के दशा में अगले कार्यदिवस में निविदा खोली जायेगी। क्षेत्र पंचायत मंझनपुर में सामग्री आपूर्तिकर्ताओं से अपेक्षा है कि निविदा मूल्य के रूपये में जमा की जाने वाली धनराशि क्षेत्र पंचायत निधि के पक्ष में डिमाण्ड ड्राफ्ट/बैकर्स चेक/चेक एवं धरोहर से संबधित धनराशि खण्ड विकास अधिकारी मंझनपुर के पक्ष में बंधक हो, एफ.डी. आर. के माध्यम से देय हो, को आवेदन पत्र के अवश्य संलग्न करें। संबन्धी कार्य में भुगतान इलेक्ट्रानिक माध्यम से किए जायेंगे। आयकर, व्यापारकर, लेवरसेस, रॉयल्टी एवं अन्य कटौतियां नियमानुसार होगी। किसी एक निविदा को अथवा समस्त निविदाओं को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार अद्योहस्ताक्षरी में सुरक्षित रहेगा। निविदा की शर्तो निविदा फार्म एवं अधिक जानकारी के लिए कार्यालय समय में संपर्क किया जा सकता है।

क्र0	परियोजना का नाम	निविदा की अनु0 धनराशि (लाख रूपये में)	2 प्रतिशत की धनराशि (लाख रूपये में)	निविदा का मूल्य रूपये में	कार्य पूर्ण करने का समय
1.	ग्राम पंचायत टेवां में नाली निर्माण कार्य	6.09	0.12	500	3 माह
2.	ग्राम पंचायत टेनशाह आलगाबाद सुरेश कुशवाहा के घर से धर्मपाल रैदास के घर तक इण्टरलाकिंग निर्माण कार्य	3.21	0.06	500	3 माह
3.	ग्राम पंचायत भद्दूरपुर के बभन तारा तालाब से पवन के , समरसेबुल तक इण्टरलाकिंग निर्माण कार्य	8.29	0.16	500	3 माह
4.	ग्राम पंचायत टेवां में कालीमाता रोड पर पुलिया एवं इण्टरलाकिंग निर्माण कार्य	4.15	0.01	500	3 माह
5.	ग्राम पंचायत एडहरा में नन्हू पाण्डेय के घर से नोखे लाल यादव के घर तक नाली व इण्टरलाकिंग निर्माण कार्य	6.06	0.12	500	3 माह
6.	ग्राम पंचायत पवारा में नाली एवं इण्टरलाकिंग निर्माण कार्य	7.44	0.15	500	3 माह
7.	ग्राम पंचायत चक में आर सी सी रोड से प्राथमिक विद्यालय होते हुए काली रोड तक इण्टरलाकिंग निर्माण कार्य	7.77	0.15	500	3 माह
8.	ग्राम पंचायत पवैया में मोती के घर होते हुए शैलेन्द्र कुमार के घर तक इण्टरलाकिंग निर्माण कार्य	4.67	0.09	500	3 माह
9.	ग्राम पंचायत सादिकपुर सेमरहा में चंदन पासी के घर से थाम्बा अलावलपुर मार्ग तक गिट्टी एवं इण्टरलाकिंग निर्माण कार्य	7.77	0.15	500	3 माह
10.	ग्राम पंचायत बहादुरपुर में मोहम्मद मियां के ट्यूबेल से मैकू पासी के खेत तक नाली निर्माण कार्य	3.90	0.08	500	3 माह
11.	ग्राम पंचायत बहादुरपुर में मुमताज अहमद के समरसेबुल से राम प्रसाद चमार के खेत तक नाली निर्माण कार्य	3.90	0.08	500	3 माह
12.	ग्राम पंचायत चकसहनपुर के युसुफपुर रारा डिहवा में करन सिंह मौर्या के घर से लवकुश त्रिपाठी के घर तक नाली निर्माण कार्य	3.90	0.08	500	3 माह
13.	ग्राम पंचायत बहादुरपुर में नगीना देवी के खेत से प्रेम धोबी के खेत तक नाली निर्माण कार्य	3.90	0.08	500	3 माह
14.	ग्राम पंचायत सादिकपुर सेमरहा में बेनी कोटेदार के घर से अन्तेष्ठिस्थल पुरवा तक इण्टरलाकिंग निर्माण कार्य	7.77	0.15	500	3 माह
15.	ग्राम पंचायत गुवारा तैयबपुर में तीरथ के घर से चुर्रा तालाब तक नाली निर्माण कार्य ढक्कन सहित	5.16	0.10	500	3 माह
16.	2 एच.पी. समरसेबुल, 200 मीटर पाइप लाईन एवं 2 हजार लीटर टंकी स्थापन कार्य	8.30	0.16	500	3 माह
17.	ग्राम पंचायत भैला मकदूम पुर में कामता के घर से सलमान के घर तक नाली व इण्टरलाकिंग कार्य	5.85	0.11	500	3 माह

अवर अभियन्ता
ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग
मंझनपुर–कौशाम्बी

खण्ड विकास अधिकारी
मंझनपुर–कौशाम्बी

मा. प्रमुख
क्षेत्र पंचायत
मंझनपुर–कौशाम्बी

पत्रांकः 988/लेखा/निविदा–प्रकाशन/क्षे0पं0मं0/रा0वि0/के0वि0अ0/2022–23/ दिनांक 23.09.2022

एआरटीओ से पंगा लेने वाले लिपिक का घूस लेते वीडियो वायरल

कौशाम्बी। योगी सरकार के भ्रष्टाचार मुक्त प्रदेश के आदेश को कौशाम्बी जिले के एआरटीओ कार्यालय में तैनात बाबू पलीता लगा रहे है,एआरटीओ कार्यालय में व्याप्त भ्रष्टाचार का जीता जागता सबूत कार्यालय के एक लिपिक का काम के बदले रिश्वत लेते हुए वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है,वायरल वीडियो में सीज वाहन को छोड़ने के नाम पर रुपए लेते हुए वरिष्ठ सहायक नजर आ रहे है।वही दूसरे वायरल वीडियो में ड्राइविंग लाइसेंस बनाने के लिए एक दलाल से रुपए लेते हुए लिपिक दिखाई पड़ रहा है। जिस लिपिक का घूस लेते वीडियो वायरल हो रहा है यह लिपिक लंबे समय से एआरटीओ से पंगा ले रहा था बात-बात में एआरटीओ से नोकझोंक कर रहा था पूर्व में इसका वेतन की कटौती भी किया गया था ड्राइविंग लाइसेंस एवं इन्फोर्समेंट का काम देख रहे वरिष्ठ सहायक राजकुमार गौतम का यह वायरल वीडियो बताया जा रहा है,एआरटीओ द्वारा बंद की गई गाड़ियों को छोड़ने के एवज में उक्त लिपिक वसूली करते हुए हमेशा देखे जाते है,यह लिपिक कार्यालय में पिछले 04 सालो से तैनात है जिसका फायदा उठाते है।लोगो का आरोप है की बगैर सुविधा शुल्क के यह लिपिक दस्तावेजों में हस्ताक्षर ही नही करते है।

भाषा और शब्दानुशासन सफलता का प्रथम सोपान

अखंड भारता संदेश

अझुवा कौशाम्बी। हिन्दी पखवाड़ा के अन्तर्गत अझुवा के धर्मा देवी इण्टरमीडिएट कॉलेज मे उच्चारण और लेखन मे अशुद्धियाँ दूर करने के उपाय विषयक एक दिवसीय कर्मशाला का आयोजन हुआ मुख्य अतिथि आचार्य पण्डित पृथ्वीनाथ पाण्डेय, विशिष्ट अतिथि रणविजय निषाद, संस्थापक राम अवतार त्रिपाठी, प्रधानाचार्य डॉ० रामकिरण त्रिपाठी ने संयुक्त रूप में, माँ सरस्वती की प्रतिमा पर दीप-प्रज्वलन एवं पुष्प अर्पित कर हिन्दी भाषा कर्मशाला का विधिवत् शुभारम्भ किया। इसके बाद विद्यालय की छात्रा रिया जैश, अल्पा मिश्र, खुशबू देवी, सपना, शिखा पाल, शीलू, मनीषा तथा आँचल यादव ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत किया, तदनन्तर तनूजा गौतम, सविता, आँचल, इसिता केसरवानी तथा किमराय ने सुमधुरस्वर में स्वागत गीत गा कर सब का मन मोह लिया। इसके बाद विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ० रामकिरण त्रिपाठी ने आचार्य पण्डित पृथ्वीनाथ पाण्डेय तथा शिक्षक एवं लेखक रणविजय निषाद का बैज-अलंकरण, अंगवस्त्र, माल्यार्पण एवं प्रतीक चिह्न भेंट कर समलंकृत किया। तत्पश्चात शिक्षक एवं लेखक रणविजय निषाद ने मुख्यअतिथि का परिचय एवं भाषा-शुद्धता के महत्त्व तथा वर्ण (स्वर-- अ, आ, इ,----; तथा व्यञ्जन-- क, ख , ग ---- आदि) और अक्षर (क + अ = क; ख + अ = ख आदि) में भेद पर प्रकाश डाला। कार्मशाला में लब्धप्रतिष्ठ, भाषाविज्ञानी एवं समीक्षक डॉ० पृथ्वीनाथ पाण्डेय ने भाषा के संवर्द्धन, शुद्धाशुद्ध शब्द-प्रयोग, व्याकरण आदि पर विस्तृत चर्चा-परिचर्चा कर आवास, निवास, प्रवास, अप्रवास, हूं और हूँ, मुस्कान और मुसकान, शिरोरेखा-व्यंजन-- थ, ध, भ और श, परीक्षा और परिक्षा, मिष्ठान और मिष्टान्न, मेरी सोच और मेरा सोच, मेरी कलम और मेरा कलम जैसे शब्द के शुद्ध प्रयोग पर चर्चा परिचर्चा किया। कार्यक्रम के अन्त में विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ० रामकिरण त्रिपाठी ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन रामशंकर सिंह ने किया। अन्त में सामूहिक राष्ट्रगान गा कर कर्मशाला को विराम दिया गया। कर्मशाला में शिक्षक आदित्य द्विवेदी, वरुणप्रकाश जोशी, शंकर लाल, राजेश कुमार, रामभवन तथा शैलेंद्र कुमार गुप्त सहित शतादिक छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहीं।

मूल सुविधाओं को दरकिनार कर 2 करोड़ का टेंडर कर करोड़ों हजम करना चाहते जिम्मेदार

अखंड भारत संदेश

कई हाईमास्ट,सैकड़ों एलईडी स्ट्रीट जल रहीं फिर भी 2 करोड़ का टेंडर क्यों

अझुवा कौशाम्बी। आदर्श नगर पंचायत अझुवा को शासन ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय आदर्श नगर पंचायत योजना में शामिल कर 3 करोड़ से अधिक धनराशि निर्गत कर नगर के विकास को गति देने का प्रयास किया किंतु जिम्मेदारों ने 2 करोड़ का आनन फानन हाई मास्ट स्ट्रीट लाइट विद्युत पोल का टेंडर कर लूट खसोट में व्यस्त हो गए।नगर पंचायत अझुवा के तमाम बुद्धजीवियों ने कहा जब नगर पंचायत अझुवा को आदर्श नगर पंचायत से पंडित दीनदयाल उपाध्याय योजना में शामिल किया गया तो उम्मीद जगी कि नगर का चहुमुखी विकास होगा मूलभूत सुविधाएं नगर को उपलब्ध होंगी किंतु ये क्या नगर के जिम्मेदारों ने कार्यकाल खत्म होने से पहले विजली उपकरण लगाकर मोटा कमीशन खाने के चक्कर मे नगर को बर्बाद करने पर उतारू हो गए लोगों ने बताया कि मौजूदा समय मे ही नगर में सैकड़ों से ज्यादा एलईडी स्क्रीन लाइट कई हाई मास्ट मुख्य सब्जी बाजार और पानी की टंकी में लगे हैं जिसकी रोशनी से नगर पंचायत जगमगा रहा है स्ट्रीट लाइटें दिन भर जलती रहती हैं दिन के उजाले में भी नगर का एक भी कर्मी बंद करने हेतु दिखाई नही देता 2 करोड़ से क्या आवश्यकता है विद्युत पोल,हाई मास्ट स्ट्रीट लगाने की नगर पंचायत अझुवा जिले की बड़ी बाजार के रूप में शुमार है जमीनी हकीकत को देखकर इस भारी भरकम योजना से नगर का चहुँमुखी बिकास किया जा सकता है किंतु दुर्भाग्य है सभी जिम्मेदार सिर्फ तगड़ा कमीशन खाने के चक्कर मे आतुर हैं। कोई संज्ञान लेने वाला नही है।

बड़ौदा यूपी ग्रामीण बैंक में एक दिवसीय हड़ताल पर रहे बैंक कर्मी

कौशाम्बी। आल इंडिया रीजनल रूरल बैंक एम्प्लाइज एसोसिएशन के आवाहन पर देश भर की 43 ग्रामीण बैंकों के 70000 से ज्यादा अधिकारी एवम कर्मचारी हड़ताल पर रहें। उपरोक्त हड़ताल का आवाहन भारत सरकार द्वारा ग्रामीण बैंकों को भी निजीकरण के रास्ते मे ले जाने की प्रारम्भ की जा रही कार्यवाही के विरोधस्वरूप किया गया है। विदित हो कि भारत सरकार ने ग्रामीण बैंकों को अपनी वैधानिक आवश्यकताएं हेतु आवश्यक कैपिटल जुटाने हेतु शेयर बाजार के माध्यम से आईपीओ लाकर पूंजी जुटाने के निर्देश जारी कर दिए गए है, जबकि एसोसिएशन सभी ग्रामीण बैंकों को एक करते हुए भारतीय राष्ट्रीय ग्रामीण बैंक बनाकर ग्रामीण भारत से सीधा जुड़ी 100 करोड़ आबादी के लिए एक बैंक स्थापित करने की मांग कर रही है। उपरोक्त मांग को लेकर 12 अगस्त को दिल्ली जंतर मंतर में धरना भी दिया गया और अभी तक देश भर के 100 से ज्यादा सांसदों को ज्ञापन दिया जा चुका है। इसी के साथ 30000 से ज्यादा रिक्त पदों पर भर्ती, 20000 से ज्यादा दैनिक वेतन पर कार्य कर रहे अस्थाई कर्मचारियों का नियमिति करण, मृतक आश्रित सेवायोजना को वर्ष 2014 से लागू करना, नई पेंशन योजना को वापस लेना, बैंकिंग पेंशन नियम वर्ष 1993 को ग्रामीण बैंकों में वर्ष 1993 से प्रभावी करना, सेवा शर्तों एवम प्रमोशन नीति को बैंकिंग उद्योग अनुसार समान रूप से लागू करना आदि प्रमुख मांग शामिल है।उपरोक्त आवाहन के तहत बडौदा यूपी बैंक के क्षेत्रीय कार्यालय कौशाम्बी में शुक्रवार को हड़ताली अधिकरियो एवम कर्मचारियों ने धरना एवम प्रदर्शन किया।

संपादकीय

विरासत के मुद्दे

हमारी नौकरशाही के शीर्ष पायदान संरक्षित हैं। नौकरशाहों को मुफ्त आवास के साथ घर और कार्यालय में कारें, चपरासी व सहायकों की सुविधा तथा नौकरी में समय पर शानदार पदोन्नति मिलती है। यह पदोन्नति उनके प्रदर्शन के आधार पर नहीं होती। एक अधिकारी के जूते व कपड़ों की इस्तरी के लिए शासन द्वारा 'अर्दली' को वेतन दिया जाता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गत 8 सितंबर को 'कर्तव्य-पथ' नामक नए पथ का उद्घाटन किया। इस मौके पर उन्होंने कहा- 'राजपथ की संरचना और भावना गुलामी का प्रतीक थी लेकिन आज वास्तुकला में बदलाव के साथ इसकी भावना भी बदल गई है।' इस अवसर पर जारी एक आधिकारिक बयान में कहा गया कि इसके साथ ही जिसे किंग्सवे या 'राजपथ' के रूप में जाना जाता है, वह 'गुलामी का प्रतीक... हमेशा के लिए मिटा दिया गया।' इस कदम को 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के भाषण में प्रधानमंत्री की पांच प्रतिज्ञाओं में से दूसरी प्रतिज्ञा (नए भारत के 'पंच प्रण') के अनुरूप बताया जा रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा था- 'हमारे अस्तित्व के किसी भी हिस्से में, हमारी आदतों या दिमाग के गहरे कोनों में भी गुलामी का कोई थोड़ा सा भी अंश नहीं होना चाहिए... हमें खुद को गुलामी की मानसिकता से मुक्त करना होगा जो हमारे भीतर और आसपास की अनगिनत चीजों में दिखाई देती है।' यह सच है कि ऐसी अनगिनत चीजें हैं जो आम भारतीयों को गुलामी की मानसिकता के साथ जीने और काम करने के लिए मजबूर करती हैं जिनमें से कम से कम वह तरीका नहीं है जिसमें गोरे लोगों की वापसी के बाद भूरे रंग के साहबों के पदभार संभालने के पश्चात आम भारतीय पहले अपने अधिकारों के लिए तरसते हैं। इस गुलामी के सबसे बड़े मुजरिम और योगदानकर्ताओं में वे अधिकारी शामिल हैं जिन्होंने अपने नागरिकों के साथ इस तरह का व्यवहार किया। कोविड-19 के बाद लगाए गए लॉकडाउन के दौरान मजदूरों को पीटा, नोटबंदी के तुरंत बाद एटीएम के बाहर नागरिकों को पीटा, जिन कठिन परिस्थितियों में हमें आधार कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, परिवहन परमिट जैसी सरल सेवाएं मिलती हैं। उन कानूनों के बारे में बात नहीं करना जो जेल में बंद बीमार 84 वर्षीय फादर स्टेन स्वामी को अंतिम दिनों में अस्पताल के बिस्तर पर स्थानांतरित करने के बाद भी हिरासत में रखता है। स्वतंत्र भारत में भी राज्य सरकारों द्वारा नागरिकों का उत्पीड़न उत्तरोत्तर बदतर होता गया है। यह एक औपनिवेशिक फ्रेम से स्वतंत्रता का संकेत नहीं हो सकता है जो लोगों को जिद्दी समझता है। इस प्रवृत्ति पर निगरानी रखने और इसे नियंत्रित करने की आवश्यकता है। एक छोर पर विरासत के मुद्दों की एक श्रृंखला है जिसने दूरदर्शन-युग के टेलीसीरियल 'रजनी' को पूर्व-उदारीकृत भारत में लोकप्रिय बना दिया क्योंकि नायिका ने रोजमर्रा की उपयोग में आने वाली वस्तुओं के लिए लड़ाई लड़ी, जैसे रसोई गैस सिलेंडर, फोन कनेक्शन, छोटा ऋ ण आदि। उदारीकृत भारत में इनमें से कुछ सेवाएं सरकार द्वारा उन्हें निजी क्षेत्र को अनुबंधित करने के बाद बहुतायत में उपलब्ध हैं, लेकिन हम धीरे-धीरे बढ़ते और आसानी से समझ में न आने वाले कॉर्पोरेट नियंत्रण और बढ़ती कॉर्पोरेट शक्ति का भी सामना करते हैं ताकि अंदर श्रमिक और बाहर ग्राहक जो प्राप्त है।

मेरे लिए नरेन्द्र मोदी के मायने

सुरेन्द्र सिंह हुड्डा

'जो गरजते हैं वो बरसते नहीं' यह उक्ति वर्तमान भारत के संदर्भ में अनुचित प्रतीत होती है क्योंकि मोदी गरजते भी हैं और बरसते भी हैं। देश का एक नागरिक होने के नाते मेरा यह मानना है कि देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की नीयत और नीति देश की सबसे बड़ी बुराई भ्रष्टाचार को नष्ट करने की है। यही कारण है कि इस वर्ष 15 अगस्त 2022 को लाल किले की प्राचीर से देश को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भ्रष्टाचार को समाप्त करने की अपनी गंभीरता को दोहराया और देश की जनता को यह अहसास दिलाने की कोशिश भी की कि नागरिकों का यह कर्तव्य है कि वह भी भ्रष्टाचार को समाप्त करने में सहयोग करें। नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री बनते ही सरकारी तंत्र को पारदर्शी बनाने के अनेक सार्थक प्रयास किए जोकि सफल भी हुए। डिजिटल लेनदेन का व्यापक उपयोग शुरू होना इस दिशा में सबसे बड़ा उदाहरण है। नरेन्द्र मोदी न होते तो क्या होता? यह एक ऐसा विषय है जिस पर विचार अवश्य होना चाहिए ताकि देश की वर्तमान परिस्थितियों से उनकी तुलना हो सके। मान लो कि यदि 2014 में भाजपा नेतृत्व की मोदी सरकार न आई होती और कांग्रेस के किसी नेता के नेतृत्व में केंद्र सरकार बनी होती तो क्या यह संभव होता कि उनके दूसरे कार्यकाल में जम्मू कश्मीर से धारा 370 हटती और क्या माननीय उच्चतम न्यायालय में राममंदिर को लेकर चल रहे कानूनी मामले में कांग्रेस नेतृत्व की सरकार सकारात्मक रुख रखती? इतना ही नहीं क्या यह भी संभव हो पाता कि दशकों से पिस रही मुस्लिम समुदाय की महिलाओं को कांग्रेस सरकार के रहते न्यायालय से तीन तलाक मामले में न्याय मिलता? देश यह कभी नहीं भूल सकता कि 2014 से पहले कांग्रेस नेतृत्व की सरकार भ्रष्टाचार के प्रति बेहद नकारात्मक रुख अपनाए हुए थी और उसी कारण देश की अधिकांश जनता ने कांग्रेस के विरुद्ध जाते हुए भारतीय जनता पार्टी के प्रधानमंत्री उम्मीदवार नरेन्द्र मोदी पर विश्वास जताते हुए एकतरफा मतदान किया। यदि देश की जनता 2014 में भी कांग्रेस नेतृत्व वाले गठबंधन को सत्ता में बैठा देती तो हमारे देश में भी श्रीलंका की तरह जनता व्यवहार करती हुई दिखाई देती। इसलिए यहाँ यह भी जिक्र करना आवश्यक हो जाता है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के पिछले 8 वर्षों में भारत सरकार की विदेश नीति के क्या परिणाम रहें और अगले दशक में भारत किस प्रकार शक्ति का केन्द्र बनने जा

रहा है । इसे समझने के लिए पाकिस्तान के वरिष्ठ पत्रकार दानिश तरार के उस बयान पर ध्यान देना चाहिए जिसमें उन्होंने कहा है कि भारत ने रूस से एस-400 मिसाइल खरीदा, अमेरिका भारत पर प्रतिबंध लगाने की हिम्मत नहीं कर रहा है, भारत का इजरायल और ईरान, दोनों ही देशों से अच्छे संबंध हैं, सऊदी अरब आज भारत के साथ खड़ा है, यूएई और भारत के बीच 70 अरब डॉलर का व्यापार है और यह भारत की परफेक्ट विदेश नीति का उदाहरण है। भारत के दो पूर्व विदेश सचिव व आठ अलग-अलग रणनीतिकार विश्लेषकों ने मिलकर भारत की विदेश नीति पर एक किताब लिखी है। किताब का नाम है इंडियाज पाथ टू पॉवरः स्ट्रैटजी इन ए वर्ल्ड एड्रिफ्ट, इस किताब के संदर्भ में सभी वरिष्ठ पूर्व अधिकारी एक बात पर सहमत हैं, कि भारत की विदेश नीति में व्यापक बदलाव हुए है जो बहुत सकारात्मक है । नरेन्द्र मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल का शुरूआती समय उन सभी संवेदनशील मुद्दों को निपटाना के रहें हैं जो भारत के सामने कई दशकों से चुनौती दे रहे थे । कश्मीर से अनुच्छेद 370 को खत्म करना , भारत में नागरिकता कानून सीएए पर विचार करना प्रमुख थे और इन पर जबर्दस्त काम भी हुआ है हालाँकि इन बदलावों पर पश्चिमी देशों के साथ-साथ विपक्षी दलों ने भी मानवाधिकार उल्लंघन के सवाल उठाए।

मोदी सरकार की परीक्षा कोरोना महामारी के रूप में तथा उसके कारण उत्पन्न हुई देश की आर्थिक परिस्थितियां भी रहीं हैं । मुश्किल समय में लद्दाख में चीन की आक्रामकता ने भी सरकार की परीक्षा को और कठोर कर दिया। हमारे विपक्ष ने कठिन समय पर मोदी सरकार के साथ खड़े होने की बजाए, राजनीतिक लाभ लेने की कई कोशिशें की। विपक्षी दलों की नकारात्मक सोच के कारण मोदी सरकार के लिए विदेश नीति पर आम राय कायम करना काफी मुश्किल हो गया और सरकार विदेश नीति पर अपने हिसाब से आगे बढ़ती रही। नरेन्द्र मोदी सरकार को हर मोर्चे पर मिली बड़ी चुनौतियाँ और उनकी कामयाबी सरकार की स्पष्ट नीति के कारण ही जीत दर्ज करने में सफल रहीं।

विदेश नीति पर निरंतर अग्रसर नरेन्द्र मोदी सरकार ने भारत के सभी पड़ोसी देशों के साथ मित्रता भावना अपनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी परंतु पाकिस्तान की तरफ से निरंतर छल मिलता रहा जिसका पर्याप्त जवाब देना बनता था जोकि मोदी सरकार ने बेहतरीन प्रदर्शन कर बालाकोट सर्जिकल स्ट्राइक के रूप में दिया। जब नेपाल में भयंकर भूकंप से वहाँ बहुत क्षति हुई, तब भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आपात बैठक बुलाई और हरसम्भव मदद देने के लिए आदेश दिए जो शाम 4 बजे नेपाल पहुँच गई । हाल ही में हमारे पड़ोसी देश श्रीलंका में जनता भुखमरी के कगार पर पहुँच गई तब भी मोदी सरकार ने अपने पड़ोसी देश के लिए सम्भव सहयोग किया । मोदी सरकार के नेतृत्व में मालदीव के साथ बिगड़े हमारे सम्बन्ध अच्छे हुए हैं वहीं श्रीलंका के पोर्ट पर भारत का नियंत्रण चीन से पुनः लेकर स्थापित हो गया है । विश्व में अमरीका, रूस, युरोपीय देश, अरब देश भारत को मित्र मानकर सम्मान करते हैं वहीं चीन भी कोई दुस्साहस करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा। यूक्रेन युद्ध के दौरान बड़ी संख्या में भारतीय छात्रों को सुरक्षित निकाल कर लाना पूरे विश्व ने देखा है। यह सभी नरेन्द्र मोदी जी के कुशल नेतृत्व के कारण ही सम्भव हुआ है। इसके अलावा मोदी सरकार ने बिम्सटेक पर खासा ध्यान दिया है, जिसमें बांग्लादेश, भारत, म्यांमार, श्रीलंका, थाईलैंड, नेपाल और भूटान शामिल हैं और भारत सरकार की मौजूदा विदेश नीति में इस संगठन को काफी प्रमुखता दी जा रही है। इन सभी के चलते यह कहा जा सकता है कि आने वाला दशक भारत के लिए एक नायक की भूमिका वाला होने वाला है। नरेन्द्र मोदी ने भारत को नया भारत बनाने के लिए अनेक प्रभावशाली योजनाओं को धरातल पर उतार कर कामयाब भी किया है। जिसमें प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना छोटे किसानों को प्रोत्साहन दे रही है । बात करें प्रधानमंत्री मुद्रा योजना की तो इससे गैर-कॉर्पोरेट, गैर-कृषि , लघु या सूक्ष्म उद्यम से जुड़े लोगों को दस लाख रुपये तक का ऋण दिया जा रहा है जो भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में जीवन रेखा का काम कर रही है । आयुष्मान भारत जोकि स्वास्थ्य बीमा की योजना है, जिसमें सीधे तौर पर मध्यम वर्ग और गरीब परिवारों को मदद मिल रही है । सबको घर मिले इस लक्ष्य को प्राप्त करने की दृष्टि से मोदी सरकार की ओर से घर बनाने में भी आर्थिक मदद दी जा रही है। मोदी सरकार में उज्जवला योजना महिलाओं के लिए शुरू की गई सबसे महत्वपूर्ण योजनाओं में से एक है। इस योजना के अंतर्गत बड़ी संख्या में गरीब परिवारों को निःशुल्क गैस कनेक्शन बांटे गए हैं । जीवन बीमा के महत्व को समझते हुए मोदी सरकार की ओर से दो बीमा योजना शुरू की गई है। इन योजनाओं में प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना और प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना शामिल है । गरीबों को बैंकिंग सेवाओं से जोड़ने के लिए जन-धन खाता योजना के अंतर्गत हर परिवार को बैंकिंग सुविधा मिल रही है । इस योजना के तहत एक परिवार के दो सदस्य जन-धन योजना में जीरो बैलेंस खाता खोल सकते हैं।

देश में गरीबी के कारण बहुत बड़ी संख्या भूखे पेट ही रह जाती थी , इसी कारण को देखते हुए मोदी सरकार ने प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना में 5 किलो राशन प्रति व्यक्ति, प्रति महीने मुफ्त देना शुरू किया है। इस योजना से देश के 80 करोड़ से अधिक लोगों को लाभ मिल रहा है । कोरोना महामारी वर्ष 2020 में नरेन्द्र मोदी सरकार ने प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (पीएम-जीकेएवाई) की घोषणा की थी। इस योजना को खाद्य सुरक्षा कानून के रूप शुरू किया गया है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि मोदी जी वास्तव में देश के विकास के पहिये की धुरी हैं और धुरी ही समस्त चक्र को चलाती हुई आगे की ओर ले चलती है। कहने की आवश्यकता नहीं कि विकास का यह पहिया यूँ ही चलता रहना चाहिए, इसका रुकना देश के विकास में बाधा का काम करेगा जो कोई भी सच्चा भारतीय कभी नहीं चाहेगा।

(लेखक, भाजपा हरियाणा मीडिया सह-प्रमुख हैं।)

हमें अपने आसपास के वातावरण को साफ रखना चाहिये ताकि किसी प्रकार की बीमारी न फैले। कुछ खाने से पहले और खाने के बाद साबुन से हाथ धोना चाहिये। हाथ धोना हमारे लिए कितना जरूरी है, कोरोना महामारी की शुरूआत में यह तो सबको समझ में आ ही गया है। क्योंकि हाथ धुलने से बीमारियों का खतरा काफी कम हो जाता है। जब कोविड-19 जैसी बीमारियों ने दस्तक दी, तब सबको एक ही हिदायत दी गई कि किसी भी चीज को छूने के बाद हाथों को अच्छी तरह से साफ करें

हिंदी एक भाषा नहीं- एक संस्कार, एक जीवन शैली है

राजू पाण्डेय

कभी भक्ति और अध्यात्म या कभी स्वातंत्र्य चेतना और स्वाभिमान हिंदी के स्वरूप के निर्धारक रहे हों किंतु आज तो ऐसा लगता है कि हिंदी बाजार और तकनीक के हवाले है। क्या हिंदी के भविष्य के निर्धारण में उन तकनीकी विशेषज्ञों के हिंदी ज्ञान,कौशल और हिंदी प्रेम की अहम भूमिका रहेगी जो डिजिटल हिंदी को सुलभ बनाने के प्रयासों में लगे हैं? यह भी विचारणीय है कि हिंदी के लिए जब बाजार द्वारा प्रयास किए जाते हैं तो इनका उद्देश्य हिंदी की बेहतरी से अधिक अपनी बाजारी जरूरतों को पूरा करना होता है। हिंदी साहित्य और आलोचना को समृद्ध करने में लगे मनीषी निरंतर यह प्रयास करते रहते हैं कि देश और दुनिया में जो कुछ भी नया घट रहा है उसकी अभिव्यक्ति हिंदी में हो या हिंदी को इतना समर्थ बना दिया जाए कि वह जटिल, वेगवान, विखंडित, तकनीक और विज्ञान प्रधान जीवन के स्पंदन को व्यक्त कर सके। शायद यह स्पंदन दिल की धड़कन जैसा जीवंत नहीं है, संभव है कि यह घड़ी की टिक टिक जैसा एकरस, यांत्रिक और नीरस हो। अब विज्ञान और तकनीकी के असर से जीवन की गति इतनी तीव्र और नियंत्रित है कि मनुष्य किसी एक भाव को आत्मसात नहीं कर पाता, जी नहीं पाता और उसे दूसरे भाव की ओर जबरन धकेल दिया जाता है। एक ऐसी पीढ़ी रूपाकार ले रही है जो प्रेम को जिए बिना प्रेम कर लेती है। घृणा को समझे बिना घृणा कर सकती है। हिंसा की आग में झुलस जाती है, झुलसा देती है किंतु उसी तरह अपरिवर्तित रहती है जैसे कोई निर्जीव अस्त्र हो। यह संवेदनहीनता इतनी सहज, इतनी सर्वव्यापी है कि इसे नव सामान्य व्यवहार का अंग मानकर स्वयं को इसके साथ अनुकूलित करना पड़ता है। हम देखते हैं कि हिंदी को इस नए मनुष्य को अभिव्यक्त करने के लिए सक्षम और उससे भी अधिक इस नए मनुष्य के लिए रुचिकर बनाने की जद्दोजहद में बहुत समर्थ रचनाकार तथा आलोचक कथ्य, शिल्प और भाषा के ऐसे प्रयोगों में उलझ जाते हैं जो दयनीय रूप से असफल सिद्ध होते हैं। विद्वत्जनों का यह बंद समाज कभी-कभी आत्ममुग्ध और आत्मरति से ग्रस्त भी लगता है। हम तुकांत रचनाओं को, महाकाव्यों को, अप्रासंगिक कह खारिज कर सकते हैं, हम प्रेमचंद की 'उदार और उदात्त नैतिकता' को अव्यावहारिक आदर्शवाद बताकर उसका मखौल बना सकते हैं लेकिन इसी विशाल विश्व में हमारी उत्तर आधुनिक सोच से अछूती भी एक दुनिया है जो हमारे लिए इतिहास बन चुके साहित्यिक रूपों में रस तलाशती है।

क्या वैचारिक बदलाव के लिए तैयार होगा समाज?

सर्वमित्रा सुरजन

दहेज की इस बुराई को केवल कानून बनाकर खत्म नहीं किया जा सकता, ये बात हमारे नीति नियंता जानते हैं। इसके लिए सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर आमूलचूल बदलाव की जरूरत है। लड़के-लड़की को एक समान मानने के क्रांतिकारी विचार को जीवन में उतारा जाएगा, तभी दहेज जैसे रोग खत्म हो सकते हैं। लेकिन लड़का-लड़की सही में एक बराबर मान लिए जाएंगे, तो फिर पुरुष सत्ता का अस्तित्व खत्म हो जाएगा। दिग्गज कारोबारी सायरस मिस्त्री की कार दुर्घटना में मौत के बाद देश में यातायात के सुरक्षा मानकों पर चर्चा तेज हो गई। कायदे से तो ऐसी चचाओं के लिए किसी मौके का इंतजार नहीं होना चाहिए, लेकिन बहुत से मामलों में हिंदुस्तानियों की फितरत आग लगने पर कुआं खोदने वाली होती है। कार में सीट बेल्ट लगाने या दोपहिया वाहन की सवारी के दौरान हेलमेट पहनने से दुर्घटना होने पर भी हताहत होने की आशंका कम रहती है, यह बात जानते हुए भी आमतौर पर हिंदुस्तानी सीट बेल्ट और हेलमेट के उपयोग से बचते हैं। इनके इस्तेमाल के लिए सरकार ने कानून भी बनाए हैं, मगर उनके पालन में कोताही बरती जाती है। लेकिन अब एक दुर्घटना के बहाने फिर से इन सुरक्षा मानकों पर बात होने लगी है, जो अच्छी बात है। लेकिन यह गंभीर विषय भी सोशल मीडिया पर मजाक का मुद्दा बन गया है। पिछले दिनों कई ऐसी पोस्ट देखने मिलीं, जिनमें लिखा था कि सीट बेल्ट लगाने की इतनी नसीहतें मिल गई हैं कि लगता है अब घर के सोफे पर भी सीट बेल्ट लगाकर बैठ जाऊं। जिंदगी को लेकर या जिंदगी के मामले में ऐसा हास-परिहास, शायद भारत में ही मुमकिन है। हर फिक्र को धुएं में उड़ाता चला, जैसी पंक्तियों को हम कहीं भी चरितार्थ कर सकते हैं। बहरहाल, सारे हंसी-मजाक के बीच भी सीट बेल्ट की अनिवार्यता को लेकर गंभीर विमर्श होते रहे और अब इससे जुड़ा एक विज्ञापन भी सामने आया है, जिस पर विवाद खड़ा हो गया है। दरअसल नेकनीयत से बनाए गए इस विज्ञापन में एक गंभीर लापरवाही की गई है। फिल्म अभिनेता अक्षय कुमार इस विज्ञापन के केंद्र में हैं, जो पुलिस की भूमिका में हैं। विज्ञापन में दिखाया गया है कि बेटी की विदाई पर पिता रो रहा है और पुलिस वाला उनसे कहता है कि ऐसी कार दी है, तो रोना ही आएगा। जिस पर पिता कार की सारी खूबियां गिनाता है, लेकिन पुलिस वाला ध्यान दिलाता है कि सीट बेल्ट तो केवल दो हैं। उसके बाद पिता बेटी के लिए छह सीट बेल्टों वाली कार देता है। कार में सवार सभी लोगों के लिए सुरक्षा का जो संदेश देना है, वह मकसद इस विज्ञापन से पूरा होता है। इसलिए केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने भी इस विज्ञापन को अपने सोशल मीडिया हैंडल पर डाला। लेकिन श्री गडकरी, अक्षय कुमार समेत इस विज्ञापन को बनाने से जुड़े तमाम लोगों ने शायद इस ओर ध्यान नहीं दिया कि शादी में एक पिता का अपनी लड़की के लिए कार देना, सीधे-सीधे दहेज देने का उदाहरण है। सड़क पर सुरक्षा की बात तो कर ली गई, लेकिन दहेज जैसी कुप्रथा के कारण इस देश की लाखों लड़कियों की जिंदगी हमेशा ही खतरे में पड़ी रहती है, इस बात की ओर विज्ञापन निमार्ताओं का ध्यान नहीं गया। दहेज की इस बुराई को केवल कानून बनाकर खत्म नहीं किया जा सकता, ये बात हमारे नीति नियंता जानते हैं। इसके लिए सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर आमूलचूल बदलाव की जरूरत है। लड़के-लड़की को एक समान मानने के क्रांतिकारी विचार को जीवन में उतारा जाएगा, तभी दहेज जैसे रोग खत्म हो सकते हैं। लेकिन लड़का-लड़की सही में एक बराबर मान लिए जाएंगे, तो फिर पुरुष सत्ता का अस्तित्व खत्म हो जाएगा। इसलिए ऊपरी तौर पर लड़का-लड़की एक समान की बातें होती हैं और हकीकत में लड़कियों को दोयम दर्जे पर ही रखा जाता है। लड़कियों को पढ़ाई के मौके भी मिल रहे हैं, अब पुरुषों के लिए आरक्षित माने गए क्षेत्रों में काम के अवसर भी लड़कियां हासिल कर रही हैं। लेकिन समाज के अधिकतर लोगों की मानसिकता में लिंग भेद अब भी गहरी जड़ें जमाए बैठा है। इसलिए समाज से न छेड़छाड़ की घटनाएं खत्म हो रही हैं, न दहेज का लेन-देन रुक पाया है। कई भारतीय घरों में अब भी लड़की के पैदा होते साथ ही उसके दहेज के लिए चिंता शुरू हो जाती है। साक्षर, असाक्षर, अमीर, गरीब, युवा, बुजुर्ग ऐसे कोई भेद दहेज प्रथा के आड़े नहीं आते हैं। यह बुराई देश में सर्वव्यापी है और काफी हद तक सर्वस्वीकार्य भी। शादी में कितना नेग मिला, कितने का तिलक हुआ, लड़के वालों की मांग क्या है, कितने तोला सोना, कितनी नकदी, कौन सी गाड़ी दोपहिया या कार, बाकी घर-गृहस्थी का सामान, फ्रिज, वाशिंग मशीन, ड्रेसिंग टेबल, पलंग, सोफा, ये सब तो होगा ही, ऐसी बातें लगभग हर शादी वाले घर में सुनने को मिल जाएंगी। दहेज देने वालों को सारी तकलीफों के बावजूद इसमें कुछ गलत नहीं लगता, क्योंकि यही समाज का चलन है। और दहेज लेने वाले तो इसे अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानकर चलते हैं। अपनी लड़की को दे रहे हैं, हमें क्या, ऐसी लचर दलील कई बार अपने चरित्र को ऊंचा बताने के लिए दी जाती हैं। दहेज ले-देकर भी अगर शादी अच्छे से निभ गई, तो अच्छी बात है। लेकिन जहां लड़की से अपने मायके से और अधिक रुपया लाने की मांग होने लगती है, वहां उन्हें कई बार प्रताड़ित होकर और कई बार अपनी जान देकर इसकी कीमत चुकानी पड़ती है।

दहेज की यह बुराई हिंदुस्तान में इतनी अधिक फैली हुई है कि अब इस ओर लोगों का ध्यान भी तभी जाता है, जब कोई बड़ी घटना हो जाए। राष्ट्रीय समाचारों में तो दहेज प्रताड़ना जैसी खबरों को छोटी-मोटी मानकर बताने लायक ही नहीं समझा जाता, लेकिन अखबारों में, खासकर क्षेत्रीय अखबारों में दहेज प्रताड़नाओं के मामले अब भी लगभग रोजाना प्रकाशित होते हैं। मगर फिर भी अपने ही खड़े किए इस दानव से अपनी बेटियों को बचा सकें, ऐसी कोई सार्थक पहल समाज में होते नहीं दिखती। आजकल जिस तामझाम के साथ करोड़ो-अरबों के विवाह समारोह होने लगे हैं, वह भी दहेज के ही परोक्ष रूप हैं, क्योंकि उनमें अधिकतर भार वधू पक्ष पर पड़ता है। हिंदुस्तान अब भी गरीबों और मध्यमवर्गीय परिवारों की बहुलता वाला देश ही है। लेकिन यहां के वैवाहिक समारोह इंडिया शाइनिंग वाला एहसास देते हैं, मानो हर घर संपन्न है और कमजोर अर्थव्यवस्था जैसी कोई बात देश में है ही नहीं। दिखावे की इस चमक-धमक के पीछे वधू पक्ष की मजबूरी का कैसा अंधेरा छाया है, यह कोई देखना ही नहीं चाहता। इस माहौल में कभी कोई जोड़ा सादगी से विवाह बंधन में बंधता है, तो आदर्श विवाह के शीर्षक से उसका समाचार प्रकाशित होता है।

डूबते हिमालय को बचाने की तजबीज

कुलभूषण उपमन्यु

विकास के मॉडल से जुड़े मामलों में समुदायों को भी मुख्य दावेदार माना जाना चाहिए, जबकि आमतौर पर प्रबन्धन से जुड़े विभागों, औद्योगिक और वाणिज्यिक दावेदारों को ही मुख्य भूमिका में देखा जाता है। यह चिंता का विषय है कि तमाम उम्मीदों के बाबजूद 3-4 साल बीत जाने के बाद भी इस परिषद् का कोई प्रभाव या कार्य जमीन पर तो दिखाई नहीं दिया है। इन प्रकृति की छेड़-छाड़ जनित प्रकोपों को देखकर यदि हम आपातकालीन समझ को जगाकर जग जाएं तो ही समाधान की दिशा में बढ़ सकेंगे। इस वर्ष की बरसात पूरे देश के लिए तबाही ले कर आई है, किन्तु हिमालयी क्षेत्रों में जिस तबाही के दर्शन हुए हैं वे अभूतपूर्व हैं। शिमला-सिरमौर से लेकर चंबा तक तबाही का आलम पसर गया है। सडकें बंद हैं, चक्की का रेल पुल बह गया है। बहुमूल्य जन-धन की क्षति झेलने पर मजबूर हैं। सिहुंता घाटी में 135 लोगों को घरों से निकाल कर जनजातीय भवन में आश्रय दिया गया है। मंडी में 22 लोग काल का ग्रास बन गए हैं। प्रदेश में कई लोग अभी लापता हैं। अगस्त 18 से लेकर 20 दोपहर तक, जो बारिश देखने को मिली वह शायद ही आमतौर पर यहां होती हो। 48 घंटे में ही धर्मशाला से सिहुंता घाटी तक 500 मि.मी. बारिश हो गई, जबकि पूरे अगस्त में इस क्षेत्र में औसतन 349 मि.मी.से 600 मि.मी. बारिश होती है। कुल्लू जिला की स्थिति भी बहुत ही खराब हुई है। चारों ओर बादल फटने जैसी स्थिति दिखाई दे रही थी। यह वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन का परिणाम तो है ही, किन्तु हिमालय में तापमान वृद्धि दर वैश्विक औसत से ज्यादा होने के कारण भी है। हिमालय की संवेदनशील परिस्थिति को देखते हुए लंबे समय से हिमालय के लिए अलग विकास मॉडल की मांग होती रही है। मुख्यधारा का विकास मॉडल हिमालय क्षेत्र के अनुकूल नहीं है, जिसकी नकल करने के लिए हम मजबूर किए गए हैं। 'नीति आयोग' ने 'हिमालयी राज्य क्षेत्रीय परिषद्' का गठन करके एक तरह से हिमालय-वासियों की समस्याओं और संभावनाओं को मैदानी क्षेत्रों से अलग दृष्टिकोण से देखने की उम्मीद और मांग को मान्यता देने की पहल की है, जिसका खुले दिल से स्वागत तो किया ही जाना चाहिए। हिमालय की प्राकृतिक स्थिति बहुत संवेदनशील है और इसकी कुछ विशेषताएं हैं जिनका ध्यान रखे बिना किया जाने वाला हर विकास कार्य हिमालय की संवेदनशील पारिस्थितिकीय व्यवस्था को हानि पंहुचाने का कारण बन जाता है। भले के नाम पर किया जाने वाला कार्य भी उल्टा पड़ जाता है जिसकी कीमत हिमालय-वासियों के साथ-साथ पूरे देश को हिमालय से प्राप्त होने वाली पर्यावरणीय सेवाओं में बाधा और ह्रास के रूप में चुकानी पड़ती है। वर्ष 1992 में भी डॉ. एसजेड कासिम की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ दल का गठन किया गया था, जिसकी संस्तुतियां भी हिमालयी राज्यों की पारिस्थितिक अवस्था के आधार पर बनी थीं। उसके बाद विकास की जिस वैकल्पिक सोच को जमीन पर उतारने के लिए संस्थागत व्यवस्था खड़ी करने के सुझाव दिए गए थे वे लागू नहीं हो सके और बात एक रिपोर्ट तक ही सिमट कर रह गई। इस बार 'नीति आयोग' ने 2017 में पांच 'कार्य समूह' (वर्किंग ग्रुप) विभिन्न मुद्दों को लेकर बनाए थे। इनकी रिपोर्ट अगस्त 2018 में आने के बाद यदि कुछ महीनों के भीतर ही 'हिमालयी क्षेत्रीय परिषद' का गठन कर दिया जाता तो माना जा सकता था कि सरकार इस दिशा में कुछ गंभीर है। वरिष्ठ वैज्ञानिक पृष्ठभूमि के डॉ. वीके सारस्वत 'हिमालयी क्षेत्रीय परिषद' के अध्यक्ष बनाए गए हैं।

परिषद, पांच 'कार्य-समूहों' की रिपोर्टों के आधार पर कार्रवाई बिंदु तय करेगी और हिमालयी राज्यों और केंद्र सरकार द्वारा हिमालय क्षेत्र में विकास के टिकाऊ मॉडल को क्रियान्वित करने और अनुश्रवण करने में सहायता करेगी।

चल तो भारत रहा है, इसमें राहुल महज एक सहयात्री

डॉ. दीपक पाचपोर

केन्द्र एवं भाजपा शासित राज्यों के पिछले 8-9 वर्षों का घटनाक्रम देखें तो साफ होता है कि भारत के सदियों से समरस समाज में बड़ी दरारें पड़ी हैं। अधिकार प्रदत्त सारी संवैधानिक संस्थाएं एवं राजनैतिक शक्तियां इस बहुलतावादी देश के लोकतंत्र, साम्प्रदायिक सद्भाव, समानता, बन्धुत्व जैसे मूल्यों को बहुमत के बल पर धराशायी कर रही हैं। आर्थिक व सामाजिक विषमताएं बढ़ी हैं। राज्य शक्तिशाली व केन्द्र निरंकुश हुआ है। हिन्दुस्तान एक परिघटना को प्रत्यक्ष होता देख रहा है- कन्याकुमारी से कश्मीर तक कांग्रेसी नेता राहुल गांधी की पैदल यात्रा के रूप में। 'भारत जोड़ो' के नाम से होने वाली यह यात्रा भीषण राजनैतिक कटुता तथा अभूतपूर्व सामाजिक वैमनस्यता के बीच होने के कारण अनेक संशयों के साथ देखी जा रही है, विभिन्न आरोप लग रहे हैं और कई तरह के कटाक्ष (लग्जरीदार कंटेनर, महंगी टी शर्ट आदि को लेकर) हो रहे हैं। शंका जाहिर की जा रही है कि 2024 का चुनाव जीतने तथा राहुल को 'रिलांच' करने का यह आयोजन है; और आरोप यह कि विवेकानंद के पांव पड़े बिना ही यह यात्रा हो रही है। तंज तो इतने कि गिना नहीं सकते। बहरहाल, अभी तो पहला हफ्ता ही पूरा हो रहा है। आगे और भी बड़े आरोप लगें तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए। कुछ समय पहले उदयपुर (राजस्थान) में कांग्रेस के हुए संकल्प चिंतन शिविर की बैठक में लिये गये एक निर्णय के अनुसार यह यात्रा निकली है तब से लेकर इस यात्रा की शुरूआत तक अनेक ऐसी घटनाएं हुई हैं।

चिंतित हैं पीएम कैसे बढ़े लोगों की आमदनी: सांसद

चित्रकूट। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन पर सेवा पखवाडा के तहत वोकल फार लोकल योजना के तहत क्षेत्रीय उत्पादों की प्रदर्शनी का शुभारम्भ सांसद आरके सिंह पटेल ने मन्दाकिनी उत्सव भवन में कर कहा कि कैसे लोग आत्मनिर्भर बनें। लोगों को क्षेत्र में ही रोजगार मिले और कैसे उनकी आमदनी बढे।

शुक्रवार को सांसद आरके सिंह पटेल ने क्षेत्रीय उत्पादों की प्रदर्शनी का शुभारम्भ कर कहा कि अलग-अलग क्षेत्रों में निर्मित क्षेत्रीय वस्तुओं की पहचान कर उनके निर्माण व बिक्री को बाजार कैसे उपलब्ध हो। इसके लिए अलग-अलग ढंग से प्रचार किया जा रहा है। सब लोगों को स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए,

ताकि क्षेत्रीय उद्योग का बढावा मिल सके।

भाजपा जिलाध्यक्ष चन्द्रप्रकाश खरे ने कहा कि देशी उत्पादों को बढावा मिलने से लोगों को रोजगार मिलेगा। जिला पंचायत अध्यक्ष अशोक जाटव ने कहा कि लोकल वस्तुओं की पहचान धीरे-धीरे खो रही है। विदेशी वस्तुओं का जाल देश के बाजार में बिछा है। देव त्रिपाठी ने कहा कि प्रधानमंत्री की महत्वाकांक्षी योजना से खुद की बेरोजगारी दूर लोगों को रोजगार दे सकते हैं। नगर पालिका चेयरमैन नरेन्द्र गुप्ता ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत के परिप्रेक्ष में वोकल फार लोकल को बढावा दिया जायेगा। कार्यक्रम में भाजपा नेता पंकज अग्रवाल, अर्पित जायसवाल, अश्वनी अवस्थी, हीरो मिश्रा, राजेश्वरी द्विवेदी, घनश्याम पटेल, शिवाकान्त पाण्डेय, दिव्या त्रिपाठी, बच्चन त्रिपाठी, बृजेश पाण्डेय, सुशील द्विवेदी, शक्तिप्रताप सिंह तोमर, राजकुमार त्रिपाठी आदि मौजूद रहे।

लाखों की लागत से बने सचिवालय में ताला बन्द

चित्रकूट। विकासखण्ड मऊ के ग्राम पंचायत रैपुरा व गाहुर के पंचायत भवनों में ताला लटकने पर ग्रामीणों ने कहा कि पंचायत भवन हमेशा बन्द रहता है। पंचायत भवन को खोलने की जरूरत प्रधान व सचिव को नहीं है। कुछ ग्रामीण सहायक आपरेटर को भी नहीं जानते।

शुक्रवार को मऊ ब्लाक के रैपुरा व गाहुर गांव के पंचायत भवन में ताला लटकने पर ग्रामीण नहीं जानते कि पंचायत सहायक व सचिव पंचायत सहायक के क्या कार्य हैं। ग्रामीणों ने बताया कि पंचायत भवन कभी कभार सुबह या शाम को एक या दो घंटे को खोला जाता है। पर लोगों को पंचायत भवन में समस्या का निदान नहीं होता है। जब देखो पंचायत भवन हमेशा बन्द रहता है। लोग अपनी समस्या के लिए कहां जायें।

सचिवालय में बन्द ताला के बारे में विकासखण्ड में जानकारी लेने पर कहा गया कि आपरेटर की तैनाती नहीं है। सचिवालय में ताला बन्द ही रहेगा। क्योंकि सचिवालय की देखरेख आपरेटर ही सारा कार्य करता है। एक ओर सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ लगातार गांव को हाइटेक बनाने की बात करते हैं। वहीं जिम्मेदार अधिकारी ठेंगा दिखा रहे हैं। सचिवालय में ताला बन्द होना स्वतः में एक बडा सवाल है। पंचायत भवन में बन्द ताला देखकर प्रतीत होता है कि देश के मुखिया एवं प्रदेश शासन को खुली चुनौती है।

अन्तिम सांस तक करेंगे लोगों के हितों की रक्षा: शानू

चित्रकूट। राष्ट्रीय जनउद्योग व्यापार संगठन के राष्ट्रीय महामंत्री संगठन/समाजसेवी शानू गुप्ता के पुनः महामंत्री संगठन चुने जाने पर नगर के व्यापारियों ने भव्य स्वागत अभिनंदन किया।

शहर के ओम प्लाजा में गुरुवार को देर शाम राष्ट्रीय जनउद्योग व्यापार संगठन के राष्ट्रीय महामंत्री संगठन/ समाजसेवी शानू गुप्ता के नगर आगमन पर व्यापारियों ने जोरदार स्वागत किया। शानू ने कहा कि व्यापारियों ने जो उन्हें अपार स्नेह और आशीर्वाद दिया है, उसके वह अन्तिम सांस तक आभारी रहेंगे। सभी के हितों की रक्षा का संकल्प लेते हुए कहा

कि जन-जन की सेवा उद्योग व रोगजार की जरूरतों से जोडेंगे। केन्द्र व प्रदेश सरकार की विभिन्न योजनाओं का लाभ दिलाकर युवाओं को आत्मनिर्भर बनायेंगे। रेहडी, पटरी, हाथ ठेला, गान गुमटी, रिक्शा वालों से लेकर बडे उद्योगमैनों के संकटों पर संघर्ष जारी रहेगा। सम्मान कार्यक्रम में मुख्य संरक्षक सुनील हड्डू गुप्ता, प्रदेश मंगठन मंत्री विनोद केशरवानी, संरक्षक हीरामनि जायसवाल, देवराज यादव, संचालन मंडल के महामंत्री युवा शेषू जायसवाल, नगर अध्यक्ष युवा मोनू यादव, अमित गुप्ता, काजू, बृजेश त्रिपाठी, जिला महिला उपाध्यक्ष शकुन्तला गुप्ता, कोषाध्यक्ष सुनील जायसवाल, दशरथ केशरवानी, महादेव वर्मा, अभिषेक अग्रहरि, विष्णु केशरवानी, रुपेश निगम, विवेक पाठक, अनुराग गुप्ता, पूजा गुप्ता, कल्पना चैरसिया, कंचन सोनी, सीता सोनी, अनुराधा पाण्डेय, साधना गुप्ता, पुष्पा केशरवानी समेत सैकडों व्यापारी मौजूद रहे।

एसपी के निर्देश पर 17 के खिलाफ मिनी गुण्डएक्ट की कार्यवाही

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अतुल शर्मा के निर्देश पर अपराधियों के खिलाफ जारी कार्यवाही के क्रम में 17 लोगों के खिलाफ 110जी सीआरपीसी के तहत कार्यवाही की गई। शुक्रवार को कर्वी कोतवाल अशोक कुमार सिंह ने आम जनता में भय व आतंक फैलाकर गुंडागर्दी करने वाले राजबहादुर उर्फ देवकुमार पुत्र स्व जगमोहन निवासी चकलागुरुबाबा, लवकेश कुमार पुत्र मइयादीन निवासी रामायण मेला, दिनेश कुमार पुत्र शिवकुमार सोनकर निवासी राघवपुरी सीतापुरी, गोरेलाल पुत्र गोकुल प्रसाद निवासी डिलौरा, निकेतन पुत्र स्व भुलई निवासी सीतापुर, विपन उर्फ कल्लू पटेल पुत्र पंचा पटेल निवासी खोही तिराहा, कल्लू पुत्र जौहरी प्रसाद निवासी मैनहाई, भुल्लन केवट पुत्र रामगुलाम निवासी बिलौरा, अनुरागी पुत्र रामलाल निवासी चितरा गोकुलपुर, देवशरण यादव पुत्र मोहनलाल निवासी मदना मोड खरौंध के खिलाफ 110जी सीआरपीसी के तहत कार्यवाही की गई। मानिकपुर थानाध्यक्ष गिरेन्द्र सिंह ने आम जनता में भय व गुंडागर्दी फैलाने वाले संतोष कोल पुत्र दयाराम निवासी नईबस्ती चमरौंहा, कौना उर्फ कउना कोल पुत्र स्व दद्दी निवासी सकरौंहा, कल्लू उर्फ सांजी कोल पुत्र कुइसा परौंहापुरवा चमरौंहा, निसार अहमद पुत्र गुलाम निवासी ग्रामीण, धनराज पुत्र राजकुमार निवासी चुरेहकेसरुआ, चन्द्रशेखर पुत्र भयंकर सिंह निवासी गढचपा के खिलाफ मिनी गुण्डाएक्ट की कार्यवाही की गई है।

12 ब्लैक स्पाट में हो चुका है कार्य, 11 ब्लैक स्पाट शेष

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द को सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी विवेक शुक्ला ने बताया कि सड़क सुरक्षा को प्रमुख चैराहों में सिग्नल व्यवस्था, जेब्रा क्रासिंग, फुटपाथ चिन्हांकन, ब्लैक स्पाट आदि की व्यवस्था की जानी है। हेलमेट और सीटबेल्ट, मोबाइल फोन, ड्राइविंग, ओवरस्पीड और लोडिंग मॉडीफाइड सायलेंसर के खिलाफ कार्यवाही की जानी है।

शुक्रवार को कलेक्टेज्ट सभागार में सडक सुरक्षा समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए जिलाधिकारी को सीओ यातायात एसपी सोनकर ने बताया कि जिले में 23 ब्लैक स्पाट चिन्हित हैं।

अधिशाषी अभियंता लोनिवि प्रान्तीय खण्ड सत्येन्द्र नाथ ने बताया कि 12 ब्लैक स्पाट पर कार्य हो चुका है। 11 जगहों पर कार्य कराया जायेगा। जिलाधिकारी ने एक्सईएन लोनिवि को निर्देश दिये कि प्रान्तीय खण्ड, निर्माण खण्ड तथा राष्ट्रीय राजमार्ग से सम्पर्क कर चिन्हित ब्लैक स्पाट में चिन्हों की व्यवस्था करें। पुलिस क्षेत्राधिकारियों तथा सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी से कहा कि बिना हेलमेट, सीटबेल्ट, मोबाइल फोन, शराब पीकर गाडी चलाने वालों के खिलाफ कार्यवाही करें। उन्होंने कहा कि जिला विद्यालय निरीक्षक, जिला बेसिक शिक्षाधिकारी को स्कूल बसों की सूची देकर विद्यालय में नोटिस जारी करायें। एक्सईएन विद्युत आरएस वर्मा को निर्देश दिये कि देवांगना एप्रोच रोड व एयरपोर्ट में विद्युत व्यवस्था सुनिश्चित करें। एसडीएम कर्वी व मानिकपुर से कहा कि एआरटीओ कार्यालय को टेर्जनिंग सेंटर को भूमि चिन्हित करायें। नगर पालिका कर्वी को निर्देश दिये कि टैम्पो-टैक्सी स्टैण्ड की जगह चिन्हित करें। जिलाधिकारी ने निर्देश दिये कि माइक्रोप्लान बनाकर कार्यक्रम सुनिश्चित करायें। बैठक में संबंधित अधिकारीगण मौजूद रहे।

महाविद्यालय में करें तैयारी, बनें एजेंट और विकास अधिकारी: दिव्यगणेश

चित्रकूट। भारतीय जीवन बीमा निगम शाखा मऊ के प्रबंधक दिव्यगणेश ने कहा कि स्वावलम्बन एवं आत्मनिर्भर बनने को ग्रेजुएशन के बाद छात्र-छात्राओं को रोजगार की आवश्यकता महसूस होती है। महाविद्यालय स्तर पर एक प्लेटफार्म होना जरूरी है। जहां युवाओं को आसानी से रोजगार मिल सके।

शुक्रवार को मऊ स्थित महामति प्राणनाथ महाविद्यालय में हुई गोष्ठी में भारतीय जीवन बीमा

निगम मऊ के शाखा प्रबंधक दिव्यगणेश ने कहा कि युवाओं को रोजगार दिलाने को महाविद्यालय स्तर पर एक प्लेटफार्म की जरूरत है। महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान के प्रो डॉ एस कुरील ने कहा कि आज के समय में जीवन की सुरक्षा को बीमा बहुत जरूरी बन गया है। जीवन की सुरक्षा के साथ पाकेट मनी के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है।

इस मौके पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ संतोष चतुर्वेदी, अभिकर्ता नरेन्द्र खरे, अजय द्विवेदी समेत सैकडों छात्र-छात्रायें मौजूद रहे।

पूजा के साथ शुरू हुई रामलीला

चित्रकूट। पुरानी बाजार स्थित सिद्धपीठ श्री हनुमान मन्दिर में मुकुट पूजा के साथ ऐतिहासिक श्रीरामलीला का शुभारम्भ हुआ।

शुक्रवार को देर शाम रामलीला भवन में देर शाम मंच के माध्यम से रामलीला का मंचन हुआ। लीला का शुभारम्भ विधिवत शहर कोतवाल अशोक सिंह ने कराते हुए कहा कि लीला के मंचन से समरसता के साथ जीने का संदेश मिलता है। रामलीला की सफलता के प्रति उनका पूरा सहयोग रहेगा। उन्होंने लक्ष्मी पति की मनोरम झांकी की पूजा-आरती की। पहले दिन श्रीरामलीला के मंचन में रावण जन्म, श्रीराम जन्मोत्सव लीला को अन्तिम स्वरुप श्रीरामलीला आदर्श मंडल मसुरी बांदा के मंझे कलाकारों ने प्रस्तुतियां देकर दर्शकों का मन मोहा। इस मौके पर कमेटी के श्याम गुप्ता, व्यवस्थापक बसंतराव गोरे, राममूरत सोनी, सत्यम, जग्गू सोनी, नत्थू, मदन केशरवानी आदि मौजूद रहे।

IND vs AUS wnd T20: क्या बारिश बिगाड़ेगी खेल? जानें नागपुर की फुल Weather और पिच रिपोर्ट

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टीम इंडिया तीन मैचों की टी20 इंटरनेशनल सीरीज में 0-1 से पीछे है। सीरीज का दूसरा मैच आज नागपुर के विदर्भ क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम में शाम को 7:30 बजे से खेला जाना है। मैच से एक दिन पहले भारतीय और ऑस्ट्रेलियाई टीम को अपना प्रैक्टिस सेशन

बारिश के चलते रद्द करना पड़ा था। चलिए जानते हैं कि आज की वेदर रिपोर्ट कैसी है और पिच किस तरह की होगी। भारत को पहले मैच में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चार विकेट से मैच गंवाना पड़ा था। भारत को सीरीज में बने रहने के लिए हर हाल में यह मैच जीतना होगा।

क्या कहती है वेदर रिपोर्ट

नागपुर में शुक्रवार यानी कि आज बारिश की आशंका है, ऐसे में शाम को बारिश के चलते मैच में खलल पड़ सकता है। शाम को बारिश की आशंका है, हालांकि बारिश तेज होने के आसार कम नजर आ रहे हैं, ऐसे में खेल देरी से शुरू हो सकता है।

क्या कहती है पिच रिपोर्ट

नागपुर के मौसम को देखते हुए वहां ओस अहम फैक्टर साबित हो सकती है, ऐसे में पहले बल्लेबाजी करने वाली टीम के लिए मुश्किलें खड़ी हो सकती हैं। टॉस जीतने वाली टीम पहले फील्डिंग का फैसला ले सकती है। इसके अलावा नागपुर की पिच पर स्पिनरों को मदद मिल सकती है।

ऐसा हो सकता है दोनों टीमों का संभावित प्लेइंग

इंडिया: केएल राहुल, रोहित शर्मा (कप्तान), विराट कोहली, सूर्यकुमार यादव, हार्दिक पांड्या, दिनेश कार्तिक, अक्षर पटेल, भुवनेश्वर कुमार, दीपक चाहर, युजवेंद्र चहल, जसप्रीत बुमराह।

ऑस्ट्रेलिया: आरोन फिंच, कैमरोन ग्रीन, स्टीव स्मिथ, ग्लेन मैक्सवेल, जोश इंग्लिस, टिम डेविड, मैथ्यू वेड, पैट कमिंस, नाथन एलिस, एडम जाम्पा, जोश हेजलवुड।

IND vs AUS 2022: रोहित शर्मा के पास इतिहास रचने का शानदार मौका, 'सिक्सर किंग' बनने से मात्र एक कदम हैं दूर

रोहित शर्मा 137 T20I मैचों में 172 छक्के लगा चुके हैं, वह न्यूजीलैंड के मार्टिन गप्टिल के नाम भी इतने ही छक्के दर्ज हैं। अगर रोहित आज एक भी छक्का लगाते हैं तो वह ये वर्ल्ड रिकॉर्ड अपने नाम कर लेंगे।

नई दिल्ली. भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच तीन टी20 मैच की सीरीज का दूसरा मुकाबला नागपुर के विदर्भ क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम में खेला जाना है। इस मैच में भारतीय कप्तान रोहित शर्मा इतिहास रच सकते हैं। अगर आज रोहित ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एक भी छक्का लगाते हैं तो वह क्रिकेट के सबसे छोटे फॉर्मेट के सिक्सर किंग बन जाएंगे।

रोहित शर्मा अभी तक 137 T20I मैचों में 172 छक्के लगा चुके हैं, वह न्यूजीलैंड के सलामी बल्लेबाज मार्टिन गप्टिल के साथ शीर्ष पर हैं जिनके नाम भी इतने ही छक्के दर्ज हैं। अगर रोहित आज एक भी छक्का लगाते हैं तो वह टी20 इंटरनेशनल में सबसे ज्यादा छक्के लगाने का वर्ल्ड रिकॉर्ड अपने नाम कर लेंगे। T20I में सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाले बल्लेबाजों की सूची में रोहित और गप्टिल के बाद क्रिस गेल का नाम आता है जिन्होंने 79 मैचों में 124 छक्के लगाए हैं। वहीं चौथे नंबर पर इयोन मोर्गन (120) और पांचवे नंबर पर ऑस्ट्रेलिया के कप्तान एरोन फिंच (118) हैं।

वहीं बात इस फॉर्मेट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाजों की करें तो रोहित शर्मा यहां भी राज कर रहे हैं। रोहित के नाम झ20ढ्ढ में 3631 रन दर्ज हैं और वह सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाजो की सूची में पहले पायदान पर हैं। उनके बाद नंबर भारतीय पूर्व कप्तान विराट कोहली का आता है जिन्होंने 97 मैचों में 3586 रन बनाए हैं। वहीं तीसरे पायदान पर मार्टिन गप्टिल 3497 रनों के साथ मौजूद हैं।

बात भारत बनाम ऑस्ट्रेलिया दूसरे टी20 की करें तो भारत के लिए यह मुकाबला करो या मरो वाला रहने वाला है। दरअसल, सीरीज के पहले मुकाबले में टीम इंडिया को 4 विकेट से हार का सामना करना पड़ा था।

परमाणु युद्ध की दहलीज पर पहुंचा युक्रेन युद्ध! बाइडन प्रशासन ने रूसी राष्ट्रपति पुतिन को किया आगाह- जानें क्या है पूरा मामला

दुनिया. रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के संबोधन के बाद पश्चिमी देश और अमेरिका के कान खड़े हो गए हैं। युक्रेन जंग के बीच रूस के राष्ट्रपति ने सेना की प्रतिरोधी शक्तियों को स्पेशल अलर्ट पर रखने का आदेश दिया है, जिनमें परमाणु हथियार भी शामिल हैं। पुतिन ने अपने रक्षा प्रमुखों से कहा कि पश्चिम के आक्रामक बयानों की वजह से ऐसा करना जरूरी हो गया है। युक्रेन जंग के दौरान पुतिन ने दूसरी बार परमाणु हमले के लिए युक्रेन और पश्चिमी देशों को आगाह किया है। पुतिन की आवाज की गूंज से अमेरिका सकते में आ गया है। माना जा रहा है कि बाइडन प्रशासन ने पुतिन को एक निजी संदेश के जरिए आगाह किया है। आइए जानते हैं कि पूरा मामला क्या है।

1- विदेश मामलों के जानकार प्रो हर्ष वी पंत का कहना है कि रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को शायद ही युक्रेन जंग के इन परिणामों का अंदाजा रहा हो। इस युद्ध में रूसी सेना के इतने जवान शहीद होंगे और रूस को इतने बड़े पैमाने पर जान-माल का नुकसान होगा इसका भी अंदाजा शायद ही रूसी राष्ट्रपति को रहा हो। इस जंग में अमेरिका और पश्चिमी देशों की युक्रेन को दी जा रही सैन्य मदद ने रूस के समक्ष एक नई चुनौती पेश की है। इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि युक्रेन युद्ध में रूसी सेना को पीछे हटना पड़ रहा है। इसका असर रूसी सैनिकों के मनोबल पर पड़ रहा है।

2- प्रो पंत ने कहा कि राष्ट्रपति पुतिन यह जानते हैं कि जंग को कूटनीति और परमाणु बम के जरिए ही रोका जा सकता है। कूटनीतिक रास्ते के विकल्प सीमति है। कूटनीतिक पहल मानीवय आधार पर ही हो सकती है, इसके लिए प्रयास भी किया गया लेकिन सब निष्फल रहा। भारत भी इस जंग का कूटनीतिक समाधान चाहता है। उधर, रूस जैसे महाशक्ति इस जंग में अपनी विजय की अपेक्षा रख रहा होगा। हालांकि, इस युद्ध में रूस ने अपनी पूर्वी और दक्षिणी सीमा को सुरक्षित कर लिया है। युक्रेन के दो ऐसे राज्यों पर रूस का प्रभुत्व कायम है, जिससे उसकी पूर्वी और दक्षिणी सीमा सुरक्षित है, लेकिन रूस जैसे महाशिक्त के लिए युक्रेन जीतना नाक का विषय बना हुआ है।

3- प्रो पंत ने कहा कि पुतिन का एक फैसला दुनिया को संकट में डाल सकता है। युक्रेन जंग जिस मोड़ पर खड़ा है उससे पुतिन जरूर विचलित और हताश होंगे।

इस युद्ध को लेकर पश्चिम के प्रति उनका जबरदस्त गुस्सा भी है। ऐसे में यह संभव है कि पुतिन परमाणु हमले का फैसला कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि पुतिन इस बात को समझ रहे हैं कि पश्चिमी देशों व अमेरिका के सैन्य सहयोग के कारण यह जंग रूस के लिए आसान नहीं है।

प्रो पंत ने कहा कि अगर रूस परमाणु बमों का इस्तेमाल करता है तो इसका प्रभाव पश्चिमी देशों तक जाएगा। ऐसे में इसकी आंच अमेरिका तक जानी तय है। ऐसे में इसके नतीजे खतरनाक होंगे। यह विश्वयुद्ध का स्वरूप अख्तियार कर सकता है।

बाइडन प्रशासन ने पुतिन को किया आगाह

वाशिंगटन पोस्ट के मुताबिक बाइडन प्रशासन ने रूसी राष्ट्रपति पुतिन को आगाह किया है कि वह युक्रेन जंग में परमाणु बमों का इस्तेमाल नहीं करे। यह कहा जा रहा है कि बाइडन प्रशासन की ओर से एक गुप्त संदेश पुतिन को भेजवाया गया है। हालांकि, अमेरिकी विदेश विभाग मास्को के साथ इस संचार संदेश में शामिल है, अभी इस बात की आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। बता दें कि हाल में रूसी राष्ट्रपति पुतिन का राष्ट्र के नाम के संबोधन में देश की जनता को परमाणु हमले के लिए तैयार रहने को कहा गया है। यह माना जा रहा है कि रूसी राष्ट्रपति के भाषण के बाद बाइडन प्रशासन की ओर से एक निजी संदेश मोस्को भेजा गया है।

दुनिया ने देखा था परमाणु बमों का खौफ

जहां तक सवाल परमाणु हमलों का है तो दुनिया में अब तक दो बार परमाणु बमों से हमला किया गया है। इसके भयंकर परिणाम दुनिया ने देखा है। इसके प्रयोग से जनधन को बड़ा नुकसान हुआ था। 77 वर्ष पूर्व दोनों हमले अमेरिका ने किए थे। अमेरिका ने जापान के दो शहरों पर परमाणु बम गिराए थे। अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा शहर और नागासाकी पर परमाणु बम गिराए थे।

माना जाता है कि हिरोशिमा में 80,000 और नागासाकी में 70,000 से अधिक लोगों की मौत हो गई थी। परमाणु बमों के इस्तेमाल से बड़ी मात्रा में रेडिएशन या विकिरण निलकता है। इसलिए इनका असर धमाके बाद बहुत लंबे समय तक रहता है।

सार-समाचार

उत्तर कोरिया को चेतावनी, दक्षिण कोरिया में संयुक्त अभ्यास के लिए पहुंचा 'USS रोनाल्ड रीगन'

बुसान.करीब चार साल बाद पहली बार संयुक्त अभ्यास के लिए अमेरिका का एयरक्राफ्ट करियर (विमानवाहक पोत) शुक्रवार को दक्षिण कोरिया पहुंचा। इस अभ्यास का मकसदसहयोगियों की सैन्य तैयारी को बढ़ावा देने के साथ कोरियाई प्रायद्वीप में शांति और स्थिरता के लिए कोरिया-अमेरिका गठबंधन द्वारा दृढ़ संकल्प दिखाना है। साथ ही उत्तर कोरिया को चेतावनी भरा संदेश भेजना भी है।

स्स रोनाल्ड रीगन और दक्षिण कोरिया के युद्धपोतों का एक साथ अभ्यास होगा। स्ट्राइक ग्रुप कमांडर रियर एडमिरल माइकल डोन्नेली (Michael Donnelly) ने मीडिया से बताया कि यह अभ्यास दोनों देशों की नौसेना के बीच संबंध को मजबूत करने के लिए किया जा रहा है। दक्षिण कोरिया के रक्षा मंत्रालय की ओर से जारी बयान में बताया गया था कि साल 2017 के बाद से प्रायद्वीप के पास किसी अमेरिकी विमानवाहक पोत से जुड़ा यह पहला संयुक्त अभ्यास होगा। इससे पहले साल 2017 में अमेरिका ने उत्तर कोरिया के परमाणु और मिसाइल परीक्षणों के जवाब में दक्षिण कोरिया के साथ नौसैनिक अभ्यास के लिए रीगन सहित तीन विमानवाहक पोत भेजे थे।

इराक के भारतीय दूतावास में मनाया गया हिंदी दिवस

बगदाद। बगदाद में स्थित भारतीय दूतावास ने भारत की आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर आजादी के अमृत महोत्सव के तहत यहां हिंदी दिवस समारोह मनाया। दूतावास ने हिंदी में निबंध, कहानी, कविता लेखन एवं कविता पाठ आदि प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया।

इस हिंदी दिवस समारोह में भारतीय प्रवासी नागरिकों, अप्रवासी भारतीयों तथा भारतीय मूल के नागरिकों के साथ-साथ इराकी नागरिकों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। समारोह में बगदाद के साथ नजफ एवं कर्बला के भी हिंदी प्रेमी भी शामिल हुए। इस अवसर पर दूतावास ने हिंदी निबंध लेखन, कहानी लेखन, कविता लेखन एवं कविता पाठ आदि प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया तथा विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार भी भी दिए। इस अवसर पर इराक में भारत के राजदूत ने सभी हिंदी प्रेमियों को संबोधित करते हुए हिंदी दिवस की शुभकामनाएं और हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई दी। उन्होंने कहा कि हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली व समझी जाने वाली भाषा है। साथ ही विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली पांच भाषाओं में से एक हिंदी भी है। उन्होंने हिंदी फिल्मों से इराकी युवाओं के हिंदी सीखने के प्रयासों को भी सराहा। इस अवसर पर दो इराकी नागरिकों ने हिंदी में गीत प्रस्तुत किये गये, जिसे श्रोताओं ने खूब सराहा।

अखंड भारत संदेश

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक

स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर योग सत्संग समिति द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज 1/6C माधव कुंज कटरा प्रयागराज से मुद्रित एवं क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश से प्रकाशित।

सम्पादक

स्वामी श्री योगी सत्यम्

Title UPHIN 29506

ऑफिस मो.: 9565333000

Email:- akhandbharatsandesh1@gmail.com

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा।

पाकिस्तान में बाढ़ का कहर जारी, कई क्षेत्रों में फैल रहा डेंगू और मलेरिया

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान (Imran Khan) एक बार फिर भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का गुणगान का बखान करते नजर आए। दरअसल इमरान ने भ्रष्टाचार के मामले का जिक्र किया और प्रधानमंत्री मोदी व पाकिस्तान मुस्लिम लीग (एन) के सुप्रीमो नवाज शरीफ की तुलना कर डाली।

कराची (पाकिस्तान). पाकिस्तान में बाढ़ का कहर लगातार जारी है। बाढ़ के कारण मलेरिया, टाइफाइड और डेंगू बुखार जैसे संक्रामक रोग तेजी से पूरे क्षेत्रों में फैल रहे हैं और मृतकों की संख्या 324 तक पहुंच गई है। एक्सप्रेस ट्रिब्यून के हवाले से अधिकारियों ने बुधवार को यह बात कही।

पाकिस्तान के कई प्रांतों में रुके हुए बाढ़ के पानी ने त्वचा और आंखों में संक्रमण, दस्त, मलेरिया, टाइफाइड और डेंगू बुखार के व्यापक मामलों को जन्म दिया है, जिससे पाकिस्तान में लोगों के स्वास्थ्य को खतरा पैदा हो गया है। एक्सप्रेस ट्रिब्यून के अनुसार, सरकार, स्थानीय और विदेशी राहत संगठनों के प्रयासों के बावजूद, सरकार और मानवीय संगठनों के प्रयासों के बावजूद बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में

कई लोगों को भोजन और दवा की तत्काल आवश्यकता है।

एक सर्वेक्षण के अनुसार, नकदी की कमी वाले इस देश में लाखों लोगों की जान लेने वाली अभूतपूर्व प्राकृतिक आपदा के प्रति सरकार की प्रतिक्रिया से अधिकांश पाकिस्तानी लोगों ने अपनी नाराजगी जाहिर की है। यह नाराजगी इस सप्ताह प्रकाशित नवीनतम पट्टन सर्वेक्षण में स्पष्ट हुई है।

डॉन अखबार की रिपोर्ट के अनुसार, तीन बाढ़ प्रभावित प्रांतों के 14 जिलों के 38 आपदा प्रभावित इलाकों में समुदाय आधारित कार्यकर्ताओं द्वारा सर्वेक्षण किया गया। सर्वेक्षण के अनुसार, अधिकांश इलाके राज्य संस्थानों के प्रदर्शन से नाखुश थे। बाढ़ के कारण 92 फीसदी स्थानों पर लोग अपने गांव और पड़ोस छोड़ने को मजबूर हो गए हैं। छह सप्ताह की बाढ़ के बाद, 15 स्थानों के कई परिवार सड़कों पर खुले आसमान के नीचे और बिना टेंट के रहते पाए गए। इस साल जून के बाद से, पाकिस्तान ने कठोर मानसून के मौसम का सामना किया है जिसके परिणामस्वरूप गंभीर मानवीय और विकास संकट पैदा हो गया है। सरकारी अनुमानों के अनुसार, देश भर में लगभग 33 मिलियन लोग लगातार भारी बारिश और बाढ़ से प्रभावित हुए हैं - जो दशकों में सबसे खराब है।

लाखों एकड़ फसलें और बाग जिनमें से कई फसल के लिए तैयार हैं वो क्षतिग्रस्त और नष्ट हो गए हैं और अगले रोपण मौसम को भी खतरा है। पाकिस्तान में अधिकांश परिवारों और देश की अर्थव्यवस्था के लिए कृषि जीविका और आजीविका का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। पाकिस्तान में कुल 160 जिले हैं। आज तक, देश भर में इनमें से आधे को "आपदा हिट" (calamity hit) घोषित किया गया है और यह संख्या बढ़ने की उम्मीद है। पाकिस्तान मौसम विज्ञान विभाग (पीएमडी) ने सितंबर में सिंध के दक्षिण-पूर्वी इलाकों में सामान्य से अधिक बारिश की भविष्यवाणी की है।

सऊदी अरब जल्द शुरू करेगा एस्ट्रोनॉट प्रोग्राम, अगले साल तक अपने देश की महिला को अंतरिक्ष में भेजने की तैयारी

दुबई.सऊदी अरब ने गुरुवार को कहा कि वह अगले साल अंतरिक्ष में अपने अंतरिक्ष यात्रियों को भेजने के लिए जल्द ही प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करेगा। इन अंतरिक्ष यात्रियों में देश की एक महिला भी शामिल होगी। तेल पर अपनी निर्भरता घटाने और आर्थिकी को सुधारने के विजन-2030 के तहत सऊदी अरब बेहद सक्रियता से विज्ञान और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा दे रहा है।

सऊदी अरब ने बढ़ाई महिलाओं की भागीदारी

सऊदी अरब के शक्तिशाली क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान की अगुआई में बनी योजना में इस परंपरावादी मुस्लिम देश की महिलाओं की भी व्यापक पैमाने पर हिस्सेदारी का आह्वान किया गया है। उल्लेखनीय है कि सऊदी अरब ने 2018 में महिलाओं के ड्राइविंग करने पर लगे प्रतिबंध को भी हटा लिया था। मालूम हो कि अरब से अंतरिक्ष में जाने वाले पहले व्यक्ति सऊदी अरब के प्रिंस सुल्तान बिन सलमान थे जो क्राउन प्रिंस के सौतेले भाई और वायुसेना के पायलट हैं।

सऊदी अरब में विज्ञान और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा

सलमान 1985 में अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के डिस्कवरी मिशन में चालक दल के सात सदस्यों में से एक थे। बाद में वह 2018 से 2021 तक सऊदी अंतरिक्ष आयोग के प्रमुख रहे। पिछले साल उन्हें किंग सलमान का सलाहकार नियुक्त किया गया था। सऊदी अंतरिक्ष आयोग ने एक बयान में कहा कि, सऊदी अंतरिक्ष यात्री कार्यक्रम, जो कि किंगडम के महत्वाकांक्षी विजन 2030 का एक अभिन्न अंग है, सऊदी अंतरिक्ष यात्रियों को मानवता की बेहतर सेवा में मदद करने के लिए अंतरिक्ष में भेजेगा। अंतरिक्ष यात्रियों में से एक सऊदी महिला भी होगी, जिसका अंतरिक्ष मिशन राज्य के लिए एक ऐतिहासिक पहल होगी। वहीं, सऊदी अरब के पड़ोसी देश संयुक्त अरब अमीरात में अरब दुनिया का प्रमुख अंतरिक्ष कार्यक्रम है। जिसने फरवरी 2021 में मंगल की कक्षा में एक जांच शुरू की है। यूएई ने नवंबर में अपना पहला मून रोवर लॉन्च करने की योजना बनाई है।

मणिपुर, अफगानिस्तान और इंडोनेशिया में आए भूकंप के झटके, जापान में कई जगहों पर हिली इमारतें

दुनिया. भारत के मणिपुर समेत विश्व के कई हिस्सों में शुक्रवार को भूकंप के झटके महसूस किए गए। शुक्रवार को अफगानिस्तान की धरती एक बार फिर भूकंप के झटकों से हिल गई। अफगानिस्तान के हिंदू कुश क्षेत्र में शुक्रवार सुबह करीब 05:23 बजे रिक्टर पैमाने पर 4.3 तीव्रता का भूकंप आया। यह जानकारी नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी (NCS) ने ट्वीट कर दी है।

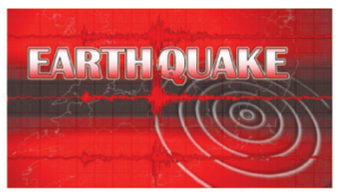

इससे पहले, 5 सितंबर को अफगानिस्तान के कई प्रांतों में रिक्टर पैमाने पर 5.3 तीव्रता के भूकंप के बाद छह लोगों की मौत हो गई थी और नौ अन्य घायल हो गए थे। अफगानिस्तान के कुनार के नूरगुल जिले में ही छह लोगों की मौत और कई घायल हो गए थे।

मणिपुर में भूकंप के झटके

उत्तर पूर्वी भारत के मणिपुर में भी भूंकप के झटके महसूस किए गए। नेशलन सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी के अनुसार मणिपुर के मोइरांग (Moirang) से 100 किमी दूर 4.5 तीव्रता का भूकंप आया। ये भूकंप के झटके शुक्रवार सुबह करीब 10:02 बजे आया। भूकंप की गहराई जमीन से 110 किमी नीचे थी।

इंडोनेशिया के उत्तरी सुमात्रा में आया भूकंप

इंडोनेशिया के उत्तरी सुमात्रा (North Sumatra) प्रांत में शुक्रवार को 4.7 तीव्रता का भूकंप आया। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी के अनुसार यह भूंकप शुक्रवार सुबह आया है। एनसीएस ने बताया कि अभी तक किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। एक महीने पहले यानी 23 अगस्त को इंडोनेशिया के पश्चिमी प्रांत बेंगकुलु (Bengkulu) में 6.5 तीव्रता का भूकंप आया था।

करिश्मा! चीन में भूकंप के बाद पहाड़ों में खोया शख्स 17 दिन बाद मिला, जानिए- कैसे बची जान

बीजिंग. चीन में आए विनाशकारी भूकंप में 90 से ज्यादा लोग मारे गए और कई लोग अब भी लापता बताए गए। इस बीच एक शख्स जो भूकंप के बाद लापता हो गया था, जिसे अब 17 दिन बचा लिया गया है। ये किसी करिश्मे से कम नहीं है। ये शख्स 5 सितंबर से लापता था और परिवारवालों ने इसके जिंदा बचने की उम्मीद भी लगभग छोड़ दी थी। लेकिन कहते हैं न- जाको राखे साइयां मार सके न कोय! हालांकि, इस दौरान पहाड़ों में शख्स कैसे जिंदा रहा?

ये चमत्कार नहीं तो और क्या...!

बता दें कि इस महीने की शुरुआत में दक्षिण-पश्चिमी सिचुआन प्रांत में 6.6 तीव्रता का भूकंप आया था। इस

विनाशकारी भूकंप में अब तक 93 लोगों की मौत हो चुकी है। गान यू जो सिचुआन के वैनडोंग हाइड्रोपावर प्लांट के कर्मचारी हैं। बुधवार को उन्हें स्थानीय गांववालों ने जिंदा, लेकिन घायल अवस्था में पाया। चीन के सरकारी रेडियो सीएनआर ने इस घटना को करिश्मा बताया है।

चलते जा रहे थे, लेकिन पता नहीं जाना कहा है!

स्थानीय एजेंसी के मुताबिक, सिचुआन प्रांत के लोग इस दिन को शायद ही कभी भुला पाएंगे। गान 5 सितंबर को अपने साथी लुओ योंग के साथ ड्यूटी पर थे, तभी भूकंप के जोरदार झटकों से लोग सहम गए। भूकंप के दौरान बांध टूटने का खतरा था, जिससे भारी नुकसान हो सकता था। ऐसे में यू और लुओ घायल सहयोगियों की मदद और बांध टूटने से बचाने के लिए वहां रुक गए थे। स्थिति जब गंभीर हुई, तो उन्होंने पावर स्टेशन को छोड़कर निकलना चाहा। इस दौरान ये दोनों करीब 20 किलोमीटर पैदल चले। गान की आंखें कमजोर हैं और भूकंप के दौरान उनका चश्मा भी खो गया, ऐसे में उन्हें पहाड़ों पर रास्ता खोजने में दिक्कत आने लगी।

घास, बांस और पत्तों का एक बिस्तर बने सहारा

लुओ ने सीएनआर को बताया कि हमने अपने कपड़े उतार दिए और उन्हें पेड़ों पर पर लटका दिए, ताकि कोई उन्हें दूर से देख सके। इसके अलावा उन्होंने कई बार हाथ में कपड़ों को लेकर हिलाया, ताकि उनकी मौजूदगी का पता किसी को लग सके। लेकिन जब बहुत समय तक कोई मदद नहीं आई, तो इन्होंने एक निर्णय लिया। फैसला हुआ कि गान वहीं रुकेंगे और लुओ मदद की तलाश में आगे बढ़ेंगे। लुओ ने गान को घास, बांस और पत्तों का एक बिस्तर बनाने में मदद की और उसके पास कुछ जंगली फल और बांस के फूल छोड़ कर चला गया।